आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 फरवरी, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 फरवरी, 2016 ★ माघ, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जहा लाहो तहा लोहो,
लाहा लोहो पवड्ढई।
दो मासकयं कज्जं,
कोडीए वि न निट्ठियं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.17

जैसे लाभ, लोभ भी वैसे,
लोभ लाभ से बढ़ता है।
दो माशा सोने का कार्य भी,
करोड़ों से ना भरता है।।

फरवरी, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2542
माघ, 2072

वर्ष 74 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	निर्व्यसनी सामायिक-संघ	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	10
विचार-वारिधि-	दान (2)	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
प्रवचन-	ज्ञान के अनादर से ही जीवन में दुःखों के पहाड़	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	18
	अहंकार है ज्ञान में बाधक	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	20
अध्यात्म-	मैं कौन हूँ?	-उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी	21
शोधालेख-	उमास्वाति और उनका तत्त्वार्थ सूत्र	-डॉ. सागरमल जैन	27
अंग्रेजी-स्तम्भ-	BREAKING THE BONDS	*-Dr. Dalpat Singh Baya*	37
आ.पद रजतवर्ष-	अध्यात्म के बेस्ट क्रिकेटर	-महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.	17
	शत-शत अभिनन्दन आचार्यप्रवर 'हीरा' का	-महासती श्री (नाम ज्ञात नहीं)	58
प्रासंगिक-	आचार्य हस्ती की दृष्टि में ध्यान की उपयोगिता	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	40
समाज-चिन्तन -	पूजा की हिंसा से बचने का औचित्य	-डॉ. जीवराज जैन	45
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (19)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	48
धारावाहिक -	लग्न की वेला (17)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	53
युवा-स्तम्भ -	सितारा व्यक्तियों का शाकाहार प्रेम	-डॉ. दिलीप धींग	65
नारी-स्तम्भ -	क्या हैं असली प्यार के मायने?	-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	71
स्वास्थ्य-विज्ञान -	क्या ऐलोपेथी ही मुख्य चिकित्सा पद्धति है?	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	74
बाल-स्तम्भ -	प्रेरक जीवन-प्रसंग	-न्यायमूर्ति श्री जसराज चौपड़ा	83
विचार-	दृष्टिकोण	-श्रीमती कंचन जैन	90
कविता/गीत-	प्रभु आपका शरणा लेता हूँ	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	11
	उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा.	-श्री धीरज डोसी	70
जीवन-व्यवहार-	जीवन के सत्य	-आचार्यश्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	95
प्रतियोगिता-	जिनवाणी के अंकों पर प्रतियोगिता	-संकलित	87
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें (परिणाम)	-संकलित	91
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	93
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	96
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

सम्पादकीय

निर्व्यसनी सामायिक संघ

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

स्थानकवासी जैन परम्परा में सामायिक-साधना का आत्मशोधन के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए स्वाध्याय को तथा जीवन को उन्नत बनाने के लिए सामायिक को घर-घर पहुँचाया था। उसी सामायिक-साधना को अधिक तेजस्वी बनाने हेतु एवं जन-जन का नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक स्तर उन्नत करने हेतु उन्हीं के शिष्यरत्न पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने '**निर्व्यसनी सामायिक संघ**' की अवधारणा देकर इस वर्ष में जन-जन को निर्व्यसनी बनकर सामायिक-साधना करने हेतु प्रेरणा प्रदान की है।

हमारा मन प्रायः बाहर ही भटकता रहता है, उसमें द्वन्द्व एवं अशांति का वातावरण बना रहता है। उसे आत्मस्थ एवं शान्त करने का उत्तम उपाय सामायिक है। शान्त होने पर मन की चंचलता एवं उसके दोषों का ज्ञान होता है। फिर उन्हें दूर करने की साधना प्रारम्भ होती है। आत्मविकारों या दोषों का निराकरण करने का उत्तम उपाय है 'सामायिक'। सामायिक में मन को निगृहीत करने के साथ वचन का प्रयोग भी बहुत सावधानी एवं विवेक के साथ किया जाता है। अतः वचन के दोषों का परिमार्जन भी सामायिक द्वारा संभव है। सामायिक में सावद्य अर्थात् पापयुक्त या सदोष प्रवृत्ति का त्याग होता है। इसमें हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन सेवन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, पर निन्दा, रति-अरति एवं माया मृषावाद इन अठारह पापों का त्याग रहता है। यदि कोई साधक सामायिक करते समय इन अठारह प्रकार के पापों से दूर रहने का ध्यान रखे तो उसकी सामायिक साधना कितनी उच्च कोटि की होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। पापों को समझने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। इसलिए सामायिक में स्वाध्याय करने को प्राथमिकता दी गई है। पापों को दूर करने के लिए ध्यान आवश्यक है। इसलिए सामायिक में ध्यान को भी स्थान दिया गया है। स्वाध्याय और ध्यान ये दोनों सामायिक साधक के लिए आवश्यक अंग हैं। इसीलिए श्रमण की चर्या में स्वाध्याय और ध्यान को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज ने सामायिक एवं स्वाध्याय का सिंहनाद किया था तथा घर-घर में इसे प्रचारित करने का अभियान चलाया था। सामायिक और स्वाध्याय मनुष्य के जीवन को सही दिशा में ले जाने वाले महत्त्वपूर्ण साधन हैं। स्वाध्याय से जहाँ

मार्गदर्शन प्राप्त होता है। वहाँ सामायिक द्वारा जीवन को बदलने की प्रक्रिया घटित होती है। आवश्यकता इस बात की है कि सामायिक पूर्ण सजगता के साथ निर्दोष रूप से की जाए। सामायिक में अविवेक, यशकीर्ति, लाभ, गर्व, निदान आदि मन सम्बन्धी दोषों का परिहार अपेक्षित है। यश कीर्ति के लिए सामायिक करना एक दोष है। सांसारिक धन-सम्पत्ति आदि के लाभ हेतु सामायिक करना भी एक दोष है। इस प्रकार मन सम्बन्धी जितने भी दोष हैं उनका त्याग सामायिक में किया जाता है। सामायिक में कुत्सित वचन बोलना, बिना विचारे बोलना, कलह उत्पन्न करने वाले वचन बोलना, हँसी-मजाक करना, विकथा करना आदि वचन सम्बन्धी दोष माने गये हैं। इन दोषों का परिहार करते हुए सामायिक करना शुद्ध सामायिक है। काया सम्बन्धी दोषों का भी वर्जन सामायिक में आवश्यक है। उदाहरण के लिए बार-बार आसन बदलना, चंचल दृष्टि रखना, सहारा लेकर बैठना, निद्रा लेना, पापकारी क्रिया करना आदि काया सम्बन्धी दोष हैं। इस प्रकार सामायिक में मन, वचन एवं काया को दुष्प्रणिधान से हटाकर सुप्रणिधान में लगाया जाता है।

सामायिक समत्व की साधना है। इसमें चित्त को समभाव में रखने का अभ्यास किया जाता है। जो मन को जितना समभाव में रख पाता है, वह सामायिक को उतना ही साध लेता है। इसलिए प्रारम्भ में सामायिक गुरुदेव या वरिष्ठ श्रावक की उपस्थिति में करनी चाहिए। वे हमें सावधान कर सकते हैं एवं सामायिक सम्बन्धी दोषों से बचा सकते हैं। सामायिक का असली आनन्द तभी अनुभव हो सकता है, जब सामायिक की साधना निर्दोष हो एवं उसमें समता का अनुभव हो। पूज्य आचार्य श्री हस्ती का संदेश है कि जीवन को उन्नत बनाने के लिए सामायिक की साधना अत्यन्त उपयोगी है। बशर्ते वह सामायिक दस्तूर की सामायिक न हो। गम्भीर लक्ष्य के साथ एकाग्रचित्त से की गई सामायिक अवश्य ही फलदायिनी होती है।

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज ने आचार्यपद रजतवर्ष के अन्तर्गत यह आह्वान किया है कि नियमित सामायिक करने वालों का एक ऐसा संघ बने, जो निर्व्यसनी भी हो। उन्होंने इस सम्बन्ध में जो भाव अभिव्यक्त किए हैं, उनका प्रकाशन जिनवाणी के अक्टूबर-2015 के अंक में हुआ है। उनकी भावना है- ''विचार-शुद्धि हेतु स्वाध्याय और आचार-शुद्धि हेतु सामायिक महत्त्वपूर्ण साधना है। आचार्य भगवंत (आचार्य श्री हस्ती) ने अपने समूचे संयमी जीवन में हजारों लोगों को सामायिक साधना से जोड़ा था। जिससे उनका जीवन निर्व्यसनी व प्रामाणिक बनकर समाज के लिये आदर्श बन गया था। पर आज समाज में, संघ में, सम्प्रदाय में निर्व्यसनता व प्रामाणिकता का स्तर घटता जा रहा है। अतः आचार्य भगवन्त (आचार्य श्री हस्ती) के भक्त कहलाने वालों को **व्यसन-मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा करता हुआ सामायिक संघ का सम्मानित सदस्य बनकर नैतिक, चारित्रिक**

आध्यात्मिक स्तर को स्तरीय बनाने के लिये आह्वान कर रहा हूँ। संघ का प्रत्येक सदस्य, संघ व सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारी गण, कार्यकर्त्तागण सभी सामायिक संघ के उपक्रम को आगे बढ़ाने हेतु दायित्वों का निर्वहन निष्ठा से निभायें। हर पदाधिकारी एक-एक क्षेत्र को संभालने का जिम्मा लेते हुए डोर-टू-डोर दस्तक देकर सामायिक कर्त्ता को जो पूर्णतः निर्व्यसनी हो, सामायिक संघ का सदस्य बनाने का प्रयत्न कर सकता है। इस वर्ष में संघ के सकल घटक शक्ति व उत्साह से सक्रिय होकर इस मिशन को सफल बनाने हेतु संकल्पबद्ध हो जुट जायें। संघ के हर सदस्य, चाहे वे 8 वर्ष के हों या 80 वर्ष के हों, सभी आयु वर्ग वाले सामायिक संघ की सदस्यता ग्रहण को प्राथमिकता दें, ऐसी मेरी भावना है। आज सामायिक करने वाले लाखों हैं, करोड़ों की संख्या में सामायिक हो रही है। पर सामायिक संघ का सदस्य वही होगा, जो निर्व्यसनी होगा। तात्पर्य यही है कि सामायिक संघ आचारवानों से परिपूर्ण एक विशुद्ध एवं प्रामाणिक संस्था का स्वरूप लिये हो।''

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी महाराज के उपर्युक्त कथन से हमें उनकी बलवती भावना का बोध होता है कि वे निर्व्यसनी सामायिक संघ के माध्यम से दो उद्देश्यों को पूर्ण करना चाह रहे हैं-

1. समाज का सदस्य निर्व्यसनी बने। वह मदिरा, मांस, जुआ, चोरी आदि के व्यसनों से दूर रहे। गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, भांग, गांजा, चरस, हेरोइन आदि का जीवन-पर्यन्त त्याग रखे। सभी प्रकार का जुआ, सट्टा बाजार की तेजी-मंदी एवं शेयर बाजार में राशि लगाकर जुआ खेलने का जीवनपर्यन्त त्याग रखे। मांस, मछली, अण्डे आदि पदार्थों का सेवन न करे। शेयर बाजार में धन लगाना भी एक प्रकार का जुआ है। आचार्यश्री की इस भावना का यदि आदर किया जाए तो जैन समाज कितना स्वच्छ एवं सुन्दर समाज बन सकता है, इसकी परिकल्पना हम स्वयं कर सकते हैं। आचार्यप्रवर एक आचारनिष्ठ, नैतिक एवं प्रामाणिक समाज की परिकल्पना लेकर चल रहे हैं। जो आचार के प्रति निष्ठावान होगा, उसे ही वास्तव में सामायिक का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। अतः आचार्यप्रवर ने निर्व्यसनता को सामायिक साधना की प्रथम आवश्यक भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया है।
2. सामायिक की नियमित साधना हो। नियमितता एवं निरन्तरता का फल दृष्टिगोचर होता है। बार-बार जब मन, वचन एवं कर्म को साधा जायेगा, तो व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा। प्रतिदिन समभावपूर्वक सामायिक की जाये, किन्तु जो

प्रतिदिन न कर सकें वे एक माह में कम से कम चार सामायिक की साधना अवश्य करें ताकि उन्हें यह भान हो सके कि उनके पास अपने को शुद्ध बनाने का उत्तम साधन प्राप्त है। आचार्यश्री ने संघ के प्रत्येक सदस्य, संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, कार्यकर्त्तागण आदि सभी को स्वयं सामायिक करने एवं इस सामायिक के अभियान को आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा है। स्वयं सामायिक करने वाला ही दूसरों को सामायिक के लिए तैयार कर सकता है। संघ के सभी घटक पूर्ण शक्ति एवं उत्साह के साथ सक्रिय होकर इस अभियान को सफल बनाने हेतु जुट जायें। यह आचार्य श्री की उत्तम भावना है।

आचार्यश्री ने निर्व्यसनतापूर्वक सामायिक करने वालों के लिए **'निर्व्यसनी सामायिक संघ'** नाम दिया है। इस सामायिक के माध्यम से पूज्य आचार्यप्रवर संघ के प्रत्येक सदस्य का नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक उत्थान चाहते हैं। उनके मन में एक सुन्दर समाज की रचना का भाव है, जो देश में एक विशिष्ट समाज के रूप में पहचाना जा सकता है तथा फिर वह समाज दूसरों के लिए अनुकरणीय हो सकता है।

जयपुर में 10 जनवरी को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की संचालन समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें **संचालन समिति के सारे सदस्यों ने एकमत से यह संकल्प लिया कि वे स्वयं भी निर्व्यसनी सामायिक करेंगे एवं अपने परिवार वालों को भी इसकी प्रेरणा देंगे तथा यथाशक्ति निर्व्यसनी सामायिक का पूरे देश में प्रचार-प्रसार करके आचार्यप्रवर के आह्वान को सफल बनायेंगे।** राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा ने संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन-सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, सह-संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संरक्षक श्री डी.आर.मेहता, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा आदि की मौजूदगी में इस प्रकार का निर्णय लेकर आचार्यश्री के अभियान को एक गति प्रदान की है। श्राविका मण्डल, युवक परिषद् आदि घटक भी इस कार्यक्रम से जुड़ेंगे एवं घर-घर जाकर निर्व्यसनी लोगों को सामायिक-साधना से जोड़ेंगे तो पूज्यप्रवर का संदेश साकार हो सकेगा। इसके लिए पूर्ण शक्ति एवं समन्वय से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। निर्व्यसनी बनाना एवं फिर उसे सामायिक की साधना से जोड़ना यह दो कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इनसे व्यक्ति का जीवन पूर्णतः बदला जा सकता है तथा उसकी दिशा को सम्यक् एवं उच्च रूप प्रदान किया जा सकता है।

यह निर्व्यसनी सामायिक-संघ वर्ष है। पूरे वर्ष में निर्व्यसनता एवं सामायिक की साधना को बढ़ावा देना है। सामायिक की साधना के साथ निर्व्यसनता के अतिरिक्त कुछ अन्य

नियमों का भी उल्लेख अक्टूबर-2015 की जिनवाणी में किया गया है, जिसके अनुसार सदाचार का पालन एवं प्रामाणिक जीवन जीने का लक्ष्य रखना सामायिक साधक के लिए आत्मसाक्षी से पालनीय अनिवार्य नियम है। प्रातःकाल अपने से बड़ों का अभिवादन कर विनय करना, उनके प्रति आदर भाव प्रकट करना एवं विराजमान संत भगवन्तों के दर्शन की भावना रखना भी सामायिक साधक की चर्या में सम्मिलित किया गया है।

आचार्यश्री का मन्तव्य है- "जब हम भोजन शुद्ध पसन्द करते हैं। कपड़े शुद्ध पहनकर स्मार्ट दिखना चाह रहे हैं। मकान हर ओर से स्वच्छ हो, ऐसा ख्याल रखते हैं। यानी दुनिया भर की हर वस्तु शुद्ध ही पसन्द करते हैं तो फिर **हमारा जीवन प्रामाणिक व आचरण भी शुद्ध हो।**" पूज्य आचार्यश्री ने समाज के प्रत्येक सदस्य को सामायिक संघ का सदस्य बनने का आह्वान करते हुए कहा है- "**जो-जो भी निर्व्यसनी हैं वे सब सामायिक संघ की सदस्यता ग्रहण कर आगत कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें। जिनमें आंशिक व्यसन हैं, वे स्वेच्छा से त्यागकर आचार्य भगवंत (आचार्य हस्ती) द्वारा पूर्व में चलाये गए, किन्तु सुप्तावस्था को प्राप्त अभियान को बल व गति प्रदान करें। संघ का प्रत्येक सदस्य निर्व्यसनी बन संघ की गौरव गरिमा का अनुपम आदर्श स्थापित करने में सहभागी बने।** ऐसी मंगल मनीषा है।"

सामायिक में क्या करें? यह प्रश्न कई लोगों का हो सकता है। मन, वचन एवं शरीर की साधना के लिए स्वाध्याय से खुराक प्राप्त होती है। अतः स्वाध्याय को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। माला, प्रार्थना, भजन, जाप आदि भी चित्त को ठीक रखते हैं, अतः इनका भी उपयोग हो सकता है। इनके साथ ध्यान की विधि आती हो तो ध्यान भी एक आवश्यक अंग है। आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज ने कहा है- "सामायिक को तेजस्वी बनाने के लिए उसमें स्वाध्याय और ध्यान साधना की आवश्यकता है और स्वाध्याय को जीवन स्पर्शी बनाने के लिए सामायिक का अभ्यास आवश्यक है।" (सामायिक-साधना और स्वाध्याय, पृष्ठ 20)। आचार्य हस्ती का मन्तव्य है कि सामायिक एक बहुत बड़ी योग-साधना है। पातञ्जल योग सूत्र में योग के आठ अंग बताये हैं- "यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये आठों अंग सामायिक में पूर्ण होते हैं।" (सामायिक-साधना और स्वाध्याय, पृष्ठ 21) इसलिए सामायिक को एक मामूली साधना न समझकर उसे अपने जीवन को उन्नत बनाने की आवश्यक साधना मानना चाहिए तथा उसे उत्कृष्ट बनाने के लिए निर्व्यसनता को अपनाकर नैतिक एवं प्रामाणिक जीवन जीने का लक्ष्य बनाना चाहिए। फिर देखें, समता भाव स्वतः चला आएगा। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

जरा-मच्चुवसोवणीते णरे सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति।
पासिय आतुरे पाणे अप्पमत्तो परिव्वए।

-आचारांग, प्रथम श्रुत स्कन्ध, अध्ययन 3, उद्देशक 1, सूत्र 108

अर्थ- वृद्धावस्था एवं मृत्यु के वश को प्राप्त मनुष्य निरन्तर मूढ बना रहता है तथा धर्म को नहीं जानता है। दुःखों से आतुर प्राणियों को देखकर साधक अप्रमत्त होकर परिव्रजन करे।

विवेचन- मूढ व्यक्ति धर्म को नहीं जानता है। उसे धर्म की कितनी ही शिक्षा दी जाए उसके गले नहीं उतरती है। मोहयुक्त को मूढ कहा जाता है। मोह से ज्ञान भी आच्छादित हो जाता है, इसलिए मोहयुक्त को अज्ञानी भी कहा जाता है। अज्ञानी व्यक्ति धर्म को नहीं जान पाता है, क्योंकि वह विषयों के प्रति अधिक रुचिशील होता है। यहाँ कहा गया है कि जो जरा एवं मृत्यु के वश में है अर्थात् जरा एवं मृत्यु से आशंकित है, घबराया हुआ है वह सतत मूढ बना रहता है तथा धर्म को नहीं जानता है।

मनुष्य धर्म को कब जानता है? बालक जन्म होने से लेकर आठ वर्षों तक तो प्रायः धर्म के मर्म से अनभिज्ञ ही रहता है। उसके पश्चात् भी विरले ही व्यक्ति धर्म को समझ पाते हैं। फिर किशोरावस्था एवं युवावय में विषयभोग प्रिय लगते हैं, अतः उस अवस्था में भी वह धर्म को नहीं जान पाता है। अधर्म एवं अनीति के लिए मूढता उपयोगी होती है तथा अमूढ एवं सजग व्यक्ति ही धर्म का स्वरूप समझ पाता है। युवावय के पश्चात् वह पारिवारिक दायित्वों में फंसा रहकर अपने चित्त को बाह्य पदार्थों में उलझाए रखता है। मनुष्य यह नहीं जानता कि वह निरन्तर जरा (जीर्णता) या वृद्धावस्था को प्राप्त हो रहा है। उसका आयुष्य बीत रहा है। वह मृत्यु की ओर निरन्तर आगे बढ़ रहा है। यह सत्य है कि मृत्यु निश्चित है। इस सत्य को जानने पर तो धर्म के प्रति उन्मुख हुआ जा सकता है, किन्तु जो जरा एवं मृत्यु से घबराया रहता है, भयभीत एवं आशंकित होता है वह मोहयुक्त ही होता है। सत्य का साधक निर्मोही होता है तथा जरा एवं मृत्यु से भयभीत नहीं होता है। वह मूढता का त्याग कर धर्म के स्वरूप से परिचित हो सकता है। दूसरे अर्थ में युवावस्था के पश्चात् जब वृद्धावस्था आती है तो उसके दुःख से दुःखी व्यक्ति मूढ बना रहता है तथा सत्य को एवं धर्म को समझ नहीं पाता।

आचारांग सूत्र सावधान कर रहा है कि आतुर अर्थात् दुःखी प्राणियों को देखकर भी अपने में परिवर्तन लाया जा सकता है। अन्य दुःखी प्राणियों को देखकर उनसे शिक्षा ग्रहण

की जा सकती है, कि जिन प्रमाद, हिंसा, आसक्ति आदि कारणों से ये जीव मूढ एवं दुःखी बने हुए हैं, उनका त्याग कर मैं अप्रमत्त, अहिंसक एवं अनासक्त बन जाऊँ। कभी व्यक्ति स्वयं अपने अनुभव से सीखता है तो कभी दूसरों को देखकर भी अनुभव प्राप्त कर लेता है।

आचारांग सूत्र में अप्रमत्त बनने का पदे-पदे संदेश मिलता है, प्रस्तुत सूत्र में भी अप्रमत्त होकर जीवन जीने का संदेश दिया गया है। प्रमत्तता भय, आशंका एवं दुःख को जन्म देती है, अतः अप्रमत्त बनकर धर्म का स्वरूप जानते हुए उसे जीवन में अपनाने में ही सार्थकता है। धर्म क्या है? अहिंसा, संयम एवं तप का आचरण धर्म है। सम्यक्त्व एवं चारित्र का जीवन में आना धर्म है। क्षमा, मार्दव, आर्जव, निर्लोभता आदि गुणों की अभिव्यक्ति धर्म है। पर से हटकर स्वभाव में आना धर्म है। इस धर्म को जानने एवं जीवन में अप्रमत्तता लाने के लिए मोह का त्याग करना होगा, ताकि हम मूढ़ता से बच सकें।- **सम्पादक**

प्रभु आपका शरणा लेता हूँ

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

प्रभु आपका शरणा लेता हूँ, मैं ध्यान आपका धरता हूँ,
मेरे रोम-रोम में आप बसे, नित्य याद आपको करता हूँ।
प्रभु आपका शरणा लेता हूँ.....।।

मेरी भूलें प्रभुवर माफ करो, मेरे अन्तर नव विश्वास भरो,
श्रद्धा की ज्योति जगती रहे, मेरे जीवन का उत्थान करो।
जिनवाणी उतरे जीवन में, मैं यही प्रार्थना करता हूँ,
प्रभु आपका शरणा लेता हूँ.....।।1।।

जीवन का गुलशन खिल जाता, जब आप हृदय में होते हैं,
प्रभु आपकी अनुकम्पा पाकर, हम अमन चैन से रहते हैं।
प्रभु आपकी आज्ञा है ऊँची, हर कदम यतना से धरता हूँ,
प्रभु आपका शरणा लेता हूँ.....।।2।।

उलझन है बहुत विचारों में, मन इत उत गोते खाता है,
व्याकुल हो जाता है यह मन, नहीं धैर्य पलक रह पाता है।
तब आपकी वाणी का गुंजन, अपने अंतर में भरता हूँ,
प्रभु आपका शरणा लेता हूँ.....।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

विचार-वारिधि

दान(2)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जो अपने द्रव्य का दान करता है, वह केवल इस भावना से ही दान नहीं करे कि उससे उसको अधिक लाभ होगा, बल्कि उसके साथ यह भावना भी रहनी चाहिए कि यह परिग्रह दुःखदायी है, इससे जितना अधिक स्नेह रखूँगा, यह उतना ही अधिक क्लेशवर्धक तथा आर्त्त एवं रौद्र-ध्यान का कारण बनेगा।
- गृहस्थ यदि शीलवान् नहीं है तो उसके जीवन की शोभा नहीं। जिस प्रकार शीलवान होना गृहस्थ जीवन का एक आवश्यक अंग है, उसी तरह अपनी संचित संपदा में से उचित क्षेत्र में दान देना, अपनी संपदा का विनिमय करना और परिग्रह का सत्पात्र में व्यय करना, यह भी गृहस्थ जीवन का एक प्रमुख अंग, सुन्दर भूषण और मुख्य कर्त्तव्य है।
- अगर हर व्यक्ति तप-त्याग के साथ शुभ कार्यों में अपने द्रव्य का सही वितरण करता रहे तो ''एक-एक कण करते-करते मण'' इस उक्ति के अनुसार पर्याप्त धन-राशि बन जाती है।
- आपका अन्न दान, जल दान, वस्त्र दान, द्रव्य दान आदि सारे दान खूटने वाले हैं, लेकिन मुनियों का दान अखूट (अक्षय) होता है। मुनियों के लिए कहा है कि संसार से थोड़ा द्रव्य दान लो और भावदान दो।
- साधु ज्ञान दान देता है, चारित्र दान देता है। जो भाई व्यसन करने के आदि हैं, उनको उपदेश देकर व्यसनों का निवारण कराता है। शिक्षा देकर सदा-सदा के लिए दुर्व्यसन छुड़ाकर दुःख से मुक्त कराता है, क्लेश से मुक्त कराता है। घर में जहाँ विग्रह या कषाय होता है, भाईयों में, परिवार के बीच में झगड़ा होता है तो साधु उनको उपदेश देकर भाई-भाई का खार मिटाकर प्यार कराता है। उसका यह दान कभी नहीं खूटेगा। ऐसा दान देना आप सीख जाओगे तो इस दान के आगे आपका द्रव्यदान हजारवाँ या करोड़वाँ भाग भी नहीं है।
- कहीं पैसा नहीं होने पर काम अटका हुआ है, कहीं पर प्रेरणा नहीं होने से काम अटका है, तो कहीं मतभेद होने से काम अटका है। लोगों में भावना हो और सोचें कि धर्म-रक्षा भी हमारा कर्त्तव्य है, तो समाज का रक्षण हो सकता है। क्षेत्रों को संभालने और उनमें प्रचार करने के लिये समय-दान और द्रव्य-दान दोनों आवश्यक हैं। विचार दान से भी बहुत सा काम हल हो सकता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रेरक-संदेश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : मुमुक्षु-संत-सतियों द्वारा पालनीय सावधानियाँ

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर उन्होंने मुमुक्षुओं एवं संत-सतियों के निर्मल संयमी जीवन हेतु हितकारी संदेश दिया है, जिसका संकलन श्री जगदीशजी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

मुक्ति की इच्छा रखने वाले साधक को मुमुक्षु कहते हैं। मोह तथा रागद्वेष का क्षय होना मुक्ति है। वीतरागता ही मुक्ति का प्रमुख कारण है। वीतरागता का आशय है- राग-द्वेष के संस्कारों को समाप्त करना। प्राणिमात्र के प्रति समान भाव का स्थापन करना समता है। समता की साधना किये बिना सिद्धि संभव नहीं है। आर्यों (तीर्थंकर भगवन्तों) ने समता में ही धर्म कहा है, ऐसा आचारांग सूत्र में कथन है। दशवैकालिक में कहा- ''समयाए समणो होई।'' समता से ही श्रमण होता है। इसी की पुष्टि में कहा है- ''समता सर्वभूतेषु'' अर्थात् सभी जीवों पर समता भाव ही सामायिक है। उत्तराध्ययन सूत्र 25.32 कहता है- 'यह सामायिक ही मुक्ति का परम हेतु है।' जितने भी जीव मोक्ष में गये हैं, जा रहे हैं और जायेंगे, सभी सामायिक के प्रभाव से मुक्ति के साधक होते हैं। समता (सामायिक) ही साधना का प्राण है। इसके बिना की गई सारी क्रियाएँ, ज्ञान आदि कोरा क्लेश है। अतः मुमुक्षु सबसे पहले प्राणिमात्र के प्रति आत्मीय भाव रखने का लक्ष्य बनाए। संयम लेने के भाव बनने में वस्तु, व्यक्ति आदि निमित्त बनते हैं, किन्तु वस्तु वंदनीय नहीं होती। जैसे- नमिराजर्षि को चूड़ियों की झनकार सुनकर वैराग्य उत्पन्न, हुआ परन्तु उनके लिये चूड़ियाँ वंदनीय नहीं बनीं। जब व्यक्ति (गुरुजन) अर्थात् संत-सती संयम के भाव बनाने व बढ़ाने में निमित्त बनते हैं, तो उनके प्रति कृतज्ञ भाव रहना ही चाहिये, लेकिन उनके प्रति राग भाव से नहीं बँधना चाहिये। मुमुक्षु का कर्त्तव्य है कि वह संयम अंगीकार करने के पश्चात् संघ व संघनायक के प्रति समर्पण भाव रखे। व्यक्ति को नहीं, अपितु संघ को प्रधानता दे। आचार्य उसे जिस सिंघाड़े में नियोजित करे 'आणाए धम्मो' का अनुसरण करते हुए उस सिंघाड़े में सहर्ष-प्रमोद भाव से साधना में रत रहे। सभी सहवर्ती संत अथवा साथ वाली महासतियाँजी के साथ आत्मीय भाव से रहे। एक ही सिंघाड़े में या इच्छित संत/सतियों के साथ ही रहने का आग्रह न रखे। हम समता के साधक हैं, अतः परस्पर सभी के प्रति यथेष्ट भाव रखें। हम

वीतरागता के पथिक हैं, अतः रागद्वेष की गाँठे नहीं बनने दें। बनी हुई गांठों को खोलकर आत्मिक आनन्द प्राप्त करें। जब हम श्रद्धालु श्रोताओं को वीतरागता की बातें सुनाते हैं तो स्वयं भी उसे अपने जीवन में चरितार्थ करें। आपस में सिंघाड़ों के परिवर्तन से अपने साथी संत-सतियों के अनेक अनुभव, ज्ञान आदि सीखने के सुन्दर अवसर मिलते हैं, सहनशीलता का विकास होता है। यदि किसी की प्रकृति कुछ विपरीत भी है तो निभकर-निभाकर चलने के गुण का विकास होता है।

आत्म-साधक के लिए वीतरागता की साधना में प्रायः तीन मुख्य कारण बाधक हैं- 1. व्यक्तिराग, 2. लोकैषणा और 3. अहंकार। उक्त तीनों ही कारण साधना को दूषित करने में सहायक हैं।

1. व्यक्तिराग- व्यक्तिराग कहें या व्यक्तिवाद कहें, यह साधक को अध्यात्म क्षेत्र में गहरा नहीं उतरने देता। निर्मोही नहीं बनने देता। गौतम स्वामी का वीर प्रभु के प्रति राग भले ही भवों में भटकाने वाला नहीं था, परन्तु बन्धन में अटकाने वाला तो बना ही रहा। वह राग जब छूटा तब ही गौतम स्वामी कैवल्य के अधिकारी बने। राग और अनुराग में अन्तर है। राग देह, वस्तु आदि के प्रति होता है। जबकि अनुराग गुणों के प्रति होता है। साधना में अनुराग नहीं, अपितु राग बाधक बताया है। हर साधक आत्मा गुणानुरागी बने, पर देह के रागी, व्यक्ति के रागी पुद्गल के रागी नहीं बने।

संयम की साधना तो व्यक्तिगत साधना है। साधक कहीं भी रहे, अपने स्वभाव में रहे। जो अपने पास (अपने में) रहता है, वह सबके पास सहजता से रह सकता है। जो अपनी समता में नहीं रहता, वही विषमता फैलाता है। अपने में रहने वाले का तो यही सुन्दर चिन्तन होता है- "मैं हूँ सबका, सब है मेरे।" जो यहाँ दो-चार के बीच सामञ्जस्य और सौहार्द से नहीं रह सकता, वह अनन्त (सिद्ध) के साथ रहने के सपने छोड़ दे। जो यहाँ सबके साथ मधुरता से रहता है, वही मुक्ति का मधुर फल चखता है। आत्मसाधक संत-सतियों का तो व्यापक और उदात्त दृष्टिकोण रहता है- 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् उदार चरित्र वाले तो सारी धरती को अपने कुटुम्बवत् मानते हैं। उनके लिये किसी भी सिंघाड़े में रहना, किन्हीं भी संत-सती के साथ रहना सहज व सरल बात है। वे अपने मधुर व सुन्दर व्यवहार से सबका मन जीत लेते हैं। बड़ों के मन को वे विनम्रता, आदर व सेवाभावना से जीत लेते हैं। जबकि छोटों के मन को आत्मीयता एवं स्नेह प्रदान कर जीत लेने में दक्ष होते हैं। उनके मन में किसी के प्रति लगाव व अलगाव वाले भाव नहीं होते, अपितु सर्वत्र समभाव का सम्यक् आदर्श प्रस्तुत होता है।

आज जो गुरु के पास ही रहने का आग्रह कर रहे हैं, कल या भविष्य में गुरु के न रहने

पर अन्यत्र जायेंगे ही, रहेंगे ही। तब वह दूरी मजबूरी कहलाएगी। पहले ही मन से गुरु की बात मानने में महानता व समझदारी है। आज्ञा की आराधकता है, व्यवस्था में सहयोग है, वीतरागता का वर्धापन है।

अज्ञानी गृहस्थ छोटी-छोटी बातों में एक-दूसरे को काटते रहते हैं, बाँटते रहते हैं, छाँटते रहते हैं। ज्ञानी कहलाने वाले साधु भी अगर ऐसा करते हैं तो आपसी सामञ्जस्य व सौहार्द की अपेक्षा फिर और किससे रखी जायेगी?

हमारे यहाँ समाचारी की भी संहिता है। सभी साधु-साध्वी एक दूसरे को भाई-बहन समझकर आत्मवत् व्यवहार करेंगे। जिनशासन का तो उद्घोष है- "एगे आया" सभी आत्माएँ समान हैं, या "एगा मणुस्सजाई" मनुष्य जाति एक है। आपसी आत्मीयता में ही आनन्द है, श्री संघ की, जिनशासन की शोभा है। गुरु हस्ती ने इस आपसी सौहार्द को अपने जीवन में जीया था एवं विरासत रूप में सँभला कर गये हैं। मेरा भी आप सभी से यही निवेदन है कि हम भी हिलमिलकर रहने की कला में निष्णात बनें। समता और वीतरागता की साधना से शीघ्र सिद्धि का वरण करें।

2. **लोकैषणा-** आत्म-साधक के लिये लोकैषणा ज़हर है। आचारांग सूत्र में कहा है- "णो लोगस्सेसणं चरे।" साधक प्रसिद्धि का नहीं, अपितु सिद्धि का पिपासु होता है। प्रशंसा की चाहना पतन का प्रमुख कारण बन जाता है। बड़े-बड़े गिने जाने वाले, माने जाने वाले साधक भी प्रसिद्धि के व्यामोह में फँसकर साधना से हाथ धो बैठते हैं। इसीलिये भगवान महावीर ने साधक की सुरक्षा के लिये कहा है- "विवज्जणा बालजणस्स दूरा।" (उत्तराध्ययन, 32.3) अर्थात् आत्मसाधक बालजनों से दूरी बनाये रखे, तभी उसकी मुक्ति की साधना पूरी हो सकती है। गृहस्थ के लिये अति परिग्रह, साधु के लिये अति परिचय दोनों ही खतरनाक हैं। साधु का अधिक समय जब लोगों को सँभालने में लगेगा, तो वह स्वयं की साधना को संभाल नहीं पायेगा। साधना से नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। दशवैकालिक सूत्र के आठवें अध्ययन की 53 वीं गाथा उद्घोष कर रही है-"गिहिसंथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं।" अर्थात् साधक गृहस्थों का अधिक संसर्ग नहीं करे। साधुओं का ही विशेष संग करे। रत्नत्रय में सहायक श्रावक तो विरले ही होते हैं। अम्मापियरो का विरुद निभाने वाले श्रावकों की संख्या आज कम होती जा रही है, जो श्रावक-समाज के लिये एक चिंतनीय विषय है। अधिकांश श्रावक संतों के पास मस्का लगाते रहते हैं, जो उनके डूबने का निमित्त बन सकता है। अगर साधक सावधान नहीं रहे तो जो साधक स्वयं आगे होकर के पूजा, यश चाहता है, मान-सम्मान की कामना करता है, वह साधक मायाशल्य का सेवन करता है तथा बहुत पाप को प्रसूत करता है। दशवैकालिक सूत्र, 5.2.35 में

भगवान ने उस मुनि को बड़ा भद्र कहा है, जो संसार के सभी प्रपंचों से परे रहकर एकान्त में, अपनी आत्मा की अनुपश्यना करता है। साधक का प्राथमिक कर्त्तव्य आत्मकल्याण है, उसे करते हुए वह जगत् के कल्याण के लिये उपदेश आदि रूप निरवद्य प्रवृत्ति कर सकता है। भगवान ने अपनी दाल सीझते हुए किसी अन्य की ढोकली पकाने की बात तो कही है, परन्तु अपनी कुटिया जलाकर किसी को तपाने का तो सर्वथा निषेध ही किया है। स्वयं तिरने के मार्ग पर चलने वाला साधक ही दूसरे को तिरने के मार्ग पर लगा सकता है।

लोगों से अधिक परिचय बढ़ने पर व्यक्तिगत गठबंधन बढ़ने लगते हैं, जो स्वयं और संघ दोनों के लिये खतरनाक (अहितकर) साबित होते हैं। अतः लोकैषणा में आत्मगुणों की विराधना है, जबकि इससे बचकर एकान्त में अपनी साधना करने में ही आत्मगुणों की आराधना है। ऐसा समझकर लोकैषणा का त्याग करें। गुरुदेव संघ की सेवा करके भी स्वयं को भीतर से असंग रखते थे।

3. अहंकार– 'निम्ममो निरहंकारो' ममकार और अहंकार, ये संसार के मूल हैं। साधु बनने वाला ममकार को तो छोड़कर आ गया, परन्तु अहंकार पर विजय मिलाना भारी पड़ रहा है। तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा है–

कंचन तजबो सहज है, सहज क्रिया का नेह।
मान बढ़ाई ईर्ष्या, तुलसी दुर्लभ ऐह।।

धन–दौलत व परिवार को छोड़कर आने वाला साधक भी अहंकार के चक्कर में फँस जाता है। अहंकार का पोषण तो जीव को अच्छा लगता है, पर भगवान ने इसे अनुकूल परीषह बताया है। प्रतिकूल परीषह यदि एक बार आ भी जाये तो सहना सरल हो सकता है, परन्तु अनुकूल परीषह में सम रह सकना दुष्कर होता है। व्यक्ति कंकड–पत्थर के मार्ग को तो पार कर जाता है, पर चिकनी मिट्टी पर चलना बहुत कठिन होता है। अजमेर साधु-सम्मेलन के समय गुरुदेव ने एक अकेले विचरण करने वाले साधु से पृच्छा की कि- "आप अकेले क्यों विचरते हैं?" उनका जवाब था- गुरुजी मुझे प्रवचन नहीं देने देते। इसलिये मैं अकेला विचरता हूँ। यह है भीतर फुँफकारने वाला अहंकार का काला विषैला नाग, जो स्वयं को भी डसता है और अपना जहर संघ में भी फैलाता है। यह आदमी को चैन से जीने नहीं देता, अपितु बेचैन बनाये रखता है। अहंकारी से समाधि कोसों दूर होती है। वह स्वयं अपने अहंकार के कारण असमाधि में रहता है और संघ में भी असमाधि फैलाता है। अहंकार का पोषण भले ही प्यारा लगता है, पर यह जीवन को खारा ज़हर बना देता है। इसीलिये भगवान ने दशवैकालिक सूत्र में विनय को समाधि कहा है। उपचार से यह कथन है कि विनय की आराधना वाला ही समाधि को प्राप्त करता है। विनयवान मुमुक्षुओं को पद-

पद पर सम्पत्ति है, जबकि अविनीत साधक को पद-पद पर विपत्ति है- ''विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य।'' (दशवैकालिक सूत्र, 9.2.22)

हम गुरुदेव के दीर्घकालिक निर्मल संयमी-जीवन को गहराई से देखें, इतने बड़े संघ का नेतृत्व करते हुए भी अपने आपको संघ का सेवक मानते थे। अहंकार को नकार कर, विनय को स्वीकार कर भव से पार होने के लिये हमने संयम लिया है। गृहस्थ को तो सम्पत्ति का बँटवारा करना है, इसलिये उनमें तो झगड़े आदि होने की बात देखी-सुनी जाती है। साधुओं को क्या बाँटना है? फिर भी उनमें ऐसा क्यों? इसका मुख्य कारण उनका अहंकार ही है। अहंकार प्रेम से रहने नहीं देता, उसे तो बिखराव-टकराव ही पसन्द है। हम इसे समझकर अपने जीवन को विनय से ओतप्रोत बनायें। स्वयं भी आनन्द से रहें और संघ में भी आनन्द की लहर व्याप्त करें, ऐसी मंगल मनीषा है। *-संकलन : श्री जगदीश जैन*

अध्यात्म के बेस्ट क्रिकेटर

महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

ओ गुरु हीरा, आप अध्यात्म के बेस्ट क्रिकेटर हो,
पीपाड़ के पिच पर जन्म लेकर,
गुरु हस्ती से संयम की ओपनिंग कर,
ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी तीन विकिट को प्राप्त कर,
अध्यात्म के स्टेडियम में प्रवेश कर
मोक्ष रूपी वर्ल्ड कप को जीतने के लिए
कषाय को कैच आउट कर
राग-द्वेष को रन आउट कर
संक्लिष्ट परिणामों को स्टम्प आउट कर
हायमान परिणामों को हिट विकिट आउट कर
वर्तमान परिणामों में रनिंग करके
कैवल्य के शतक की प्राप्ति के लिए
सजगता, सहजता, सरलता, समता की
बैटिंग कर रहे हो।
मोह की वाइड बॉल से आप असंग रहते हो
सत्कार पुरस्कार की लेग बॉय बॉल से आप अनासक्त रहते हो
अभिमान की नो बॉल से आप अलग रहते हो।
इसलिए ओ गुरुदेव! आप अध्यात्म के बेस्ट क्रिकेटर हो।

प्रवचन

ज्ञान के अनादर से ही जीवन में दुःखों के पहाड़

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 25 अक्टूबर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

'मनुष्य के जीवन में दुःख और पीड़ा की स्थिति क्यों बनती है, क्या इस कारण को समझने का कभी प्रयास किया? इसका मूल कारण है- ज्ञान का अनादर। चूंकि मानव बहुत ही सही व अच्छी बातों को जानता है, मगर मानता नहीं, यही तो ज्ञान का अनादर है। आप जानते हैं कि गुस्सा-क्रोध-अहंकार करना खराब है, फिर क्यों करते हो? झूठ बोलना, बुरा देखना, अपमान करना, मांसाहार-शराब का सेवन करना, चोरी करना, जुआं खेलना, शिकार करना, वेश्यागमन, झूठी गवाही देना, ये सभी पाप बढ़ाने के कारण हैं, फिर भी ऐसा करना ही तो अपने ज्ञान की अवहेलना है। जब तक ज्ञान को ठुकराया जाकर विपरीत आचरण किया जाता रहेगा, तब तक दुःखों के पहाड़ जीवन में बढ़ते ही रहेंगे। ज्ञान के अभाव व ज्ञान के अनादर के कारण ही जीव का भव-भ्रमण निरन्तर बढ़ता आ रहा है। सारे अशुभ कर्म, पाप की प्रवृत्ति, गलत मानसिकता, विकारयुक्त सोच, हिंसक व अराजक कृत्य और शाश्वत धर्म की उपेक्षा अथवा गुणों का तिरस्कार ज्ञान के अभाव में ही होता है।

ज्ञान किसे कहते हैं? निज स्वरूप में अचलता का बोध ही ज्ञान है। जो चलायमान है, वह मैं नहीं हूँ। जो मेरे नहीं, बदलने-छूटने-मिटने और चले जाने वाले हैं, वे सब चल ही हैं, लेकिन आत्मा जो अचल है, कभी साथ छोड़ने वाली नहीं है, उसके प्रति कितना आदर है? उसके लिए कितना और चल के प्रति कितना वक्त दे पाते हैं? चल या अचल का बोध सिर्फ ज्ञान से ही हो पाता है, परन्तु उस ज्ञान के प्रति हमारी रुचि-निष्ठा-श्रद्धा कैसी और कितनी है? संसार का ज्ञान हमेशा भटकाव व बर्बादी का कारण बना है, लेकिन सम्यक् ज्ञान ही हमें समय के सदुपयोग और ज्ञान के आचरण की राह दिखाता है। धन-रूपया-पैसा-सोने-चांदी के जेवरात, हीरे-मोती अथवा पर्स-बैग रास्ते में आपसे कोई बदमाश छीन या लूट सकता है अथवा घर-दुकान-गोदाम-फैक्ट्री में चोर चोरी करके कीमती सामान या नगदी पार कर सकते हैं, मगर ज्ञान ऐसा दुर्लभ रत्न है जिसे कोई भी

आपसे न छीन सकता है, न लूट सकता है, न चोरी कर सकता है, न डकैती हो सकती है। ज्ञान ऐसी अमूल्य धरोहर है जिसे कोई नष्ट भी नहीं कर सकता, परन्तु विडम्बना यही है कि ऐसी सबसे बेशकीमती धरोहर की खुली उपेक्षा हो रही है। उसका तिरस्कार-अपमान और उसकी अवहेलना निरन्तर बढ़ रही है। तभी तो जीव पापों से मुक्त नहीं हो पाता। ज्ञान के बिना न सच्चा सुख और न ही मुक्ति संभव है। इसलिए यदि सुखपूर्वक जीना है अथवा संसार से तिरना है, तो सच्चे ज्ञान के आराधक, उपासक व पिपासु बनें ताकि उस ज्ञान के प्रकाश में अंतर मन के ज्ञान चक्षु जागृत-सक्रिय और आत्मा में स्थिर बन सकें।

ज्ञान पर अपने अज्ञान का आवरण छा सकता है, परन्तु ज्ञान हमेशा अमिट व स्थायी बना रहता है। अज्ञान व मिथ्यात्व के काले बादलों को हटाने या नष्ट करने के लिए ही तो ज्ञान के आदर-सम्मान की बात कही जाती है। जब ज्ञान का अनुसरण-पालन होता है, तभी अज्ञान नष्ट होने लगता है। सर्वप्रथम हमें अपने समय (काल) का समाचरण करना होगा। ब्रह्म-मुहूर्त में उठने, हर रोज निर्धारित वक्त पर सामायिक, फिर स्वाध्याय, गुरु भक्ति, प्रवचन का श्रवण ऐसे आधार बिन्दु हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान का आदर होने पर भीतर में नव-जागरण उत्पन्न होता है। फिर संसार की चकाचौंध, मायाजाल, तेरी-मेरी, असत्य कथन, पाप के कृत्य और जड़ पदार्थों के प्रति आसक्ति मिटने-छूटने लगती है। कषायों की अग्नि को मन्द व खत्म करने में ज्ञान बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है। ज्ञानावरणीय कर्म का उदय तभी होता है, जब हम मिले हुए ज्ञान का अनादर करते हैं। निज विवेक की अवहलेना करने पर ही अज्ञान हावी होता है। तभी तो ज्ञान के लिए भी गुरु भगवंतों ने आचार-विचार निर्धारित किया है। जितना-जितना हम ज्ञान के लिए समय का सदुपयोग् करेंगे, उतना-उतना ज्ञान स्वतः ही बढ़ेगा। संसार के ज्ञान से विध्वंस व पतन होता आया है, लेकिन आत्म ज्ञान ने मुक्ति का पथ और इंसानियत के रूप में कर्तव्य बोध को हमेशा उजागर व प्रेरित किया है। संसार में जो भी सुखी बना या मुक्ति को प्राप्त हो पाया, वह ज्ञान के बलबूते पर ही हो सका है। जब हम अपनी सामान्य जिन्दगी के लिए टाइम मैनेजमेंट को महत्त्व देते हैं, फिर सुखपूर्वक जीने और मुक्तिधाम के लिए अपने एक-एक पल को सुन्दर बनाने हेतु समय को निर्धारित कर उसका सदुपयोग करें। काल की प्रतिलेखना से भी ज्ञानावरणीय कर्म की निर्जरा होती है। जब चिन्तन गहरा व गम्भीर होने लगता है, तब हेय और उपादेय क्या है, उसका ज्ञान मुक्ति के पथ पर दो कदम और आगे बढ़ा देता है। जड़ और चेतन, जीव और अजीव के भेद फिर सरलता से आत्मसात् होने लगते हैं।

ध्यान रहे- जो काल के महत्त्व को जानता है, परन्तु समय का सदुपयोग नहीं करता,

वह दर-दर की ठोकरें खाता है, आगे भी खाता रहेगा। अच्छा बताओ, संसार में ऐसा कोई स्थान है, जहां पाप करते हुए कोई देखता नहीं है? अज्ञानी आदमी अंधेरे में इस भ्रम के वशीभूत होकर ही-पाप करता है कि कोई नहीं देख रहा, लेकिन ज्ञान की दृष्टि कहती है कि मेरी आत्मा तो सब कुछ देख रही है। आत्मा का मतलब भगवान खुद देख रहे हैं, लेकिन ऐसा न मानना ही तो अज्ञान व ज्ञान का निरादर है। अतः जो समय निकल गया, वह वापिस आने वाला नहीं। अब जो समय शेष है, उसे ज्ञानार्जन में लगाएं ताकि दुःखों के पहाड़ आगे न बढ़ पाए। ज्ञानियों द्वारा इसीलिए विनय से पहले काल के आचार को ज्ञानाचार में रखा गया ताकि समय का सही उपयोग व उपभोग करने का जज्बा पैदा हो सके। जिसने समय को पहचाना, उसके महत्त्व को समझा, वही फिर संसार सागर से पार हो पाया है। निज स्वरूप मे अचलता का बोध तभी संभव है, जब समय (काल) का सदुपयोग हो पाता है। शाश्वत के लिए किया पुरुषार्थ व द्रव्य का सदुपयोग ही जीवन को उन्नतिशील बना सकता है।

अहंकार है ज्ञान में बाधक

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी

जीव के अज्ञान का अन्धकार एवं ज्ञान का अहंकार जिस क्षण समाप्त होगा, उस क्षण जीव अनन्त ज्ञानी बनने का अधिकारी हो जाएगा। हालांकि संसार में प्रत्येक जीव की यही अभिलाषा रहती है कि मैं ज्ञानी बनूँ, लेकिन ज्ञान का अहंकार व अज्ञान का अन्धकार उसे ज्ञानी नहीं बनने देता। जब भीतर से ज्ञानी बनने की इच्छा जागृत हो जाती है, तब ज्ञानवान व आत्मवान् होना असंभव नहीं है। ज्ञान सभी द्रव्यों का प्रकाशक है। ज्ञानी व्यक्ति कभी भी ज्ञान और ज्ञान के साधनों का अविनय नहीं करता। ज्ञान के साधनों की अवहेलना भी ज्ञान को मन्द करती है। विद्या और सम्पत्ति घमण्ड के लिए नहीं, उपयोग के लिए मिली है। जिन्होंने घमण्ड किया, उनके धन व विद्या दोनों का नाश हो गया। ज्ञान को हम जितना आत्मसात् करेंगे और उसे दूसरों को विनयपूर्वक बांटेंगे, उतना ही वह बढ़ता चला जाएगा। कभी भी किसी की शिक्षा व ज्ञान में अंतराय पैदा न करें। ज्ञान को पाकर साधक के जीवन में जितनी विनम्रता-सहनशीलता-सरलता-सहजता-सहिष्णुता एवं सदाचार आएगा, उतना-उतना उसका आत्मबोध गहरा होता जाएगा। ज्ञान के प्रति जितना समर्पण भाव उत्पन्न होगा, उतना ज्ञानावरणीय-कर्म क्षय होगा। फिर वह ज्ञान पर-पदार्थों में नहीं 'स्व' में लीन करेगा।

(25 अक्टूबर 2015 को अलवर चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का अंश)

अध्यात्म

मैं कौन हूँ?

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी

मैं कौन हूँ? यह प्रश्न मुझे अपने आपसे करना है। उत्तर पाने के लिए मुझे ही परिश्रम करना होगा। मुझे नकारात्मक प्रश्न करने होंगे। सोचना होगा कि मैं क्या नहीं हूँ? मैं शरीर नहीं हूँ, क्योंकि शरीर नष्ट हो जायेगा। जबकि मैं स्थायी हूँ। मैं पदार्थ नहीं हूँ, क्योंकि उसका स्वरूप बदल जायेगा। जबकि मेरा स्वरूप कभी बदला नहीं करता। मैं मन नहीं हूँ, क्योंकि वह प्रतिक्षण भागता है। जबकि मैं स्थिर हूँ। मैं वस्तु नहीं हूँ, क्योंकि उसे दिया...लिया जा सकता है। जबकि मैं न दिया जा सकता हूँ, न लिया जा सकता हूँ। और तब मुझे अपने ही अन्तर से उत्तर मिलेगा कि- ''मैं आत्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं परमात्मा हूँ!!!

आत्मन्! बड़े अचरज की बात मेरे जीवन में यह है कि मैं मुझे नहीं जानता, और यह भी कि, अपने आपको देखने, जानने व समझने का कोई प्रयास भी मेरे अंतर में पैदा नहीं हुआ है। मैं मुझसे जुड़े पदार्थों को जानता हूँ। लोगों को जानता हूँ। लेकिन जानने वाले को नहीं जानता। जानने की जिज्ञासा भी अंतर में प्रकट नहीं हुई। इसलिये यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है। जो केवल और केवल अपने आपसे ही पूछा जा सकता है कि मैं कौन हूँ?

मैंने कभी पूछा भी नहीं कि मैं कौन हूँ? यह प्रश्न किसी और व्यक्ति से पूछा ही नहीं जा सकता। यह प्रश्न स्वयं से ही पूछा जा सकता है कि मैं कौन हूँ। और इसका उत्तर भी स्वयं से ही पाया जा सकता है। मगर उत्तर तो तभी मिलेगा, जब पूछोगे। इसलिये- पहले प्रश्न पैदा होना चाहिए, उत्तर की चिंता मत करो। प्रश्न उपस्थित करो। प्रश्न होते ही उत्तर मिल जायेगा। मैं कौन हूँ, इस प्रश्न का उत्तर किसी दूसरे व्यक्ति से पाया भी नहीं जा सकता। किसी और से पाया गया उत्तर तो अधूरा होगा, उधार का होगा।

किसी और से जाना गया, पाया गया उत्तर तो नकल है। उसमें असल का अमृत नहीं होता। इसलिये हमें सुनकर नहीं मानना है। समझ कर मानना है। केवल सुनकर ही नहीं, बल्कि सुने हुए को समझ में बदलने के बाद मानना है। मैं जो सुनकर मानता हूँ उसमें मेरा अपना कोई अनुभव नहीं होता। इसलिये मेरे लिये वह अधूरा होता है, जो सुनकर माना जाता है। लेकिन सुनना तो होगा। मगर सुनकर बिना अनुभव किये उसे स्वीकार नहीं करना है। सुनने के बाद उसे अपनी समझ का विषय बनाकर मानना है।

समझ हमारी अपनी होगी। समझ में अंतर के प्राण बोलेंगे। समझ मुझे मेरी अपनी दुनिया में ले जायेगी। समझ मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर देगी। इसलिये मेरे बारे में सवाल मुझसे

स्वयं मुझे ही पूछना है।

मैं दुनिया के बारे में, पदार्थों के बारे में प्रश्न करता हूँ, सत्ता और सौंदर्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता हूँ, मकान और दुकान के संदर्भ में चर्चा-विचारणा करता हूँ, परिवार और संसार के संबंध में जानता हूँ, सोचता हूँ और उनका उत्तर पाने के लिये रात-दिन पसीना बहाता हूँ, दौड़ भाग करता हूँ, पर मैं स्वयं के बारे में एक पल भी गहराई से विचार नहीं करता।

'मेरे' के लिये मैं भागता हूँ, पर 'मैं' के लिये पल भर की फुर्सत नहीं है। मैं और मेरे में अंतर है। लोग मेरे हो सकते हैं, पदार्थ मेरे हो सकते हैं। साधन तो हो सकते हैं, पर वे 'मैं' नहीं हो सकते हैं।

'मेरे' में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है। षष्ठी विभक्ति का प्रयोग सदैव संबंध में होता है। संबंध का अर्थ है जुड़ना। जुड़ना शब्द यह सिद्ध करता है कि पहले जुड़ा हुआ नहीं था, अब जुड़ा है। और जो आज जुड़ा है वह निश्चित ही कल अलग होगा।

जिसे मैं मेरा कहता हूँ, वह आरोपित है। जिस व्यक्ति को मैं मेरा कहता हूँ, उससे मेरा जुड़ाव हुआ है। जुड़ाव से पहले वह मेरा नहीं था। वह जुड़ाव पाँच वर्ष का भी हो सकता है और पचास वर्षों का भी हो सकता है, जिंदगी भर का भी हो सकता है, पर शाश्वत नहीं हो सकता, समय कम ज्यादा हो सकता है। पर अनन्तकाल का नहीं हो सकता।

मकान से जुड़ने का भी प्रारम्भ है। मैं मकान को मेरा इसलिये मानता हूँ क्योंकि उसी मकान में मेरा जन्म हुआ है। मैं उसी आंगन में बड़ा हुआ हूँ, इसमें मेरा बचपन गुजरा है। पर जन्म से पहले तो मेरा नहीं था। उससे पहले मैं कहीं और था और किसी और मकान को अपना मकान मानता था, कहता था।

घड़ी को मैं अपना कहता हूँ, क्योंकि मैंने इसे खरीदा है। पैसे चुकाये हैं, तब यह मेरी हुई है। अगर यह घड़ी टूट जाये, चोरी हो जाये तो मैं रोता हूँ, दर्द का अनुभव करता हूँ।

जब से मैंने इसे खरीदा है। तब से यह मेरी हुई है। उससे पहले वह दुकान में थी। खरीदने से पहले यदि टूट जाती, खो जाती तो दर्द का अनुभव नहीं होता, क्योंकि वह मेरी नहीं थी। तब उस घड़ी के साथ 'मेरेपन' का जुड़ाव नहीं था। पर ज्यों ही पैसे दिये। घड़ी का अधिकार प्राप्त किया, उसके बाद यदि खराब हो जाये, बंद हो जाये तो मैं परेशान हो उठता हूँ। इसका अर्थ यह हुआ कि दर्द घड़ी का नहीं उसके प्रति आसक्ति का है, ममता का है। मूर्च्छा भरे भावों का है। घड़ी दुकान में थी, तब भी वैसी ही थी और खरीदने के बाद भी वैसी ही है। पर अंतर की आसक्ति से फर्क आ गया। क्योंकि उससे मेरा मन जुड़ गया है। विचार जुड़ गये हैं। जिससे भी जुड़ाव होता है, एक दिन ऐसा आता है जब वह वस्तु अलग हो जाती है,

जुड़ाव अलगाव में परिवर्तित हो जाता है। जिससे भी सम्बन्ध जुड़ता है, उसका अंत अवश्यमेव होता है। कभी न कभी उसकी जुदाई का दर्द झेलना ही होता है।

पर मैं मुझसे सदा से जुड़ा हूँ, जिसका कोई प्रारम्भिक बिन्दु नहीं है। हो भी नहीं सकता, क्योंकि मैं मुझसे अलग कभी नहीं था, न हूँ और न कभी हो सकता हूँ। संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो मुझे मुझसे अलग कर सके। इस अर्थ में मैं ही मेरा हूँ, क्योंकि मैं मुझमें शाश्वत हूँ। पर मैं इस भ्रम में जीता हूँ कि यह घर मेरा है। यह परिवार मेरा है, सगे-संबंधी मेरे हैं, पर सच तो यह है कि यह सब कुछ आरोपित है। इस जन्म में ये मेरे साथी हैं। अगले जीवन में कोई और होंगे। एक मैं ही मेरा सदा का साथी हूँ, जो अलग नहीं हो सकता। बिछुड़ नहीं सकता।

अध्यात्म का प्रारम्भ ही मैं को जानने से होता है। परमात्मा महावीर इस जगत् के सबसे बड़े वैज्ञानिक हैं। उन्होंने देशना का प्रारम्भ प्रश्न से किया। प्रश्न से ही धर्म की शुरुआत होती है। प्रश्न नहीं हो तो उत्तर का कोई मूल्य नहीं होता। ठीक वैसे ही, जैसे प्यास के बिना पानी का कोई मूल्य नहीं होता। परमात्मा की देशना, पानी पिलाने की देशना बाद में है। प्यास जगाने की देशना पहले है, क्योंकि प्यास जग गयी तो पानी तो आदमी स्वयं खोज लेगा।

जिसे अपनी प्यास का प्यास के रूप में अनुभव हो, वह कभी भी पानी का मूल्य नहीं पूछा करता। वह तो पानी पीने के लिये दौड़ पड़ता है। उसे हर हाल में पानी चाहिए। जिसकी प्यास जग गयी हो तो वह बैठता नहीं, सोता नहीं, वह दौड़ता है पानी की तलाश में, पानी से भरे घड़े की तलाश में, उसे फिर पानी के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आता।

एक आदमी एक गाँव से चला है। दोपहर का खाना खाकर चला है। दाल-रोटी खाकर चला है। ज्येष्ठ-वैशाख का महीना है। पगडण्डी का रास्ता है। जंगल से होकर गुजरता है रास्ता। दो घण्टे बाद उसे प्यास लगी है। वह पानी की बॉटल साथ में लेना भूल गया है। उसके होंठ ही नहीं, उसका हर अंग पानी के लिये तड़प रहा है। वह तेजी से चल रहा है, दौड़ रहा है। रास्ते में कोई प्याऊ नहीं है। कोई गाँव भी नहीं है। कुआँ मिला है, पर उसके पास रस्सी नहीं है। पल-पल उसकी प्यास बढ़ती जा रही है। वह जैसे-तैसे पहुँचा है अपने गाँव किनारे।

तभी उसे दोस्त मिलता है, कहता है- "भैया! रुको, मुझे तुमसे बात करनी है, शेयर बाजार का हालचाल जानना है। थोड़ी चर्चा करनी है जो तुम मुझे पाँच दिन से पूछ रहे थे। उस प्रश्न का जवाब देना है।"

वह कहता है- "भैया! तुम्हें बात करनी है तो बाद में करना, अभी मुझे कोई बात नहीं करनी।" यदि वह बात करने बैठ जाये तो समझ लेना कि अभी तक गहरी प्यास जगी नहीं है। अभी तक प्यास की अकुलाहट उसके रोम-रोम से उठी नहीं है।

वह व्यक्ति थोड़ा और आगे बढ़ता है। उसे एक दूसरा दोस्त मिलता है। वह कहता है- "दोस्त! आओ, बहुत दिनों से हम दोनों ने ताश नहीं खेली है। आज मैं तुम्हारे साथ खेलने के लिये उत्सुक हूँ।"

वह दोस्त प्यासा है। रोम-रोम से प्यास जगी है। वह पानी ढूँढ रहा है। नजरें पानी पर टिकी हैं कि पानी मिल जाये और मैं पीकर तृप्ति का अनुभव करूँ।

अब वह बोल भी नहीं रहा है, क्योंकि प्रतिपल प्यास घनी होती जा रही है। केवल इशारे से काम चलाता है, मना करता है। अब उसे मात्र पानी नज़र आ रहा है; और कुछ भी नहीं।

सामने होने पर नज़र आना बड़ी बात नहीं है। सामने नहीं होने पर भी नज़र आना बहुत बड़ी बात है।

पहले उसने बोलकर मना किया था, इस बार मात्र इनकार का इशारा करता है कि नहीं खेलना मुझे ताश, मैं कोई बात नहीं करना चाहता।

आगे उसे एक दोस्त और मिला है। वह कहता है- "दोस्त! आओ! आज थियेटर में बहुत अच्छी फिल्म लगी है, चलो! मैं तुम्हें ले चलता हूँ टिकट भी खरीद ली है।" पर अब तो वह इशारा भी नहीं करता है। ऐसे आगे बढ़ जाता है, जैसे उसने उसे देखा ही न हो। उसकी बात ऐसे अनसुनी कर देता है जैसे उसने सुनी ही न हो।

प्यास आदमी को कुएं की ओर ले जाती है। परमात्मा की देशना पानी पिलाने की नहीं, प्यास जगाने की देशना है। प्यास जग गयी तो पानी आदमी स्वयं पी लेगा।

आज प्रवचन उल्टे चल रहे हैं। प्रवचन पानी पिलाने के ज्यादा हैं और प्यास जगाने के कम। और जब प्यास नहीं होती, तब कितना भी पानी बहाते जाओ। उसका कोई मोल नहीं होता। कोई झेलने वाला नहीं होता।

यदि आप सत्संग में चले हैं, बीच में कोई मित्र मिला है और आप उससे गप्पे मारने बैठ गये हैं तो समझना कि अभी तक पूरी प्यास नहीं जगी, प्यास जगी होती तो पानी को पाये बिना चैन नहीं आता।

प्यास लग जाती है तो फिर समझाने की जरूरत नहीं पड़ती। रास्ता भी नहीं दिखाना पड़ता। पानी का ठिकाना भी नहीं बताना पड़ता। मैं प्यासा हूँ पर मुझे प्यास का ज्ञान नहीं है, अनुभव नहीं है। जब तक हम स्वयं प्यास के अनुभव से नहीं गुजरते, प्यास को समझ नहीं पाते। वस्तुतः अज्ञान ही सारी पीड़ा की जड़ है। ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव है। पर मैं तो परभावों में जिया करता हूँ।

मैं अहंकार से भर जाता हूँ कि मैंने एम.ए. की है या डॉक्टरेट की है। जो ज्ञान को समझ

लेता है, वह अहंकार नहीं करता। उसने जितना पढ़ा उसका अहंकार नहीं करता, बल्कि जितना नहीं पढ़ा, उसके कारण दर्द का, पीड़ा का अनुभव करता है।

ज्ञान मेरा स्वभाव है। इसके लिये समझ की जरूरत होती है, उस समय के लिये स्वयं से सवाल करना जरूरी है।

पर यहाँ मुश्किल यह है कि हमारे पास उत्तर तो है, पर प्रश्न नहीं है। उत्तर भी स्वयं के बारे में नहीं, दूसरों के बारे में हैं, मैं दूसरों के बारे में जानता हूँ, उनके लिये सवाल तो है, पर स्वयं के लिये कोई सवाल नहीं है। जिसको मैं जान सकता हूँ, उसके लिये कोई प्रश्न नहीं है। मैं औरों को जानने के लिये प्रश्न करता हूँ, पर सच तो यह है कि कितने ही जन्म बिता दिये जायें तो भी किसी के स्वभाव को पूरी तरह नहीं जाना जा सकता।

मैं किसी क्षणिक घटना के आधार पर किसी के स्वभाव को जानता हूँ, स्वभाव के किसी एक पक्ष को जानता हूँ, स्वभाव का एक अंश ही जानता हूँ, और उसी के आधार पर उनके संपूर्ण जीवन का अनुमान, उनके स्वभाव का अनुमान लगा बैठता हूँ।

जैसे- कोई गुरु अपने शिष्य पर क्रोधित हो रहे हों और उसी समय किसी श्रावक का आना हुआ। उसने महाराज का क्रोध देखा, लाल-लाल आँखें देखीं तो मन में निश्चय कर लिया कि महाराज बहुत क्रोधी हैं। उनसे थोड़ा बचकर रहना होगा।

यह क्षणिक घटना के आधार पर आये स्वभाव का परिवर्तन है और उसे हम स्थायी स्वभाव मान लेते हैं। हम उस घटना के भीतर में तो जा नहीं पाते कि क्रोध आया तो क्यों आया? जरूरी नहीं कि वह क्रोध असली ही हो, बनावटी भी हो सकता है और अधिकतर बनावटी ही होता है। बनावटी भी इसलिये, ताकि शिष्य को स्वयं की गलती का अहसास हो सके। गलती के पैमाने पर क्रोध की सीमा भी घटती-बढ़ती है। यदि बड़ी गलती है तो क्रोध की मात्रा ज्यादा होगी। शब्दों में गर्माहट और चेहरे की तमतमाहट अधिक होगी। यदि गलती छोटी है तो उसके अनुरूप क्रोध होगा।

तो हम किसी के भी स्वभाव को पूरा नहीं जान सकते। हम जान सकते हैं अपने स्वभाव को। अपने जीवन को, अपनी गतिविधियों को।

परमात्मा महावीर ने आचारांग सूत्र के प्रारम्भ में ही फरमाया है कि इस दुनिया में लाखों लोग ऐसे हैं, करोड़ो लोग ऐसे हैं जो स्वयं को नहीं जानते हैं। नहीं जानते कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मेरा लक्ष्य क्या है और मुझे कहाँ जाना है?

यह प्रश्न मेरे हृदय का बन जाना चाहिये। यदि यह प्रश्न मेरे अंतर का बनता है तो उत्तर कहीं बाहर से नहीं मिलना है। वह भीतर में ही है। प्रश्न होगा तो उत्तर स्वतः मिल जायेगा। उसमें निमित्त शास्त्र भी हो सकते हैं। गुरु महाराज भी हो सकते हैं, स्वाध्याय भी उसका

निमित्त हो सकता है। परन्तु प्रश्न भीतर का होना चाहिये। प्राणों से उठा हुआ होना चाहिये। यदि प्रश्न हृदय का नहीं है तो उत्तर कभी भी नहीं मिल सकता।

ठीक वैसे ही, जैसे कि एक गोपाल गायों को चराता है। वह उनको फटकार कर, पुचकार कर, पकड़कर, डण्डे के इशारे से नदी के किनारे पहुँचा तो सकता है, पर पानी पीना या न पीना गायों के हाथ में है। वह गोपाल किसी को भी जबरदस्ती पानी नहीं पिला सकता। उसे बस पानी तक पहुँचाने का ही अधिकार है। पानी पिलाने का नहीं। यह तो गाय की मर्जी पर निर्भर है कि वह पी भी ले और नहीं भी पीये।

ठीक इसी प्रकार **गुरु महाराज और शास्त्र आपको रास्ता बता सकते हैं, पर चलना तो आपको ही होता है। वे प्रश्न को समाहित कर सकते हैं; पर प्रश्न तो होना चाहिये। वह प्रश्न भी आत्मा का होना चाहिये।** जिज्ञासा से उठा हुआ होना चाहिये। मात्र टाइम पास करने के लिये नहीं हो।

शाम को आप प्रतिदिन एक प्रयोग करें। बैठ जायें एक आसन में, बंद आँखें, शांत वातावरण। बाहर से भी शांत और भीतर से भी शांत, मन में कोई विचार न हो। कोई तनाव नहीं हो।

और आप अपने आप से पूछें- मैं कौन हूँ?

बाहर के सुने सुनाये, रटे-रटाये जवाबों को भी भीतर आने का रास्ता न दें। अपने आप से एक ही प्रश्न करें। गहराई से करें। भीतर में डूबकर करें।

थोड़ी देर बाद स्वतः स्वर गूंजने लगेंगे- मैं आत्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ। मैं परमात्मा हूँ। और आपके जीवन में एक मात्र उत्तर आयेगा- अप्पा सो परमप्पा।

प्रेरणा एवं क्रियान्विति

परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा वर्ष-2014 में ऐतिहासिक कोटा चातुर्मास के दौरान साधर्मी बन्धुओं को रात्रिभोजन के त्याग एवं सामूहिक भोज रात्रि में आयोजित न करने की प्रेरणा दी गई थी। उसकी क्रियान्वित में बसंतविहार कोटा निवासी श्री रमेशकुमार जैन रानीपुरा वाले ने अपनी सुपुत्री दीपांशी के विवाह 04 दिसम्बर 2015 संग श्री मुदित जी सुपुत्र डॉ. धर्मचन्दजी जैन जोधपुर (अलीगढ़-रामपुरा वाले) का सामूहिक भोज दिन में ही आयोजित किया, जिसकी समाज के सभी साधर्मी बन्धुओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं सराहा। आगे भी इसी प्रकार से दिन में सामूहिक भोज रखने की भावनाएँ व्यक्त की गईं। आशा है अधिक से अधिक साधर्मी बन्धु आचार्यश्रीकी प्रेरणा की क्रियान्विति में दिन में सामूहिक भोज रख कर धर्म का पालन करेंगे, ऐसी मंगल कामनाओं के साथ। *-महावीर, गौतमप्रसाद जैन-कोटा*

शोधालेख

उमास्वाति और उनका तत्त्वार्थसूत्र

डॉ. सागरमल जैन

तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता का नाम श्वेताम्बर परम्परा में वाचक उमास्वाति के रूप में प्रसिद्ध है। दिगम्बर परम्परा में इन्हें उमास्वामी अथवा कहीं गृध्रपिच्छ भी कहा गया है। वाचक उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र का स्वाध्याय श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्पराओं में निष्ठा के साथ किया जाता है। कुछ सूत्रों को छोड़कर दोनों परम्पराओं में सूत्रपाठ समान है। तत्त्वार्थसूत्र के साथ प्रशमरति-प्रकरण को भी उमास्वाति की रचना माना गया है। प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सागरमलजी जैन ने उमास्वाति के जन्म-स्थान, दीक्षा-स्थल, काल आदि के सम्बन्ध में कुछ चिन्तन किया है, जो प्रचलित मान्यताओं से मेल नहीं खाता है, तथापि शोधात्मक दृष्टि को महत्त्व देते हुए इसका प्रकाशन किया जा रहा है। 'तत्त्वार्थसूत्र और उसकी परम्परा' शीर्षक से डॉ. सागरमलजी की पुस्तक भी प्रकाशित है। पाठक अपनी जिज्ञासाओं का शमन डॉक्टर साहब से सीधे कर सकते हैं। पता लेख के अन्त में दिया गया है।**-सम्पादक**

उमास्वाति का काल एवं सम्प्रदाय

आर्य शिव को उमास्वाति का प्रगुरु मानने पर उनका काल तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से चौथी शताब्दी के पूर्वार्ध तक माना जा सकता है। चौथी शताब्दी के पूर्वार्ध तक के जो भी जैन शिलालेख उपलब्ध हैं, उनमें कहीं भी श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय ऐसा उल्लेख नहीं होता। वस्त्र, पात्र आदि के उपयोग को लेकर विक्रम संवत् की तीसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से विवाद प्रारम्भ हो गया था, किन्तु स्पष्ट रूप से श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय परम्पराओं के भेद स्थापित नहीं हुए थे। वि.सं. की छठी शताब्दी के पूर्वार्ध के पश्चात् अर्थात् ई. सन् 465 से 490 के अभिलेखों में सर्वप्रथम श्वेतपट्टमहाश्रमणसंघ (श्वेताम्बर), निर्ग्रंथमहाश्रमणसंघ (दिगम्बर) और यापनीयसंघ के उल्लेख मिलते हैं। प्रो. मधुसुदन ढाँकी ने उमास्वाति का काल लगभग ईसा की चतुर्थ शती निर्धारित किया है। यह उचित ही है। चाहे हम उमास्वाति का काल प्रथम से चतुर्थ शती के बीच कुछ भी मानें, किन्तु इतना निश्चित है कि वे संघ भेद के पूर्व के हैं। यदि हम उमास्वाति के प्रगुरु शिव का समीकरण आर्य शिव, जिनका उल्लेख कल्पसूत्र स्थविरावली में भी है और जो उत्तर भारत में वस्त्र-पात्र सम्बन्धी विवाद के जनक थे, से करते हैं तो समस्या का समाधान मिलने में

सुविधा होती है। आर्य शिव वीर निर्वाण सं. 601 अर्थात् विक्रम की तीसरी शताब्दी के पूर्वार्ध में उपस्थित थे। इस आधार पर उमास्वाति तीसरी के उत्तरार्ध और चौथी के पूर्वार्ध में हुए होंगे, ऐसा माना जा सकता है। यह भी संभव है कि इस परम्परा भेद में भी वे कौडिण्य और कोट्टवीर के साथ संघ से अलग न होकर मूलधारा से जुड़े रहे हों। फलतः उनकी विचारधारा में यापनीय और श्वेताम्बर दोनों ही परम्पराओं की मान्यताओं की उपस्थिति देखी जाती है। वस्त्र-पात्र को लेकर वे श्वेताम्बरों के साथ और अन्य मान्यताओं के संदर्भ में यापनीयों के निकट रहे हैं।

इस समस्त चर्चा से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उमास्वाति का काल वि.सं. की तीसरी और चौथी शताब्दी के मध्य है और इस काल तक वस्त्र-पात्र संबंधी विवादों के बावजूद भी श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीयों का अलग-अलग साम्प्रदायिक अस्तित्व नहीं बन पाया था। स्पष्ट सम्प्रदाय भेद, सैद्धान्तिक मान्यताओं का निर्धारण और श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय जैसे नामकरण चौथी शताब्दी के बाद ही अस्तित्व में आये हैं। उमास्वाति निश्चित ही स्पष्ट संप्रदाय भेद और साम्प्रदायिक मान्यताओं के निर्धारण के पूर्व के आचार्य हैं। वे उस संक्रमण काल में हुए हैं, जब श्वेताम्बर, दिगम्बर और यापनीय संप्रदाय और उनकी साम्प्रदायिक मान्यताएँ स्थिर हो रही थीं।

वे उस अर्थ में श्वेताम्बर और दिगम्बर नहीं है, जैसे अर्थ में आज हम इन शब्दों का अर्थ लेते हैं। वे यापनीय भी नहीं है, क्योंकि यापनीय सम्प्रदाय का सर्वप्रथम अभिलेखीय प्रमाण भी विक्रम की छठीं शताब्दी के पूर्वार्ध और ईसा की पाँचवीं शती के उत्तरार्ध(ई. सन् 475) का मिलता है। अतः वे श्वेताम्बर और यापनीयों की पूर्वज उत्तर भारत की निर्ग्रंथ धारा की कोटिकगण की उच्चनागरी शाखा में हुए हैं। उनके सम्बन्ध में इतना मानना ही पर्याप्त है। उन्हें श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय सम्प्रदाय से जोड़ना उचित नहीं है।

उमास्वाति का जन्म-स्थल एवं कार्यक्षेत्र

तत्त्वार्थसूत्र के प्रणेता उमास्वाति ने तत्त्वार्थ-भाष्य की अंतिम प्रशस्ति में अपने को उच्चैर्नगर शाखा का कहा है तथा अपना जन्म-स्थान न्यग्रोधिका बताया है। अतः उच्चैर्नगर शाखा के उत्पत्ति-स्थल एवं उमास्वाति के जन्म-स्थल का अभिज्ञान (पहचान) करना आवश्यक है।

उमास्वाति की उच्चैर्नगर शाखा का उत्पत्ति स्थल ऊचेहरा (म.प्र.)

यहाँ हम उच्चैर्नगर शाखा के संदर्भ में ही चर्चा करेंगे। विचारणीय प्रश्न यह है कि वह उच्चैर्नगर कहाँ स्थित था, जिससे यह शाखा निकली थी। मुनि श्री कल्याणविजयजी और हीरालालजी कापड़िया ने कनिंघम को आधार बनाते हुए, इस उच्चैर्नगर शाखा का सम्बन्ध

वर्तमान बुलन्दशहर पूर्वनाम 'वरण' से जोड़ने का प्रयत्न किया है। पं. सुखलालजी ने भी तत्त्वार्थ की भूमिका में इसी का अनुसरण किया है।

किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि ऊँचानगर का सम्बन्ध बुलन्दशहर से तभी जोड़ा जा सकता है जब उसका अस्तित्व ई. पू. प्रथम शताब्दी के लगभग रहा हो। मात्र यही नहीं उस काल में वह ऊँचानगर कहलाता भी हो। इस नगर के प्राचीन 'बरण' नाम का उल्लेख तो है, किन्तु यह भी 9-10 वीं शताब्दी से पूर्व का ज्ञात नहीं होता है। बारण (बरण) नाम से कब इसका नाम बुलन्दशहर हुआ, इसके सम्बन्ध में सभी ने अपनी असमर्थता व्यक्त की है। यह हिन्दुओं द्वारा ऊँचागाँव या ऊँचानगर कहा जाता था, मुझे तो यह भी उनकी कल्पना सी प्रतीत होती है। इस सम्बन्ध में वे कोई भी प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। 'बरन' नाम का उल्लेख भी मुस्लिम इतिहासकारों ने दसवीं सदी के बाद ही किया है। इतिहासकारों ने इस ऊँचागाँव किले का सम्बन्ध तोमर वंश के राजा अहिवरण से जोड़ा है, अतः इसकी अवस्थिति ईसा के पाँचवीं-छठी शती से पूर्व तो सिद्ध ही नहीं होती है। यहाँ से मिले सिक्कों पर 'गोवितसबाराणये' ऐसा उल्लेख है।

यह सत्य है कि उच्चैर्नगर शाखा का सम्बन्ध किसी ऊँचानगर से ही हो सकता है। इस सन्दर्भ में हमने इससे मिलते-जुलते नामों की खोज प्रारम्भ की। हमें ऊँचाहार, ऊँचडोह, ऊँचोबस्ती, ऊँचौलिया, ऊँचाना, ऊँचेहरा आदि कुछ नाम प्राप्त हुए। हमें इन नामों में ऊँचाहार (उ.प्र.) और ऊँचेहरा (म.प्र.) ये दो नाम अधिक निकट प्रतीत हुए। ऊँचाहार की सम्भावना भी इसलिए हमें उचित नहीं लगी, क्योंकि उसकी प्राचीनता के संदर्भ में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। अतः हमने ऊँचेहरा को ही अपनी गवेषणा का विषय बनाना उचित समझा। ऊँचेहरा मध्यप्रदेश के सतना जिले में सतना रेडियो स्टेशन से 11 कि.मी. दक्षिण की ओर स्थित है। ऊँचेहरा से 7 कि.मी. उत्तर-पूर्व की ओर भरहत का प्रसिद्ध स्तूप स्थित है, इससे इस स्थान की प्राचीनता का भी पता लग जाता है। वर्तमान ऊँचेहरा से लगभग 2 कि.मी. की दूरी पर पहाड़ के पठार पर यह प्राचीन नगर स्थित था, इसी से इसका ऊँचानगर नामकरण भी सार्थक सिद्ध होता है। वर्तमान में यह वीरान स्थल 'खोह' कहा जाता है। वहाँ के नगर निवासियों ने मुझे यह भी बताया कि पहले इसे 'उच्चकल्पनगरो' कहा जाता था और यहाँ से बहुत सी पुरातात्त्विक सामग्री भी निकली थी। यहाँ से गुप्तकाल अर्थात् ईसा की पाँचवीं शती के राजाओं के कई दानपात्र प्राप्त हुए हैं। इन ताम्रदानपत्रों में उच्चकल्प (उच्छकल्प) का स्पष्ट उल्लेख है, ये दान पात्र गुप्त सं. 156 से गुप्त सं. 201 के बीच के हैं। (विस्तृत विवरण के लिये देखें ऐतिहासिक स्थानावली-विजयेन्द्र कुमार माथुर, पृ. 260-261)। इससे इस नगर की गुप्तकाल में तो अवस्थिति स्पष्ट हो जाती है। पुनः

जिस प्रकार विदिशा के समीप सांची का स्तूप निर्मित हुआ है उसी प्रकार इस उच्चैनगर (ऊँचहरा) के समीप भरहुत का स्तूप निर्मित हुआ था और यह स्तूप ई.पू. दूसरी या प्रथम शती का है। इतिहासकारों ने इसे शुंग काल का माना है। भरहुत के स्तूप के पूर्वी तोरण पर 'वाच्छिपुत' धनभूति का उल्लेख है। पुनः अभिलेखों में 'सुगनं रजे' ऐसा उल्लेख होने से शुंगकाल में इसका होना सुनिश्चित है। अतः उच्चैर्नगर शाखा का स्थापना काल (लगभग ई.पू. प्रथम शती) और इस नगर का सत्ताकाल समान ही है। अतः इसे उच्चैर्नगर शाखा का उत्पत्ति स्थल मानने में काल दृष्टि से कोई बाधा नहीं है। ऊँचेहरा (उच्चकल्पनगर) एक प्राचीन नगर था, इसमें अब कोई संदेह नहीं रह जाता है। यह नगर वैशाली या पाटलीपुत्र से वाराणसी होकर भरुकच्छ को जाने वाले अथवा श्रावस्ती से कौशाम्बी होकर विदिशा, उज्जयिनी और भरुकच्छ जाने वाले मार्ग में स्थित है। इसी प्रकार वैशाली-पाटलिपुत्र से पद्मावती (पँवाया), गोपाद्रि (ग्वालियर) होते हुए मथुरा जाने वाले मार्ग पर भी इसकी अवस्थिति थी। उस समय पाटलिपुत्र से गंगा और यमुना से दक्षिण से होकर जाने वाला मार्ग ही अधिक प्रचलित था, क्योंकि इसमें बड़ी नदियाँ नहीं आती थीं, मार्ग पहाड़ी होने से कीचड़ आदि भी अधिक नहीं होता था। जैन साधु प्रायः यही मार्ग अपनाते थे।

प्राचीन यात्रा मार्गों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि ऊँचानगर की अवस्थिति एक प्रमुख केन्द्र के रूप में थी। यहाँ से कौशाम्बी, प्रयाग, वाराणसी आदि के मार्ग थे। पाटलिपुत्र को गंगा-यमुना आदि बड़ी नदियों को बिना पार किये जो प्राचीन स्थल मार्ग था, उसके केन्द्र-नगर के रूप में उच्चकल्प नगर (ऊँचानगर) की स्थिति सिद्ध होती है। यह एक ऐसा मार्ग था, जिसमें कहीं भी कोई बड़ी नदी नहीं आती थी। अतः सार्थ निरापद समझकर इसे ही अपनाते थे। प्राचीनकाल से आज तक यह नगर धातुओं के मिश्रण के बर्तनों हेतु प्रसिद्ध रहा है। आज भी वहाँ कांसे के बर्तन सर्वाधिक मात्रा में बनते हैं। ऊँचेहरा का उच्चैर शब्द से जो ध्वनि-साम्य है वह भी हमें इसी निष्कर्ष के लिए बाध्य करता है कि उच्चैर्नगर शाखा की उत्पत्ति इसी क्षेत्र से हुई थी।

उमास्वाति का जन्म स्थान नागोद (म.प्र.)

उमास्वाति ने अपना जन्म स्थान न्यग्रोधिका बताया है। इस सम्बन्ध में भी विद्वानों ने अनेक प्रकार के अनुमान किये हैं। चूंकि उमास्वाति ने तत्त्वार्थभाष्य की रचना कुसुमपुर (पटना) में की थी। अतः अधिकांश लोगों ने उमास्वाति के जन्मस्थल की पहचान उसी क्षेत्र में करने का प्रयास किया है। न्यग्रोध को वट भी कहा जाता है। इस आधार पर पहाड़पुर के निकट बटगोहली, जहाँ से पंचस्तूपान्वय का एक ताम्र-लेख मिला है, से भी इसका समीकरण करने का प्रयास किया है। मेरी दृष्टि में ये धारणाएँ समुचित नहीं हैं। उच्चैर्नगर

शाखा, ऊँचेहरा से सम्बन्धित थी, उसमें उमास्वाति के दीक्षित होने का अर्थ यही है कि वे उसके उत्पत्ति स्थल के निकट ही कहीं जन्मे होंगे। मथुरा जहाँ उच्चनगरी शाखा के अधिकतम उल्लेख प्राप्त हुए हैं तथा पटना जहाँ उन्होंने तत्त्वार्थभाष्य की रचना की, दोनों ही उच्चैर्नगर या ऊँचेहरा से लगभग समान दूरी पर अवस्थित रहे हैं। वहाँ से दोनों लगभग 350 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित हैं और किसी जैन साधु के द्वारा यहाँ से एक माह की पदयात्रा कर दोनों स्थलों पर आसानी से पहुँचा जा सकता था। स्वयं उमास्वाति ने ही लिखा है कि विहार (पदयात्रा) करते हुए कुसुमपुर (पटना) पहुँचे थे, (विहरतापुरवरे कुसुमनाम्नि)। इससे यही लगता है कि न्यग्रोध (नागोद), कुसुमपुर (पटना) के बहुत समीप नहीं था। डॉ. हीरालाल जैन ने संघ-विभाजन स्थल रहवीरपुर की पहचान दक्षिण में महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के राहरी ग्राम से और उमास्वाति के जन्मस्थल की पहचान उसी के समीप 'निधेज' से की है, किन्तु यह ठीक नहीं है। प्रथम तो व्याकरण की दृष्टि से न्यग्रोध का प्राकृत रूप नागोद होता है, निधोज नहीं। दूसरे उमास्वाति जिस उच्चैर्नगर शाखा के थे, वह शाखा उत्तर भारत की थी, अतः उनका सम्बन्ध उत्तर भारत से ही है। अतः उनका जन्म स्थल भी उत्तर भारत में ही होगा। उच्चानगरी शाखा के उत्पत्ति स्थल ऊँचेहरा से लगभग 30 कि.मी. पश्चिम की ओर 'नागोद' नाम का कस्बा आज भी है। आजादी के पूर्व यह एक स्वतन्त्र राज्य था और ऊँचेहरा इसी राज्य के अधीन आता था। नागोद के आस-पास भी जो प्राचीन सामग्री मिली है उससे यही सिद्ध होता है कि यह भी एक प्राचीन नगर था। प्रो. के.डी.बाजपेयी ने नागोद से 24 कि.मी. दूर नचना के पुरातात्त्विक महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला है। नागोद की अवस्थिति पन्ना (म.प्र.) नचना और ऊँचेहरा के मध्य है। इन क्षेत्रों में शुंगकाल से लेकर 9वीं-10वीं शती तक की पुरातात्त्विक सामग्री मिलती है, अतः इसकी प्राचीनता में संदेह नहीं किया जा सकता। 'नागोद' न्यग्रोध का ही प्राकृत रूप है, अतः सम्भावना यही है कि उमास्वाति का जन्म-स्थल यही नागोद था और जिस उच्चनगरी शाखा में वे दीक्षित हुए थे, वह भी उसी के समीप स्थित ऊँचेहरा (उच्चकल्प नगर) से उत्पन्न हुई थी। तत्त्वार्थभाष्य की प्रशस्ति में उमास्वाति की माता को वात्सी कहा गया है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि नागोद और ऊँचेहरा दोनों ही प्राचीन वत्स देश के अधीन ही थे। भरहुत और इस क्षेत्र के आसपास जो कला का विकास देखा जाता है, वह कौशाम्बी अर्थात् वत्सदेश के राजाओं के द्वारा ही किया गया था। ऊँचेहरा वत्सदेश के दक्षिण का एक प्रसिद्ध नगर था। भरहुत के स्तूप के निर्माण में भी वात्सी गोत्र के लोगों का महत्त्वपूर्ण योगदान था, ऐसा वहाँ से प्राप्त अभिलेखों से प्रमाणित होता है। भरहुत के स्तूप के पूर्वी तोरणद्वार पर वाच्छीपुत्त धनभूति का उल्लेख है। अतः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि

उमास्वाति का जन्मस्थल नागोद मध्यप्रदेश (न्यग्रोध) और उनकी उच्चैर्नगर शाखा का उत्पत्ति स्थल ऊँचेहरा (म.प्र.) ही है तथा उन्होंने वर्तमान पटना (कुसुमपुर) में अपना तत्त्वार्थभाष्य लिखा था अतः वे उत्तर भारत के निर्ग्रंथ संघ में हुए हैं।

तत्त्वार्थसूत्र के संदर्भ में विस्तृत अध्ययन के पश्चात् मैं जिन निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ, वे निम्न हैं-

1. जहाँ तक ग्रन्थ के नाम का प्रश्न है चाहे हम उसे तत्त्वार्थ सूत्र मानें या तत्त्वार्थाधिगमसूत्र मानें, इससे उनकी परम्परा के निर्धारण में कोई सहायता नहीं मिलती है। यदि पं. फूलचन्द जी शास्त्री के अनुसार एक बार यह भी मान लिया जाय कि तत्त्वार्थाधिगम-सूत्र यह नाम भाष्य का है मूलमूत्र का नहीं, तो भी इससे उसके स्वरूप और परम्परा में कोई अन्तर नहीं आता है। वैसे तो तत्त्वार्थसूत्र के दोनों परम्परा में, ये दोनों और दूसरे अनेक नाम प्रचलित रहे हैं। अतः ग्रन्थ के नाम पर विवाद सार्थक नहीं है।
2. जहाँ तक तत्त्वार्थ के कर्ता के नाम का प्रश्न है वह उमास्वाति ही हैं। 'गृध्रपिच्छ' या 'वाचक' उमास्वाति के विशेषण हो सकते हैं, किन्तु उनके नाम नहीं। उनके नाम के साथ गृध्रपिच्छ विशेषण होने से न तो वे दिगम्बर या यापनीय सिद्ध होते हैं और न वाचक विशेषण होने से श्वेताम्बर सिद्ध होते हैं। फिर भी विद्वानों ने ऐसी अवधारणा बनाई है। मेरी दृष्टि में ये दोनों ही विशेषण उत्तर भारत की अविभक्त उस निर्ग्रंथधारा में दिये जाना संभव है, जिससे एक ओर यापनीय परम्परा का और दूसरी ओर श्वेताम्बर परम्परा का विकास हुआ। वाचक विशेषण के प्रमाण तो नन्दीसूत्र स्थविरावली में मिलते ही हैं। क्योंकि इस कालतक उत्तर भारत के मुनि ऊनी रजोहरण के स्थान पर पिच्छि (प्रतिलेखन हेतु) रखते थे, अतः गृध्रपिच्छ विशेषण से भी उन्हें उत्तर भारत की निर्ग्रंथधारा का मानने से कोई बाधा नहीं आती है।
3. काल की दृष्टि से उमास्वाति ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी के पश्चात् और चतुर्थ शताब्दी के पूर्व हुए हैं। प्रो. ढाकी के द्वारा उनका काल ईस्वी सन् 375-400 माना गया है। उनके इस काल के आधार पर उन्हें न तो श्वेताम्बर, न दिगम्बर और न यापनीय ही कहा जा सकता है। वस्तुतः वे उस काल में हुए हैं जब उत्तर भारत के निर्ग्रंथ संघ में आचार एवं विचार सम्बन्धी अनेक मतभेद अस्तित्व में आ गये थे, किन्तु उस युग में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण होकर श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय परम्पराओं का जन्म नहीं हुआ था। हमें पाँचवीं शताब्दी के पूर्व न तो अभिलेखों में और न साहित्यिक स्रोतों में ऐसे कोई संकेत मिलते हैं, जिसके आधार पर यह माना जा सके कि उस काल तक श्वेताम्बर (श्वेतपट्ट) दिगम्बर या यापनीय ऐसे नाम अस्तित्व में आ गये थे।

यद्यपि वस्त्र, पात्रादि को लेकर विवाद का प्रादुर्भाव हो चुका था, किन्तु संघ स्पष्ट रूप से खेमों में विभाजित न होकर श्वेताम्बर, यापनीय और दिगम्बर ऐसे नामों से अभिहित नहीं हुआ था। उस काल तक मान्यता भेद और आचारभेद को लेकर विभिन्न गण, कुल और शाखाएँ तो अपना स्वतन्त्र अस्तित्त्व रखती थीं, किन्तु सम्प्रदाय नहीं बने थे। अतः काल की दृष्टि से उमास्वाति न तो श्वेताम्बर थे और न यापनीय ही थे, अपितु वे उस पूर्वज धारा के प्रतिनिधि हैं, जिससे ये दोनों परम्पराएँ विकसित हुई हैं। हाँ इतना अवश्य है कि दक्षिण भारत की अचेल धारा जो आगे चलकर दिगम्बर नाम से जानी गई, उससे वे सीधे रूप से सम्बन्धित नहीं थे।

4. यह सत्य है कि तत्त्वार्थसूत्र की कुछ मान्यताएँ श्वेताम्बर आगमों के और कुछ मान्यताएँ दिगम्बरमान्य आगमों के विरोध में जाती हैं। यह भी सत्य है कि उनकी कुछ मान्यताएँ यापनीय ग्रन्थों में यथावत् रूप में पायी जाती हैं, किन्तु इस सबसे हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते कि वे श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय परम्परा के थे। जैसा कि हमने पूर्व में संकेत किया है- उमास्वाति उस काल में हुए हैं जब वैचारिक एवं आचारगत मतभेदों के होते हुए भी साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण नहीं हुआ था। इसी का यह परिणाम है कि उनके ग्रन्थों में कुछ तथ्य श्वेताम्बरों के अनुकूल और कुछ प्रतिकूल, कुछ तथ्य दिगम्बरों के अनुकूल और कुछ प्रतिकूल तथा कुछ तथ्य यापनीयों के अनुकूल एवं कुछ उनके प्रतिकूल पाये जाते हैं। वस्तुतः उनकी जो भी मान्यताएँ हैं, उच्चैर्नगर शाखा की मान्यताएँ हैं। अतः मान्यताओं के आधार पर वे कोटिकगण की उच्चनगर शाखा के थे। उन्हें श्वेताम्बर, दिगम्बर या यापनीय मान लेना संभव नहीं है।

5. उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र के आधार के रूप में जहाँ श्वेताम्बर विद्वान् श्वेताम्बर मान्य आगमों को प्रस्तुत करते हैं, वहीं दिगम्बर विद्वान् षट्खण्डागम और कुन्दकुन्द के ग्रन्थों को तत्त्वार्थसूत्र का आधार बताते हैं। किन्तु यह भी सही है कि उमास्वाति के काल तक न तो षट्खण्डागम और न कुन्दकुन्द के ग्रन्थ अस्तित्व में आये थे और न श्वेताम्बर मान्य आगमों की वलभी वाचना ही हो पायी थी। षट्खण्डागम और कुन्दकुन्द के ग्रन्थ जिनमें गुणस्थान सिद्धान्त का विकसित रूप उपलब्ध है, तत्त्वार्थ के पूर्ववर्ती नहीं हो सकते हैं। गुणस्थान सिद्धान्त और सप्तभंगी की अवधारणाएँ जो तत्त्वार्थ में अनुपस्थित हैं वे लगभग पाँचवीं शताब्दी के उत्तारार्ध में अस्तित्व में आयीं। अतः उनसे युक्त ग्रन्थ तत्त्वार्थ के आधार नहीं हो सकते हैं। वलभी की वाचना भी छठीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ही सम्पन्न हुई है, अतः वलभी वाचना में सम्पादित आगम-पाठ भी तत्त्वार्थसूत्र का आधार नहीं माने जा सकते हैं, किन्तु यह मानना भी भ्रांत

होगा, कि तत्त्वार्थ का आधार आगम ग्रन्थ नहीं थे। वलभी वाचना में आगमों का संकलन एवं सम्पादन तो हुआ तथा उन्हें लिपिबद्ध भी किया गया। किन्तु उसके पूर्व उन आगम ग्रन्थों का अस्तित्व तो था ही, क्योंकि वलभी में कोई नये आगम नहीं बने थे। उमास्वाति के सम्मुख जो आगम ग्रन्थ उपस्थित थे, वे न तो देवर्धि की वलभी (वीर सं. 980) के थे और न स्कन्दिल की माथुरी वाचना के वीर नि.सं. 840 के थे, अपितु उसके पूर्व की आर्यरक्षित की वाचना के थे। यही कारण है कि उमास्वाति के तत्त्वार्थ सूत्र की अवधारणाओं में भी कहीं-कहीं माथुरी एवं वलभी वाचना से भिन्नता परिलक्षित होती हैं। ईसा की प्रथम-द्वितीय शताब्दी में जो आगम ग्रन्थ उपस्थित थे, वे ही उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र का उपजीव्य बने हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि उन प्राचीन आगमों का माथुरी और वलभी वाचनाओं में संकलन एवं सम्पादन हुआ है, नव-निर्माण नहीं, अतः यह मानना भी बिल्कुल गलत होगा कि तत्त्वार्थ के कर्ता उमास्वाति के सम्मुख जो आगम उपस्थित थे, वे वर्तमान श्वेताम्बर मान्य आगमों से किंचित् भिन्न थे। वे मात्र वर्तमान आगमों का पूर्व संस्करण थे।

6. तत्त्वार्थ के भाष्यमान्य और सर्वार्थसिद्धिमान्य ऐसे दो पाठ प्रचलित हैं। इनमें कौन-सा पाठ प्राचीन और मौलिक है तथा कौनसा विकसित है? यह विषय भी विवादास्पद रहा है। इस सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जहाँ सर्वार्थसिद्धिमान्य पाठ भाषा, व्याकरण और विषयवस्तु तीनों की दृष्टि से अपेक्षाकृत शुद्ध, व्याकरण सम्मत और विकसित है, वहीं भाष्यमान्य मूलपाठ उसकी अपेक्षा भाषायी दृष्टि से पूर्ववती और कम विकसित प्रतीत होता है। अतः भाष्यमान्यपाठ की प्राचीनता सुस्पष्ट है। सुजिका ओहिरो आदि विदेशी विद्वानों का भी यही मन्तव्य है।

7. इसी से सम्बद्ध ही एक प्रश्न यह उठता है कि इस पाठ परिवर्तन का उत्तरदायी कौन है? सामान्यतया श्वेताम्बर विद्वानों की यह मान्यता रही है कि यह पाठ परिवर्तन दिगम्बर आचार्यों के द्वारा किया गया, किन्तु पूर्व चर्चा में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि भाष्यमान्य पाठ का संशोधन करके जो सर्वार्थसिद्धिमान्यपाठ निर्धारित हुआ है, उस परिवर्तन का दायित्व दिगम्बर आचार्यों पर नहीं जाता है। यदि पूज्यपाद देवनन्दी ने ही इस पाठ का संशोधन किया होता तो वे 'एकादश जिने' आदि उन सूत्रों को निकाल देते या संशोधित कर देते जो दिगम्बर परम्परा के पक्ष में नहीं जाते हैं। इस सम्बन्ध में मेरा निष्कर्ष यह है कि सर्वार्थसिद्धिमान्य पाठ किसी यापनीय आचार्य द्वारा संशोधित हैं। पूज्यपाद देवनन्दी को यह जिस रूप में उपलब्ध हुआ है उन्होंने उसी रूप में उस पर टीका लिखी है। पुनः यह संशोधित पाठ भी स्वयं तत्त्वार्थभाष्य पर आधारित है। इसमें

अनेक भाष्य के वाक्य या वाक्यांश सूत्र के रूप में गृहीत कर लिए गये हैं। जहाँ तक भाष्यमान्य पाठ का प्रश्न है, वही तत्त्वार्थसूत्र का पाठ रहा है और श्वेताम्बर आचार्यों ने भी कोई पाठ संशोधन नहीं किया है- सिद्धसेन गणि को वह पाठ जिस रूप में उपलब्ध हुआ है, उन्होंने उसे वैसा ही रखा है, यदि वे उसे संशोधित करते या सर्वार्थसिद्धि के पाठ के आधार पर उसे अपनी परम्परानुसार नया रूप देते, तो फिर मूल एवं भाष्य में जिन मूल भेदों की चर्चा वे करते हैं, वह सम्भव ही नहीं होती, अतः पाठ संशोधन न तो दिगम्बरों ने किया है और न श्वेताम्बरों ने। उसका उत्तरदायित्व तो यापनीय आचार्यों पर जाता है।

8. तत्त्वार्थाधिगम भाष्य की स्वोपज्ञता भी एक विवाद का विषय रही है। इस संदर्भ में समस्त विवेचना से हम निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि भाष्य की स्वोपज्ञता निर्विवाद है। भाष्य तत्त्वार्थसूत्र की अन्य टीकाओं की अपेक्षा अविकसित है उसमें गुणस्थान, स्याद्वाद, सप्तभंगी जैसे विषयों का स्पष्ट अभाव है। पं. नाथूरामजी प्रेमी आदि कुछ दिगम्बर विद्वानों ने भी उसकी स्वोपज्ञता स्वीकार किया है, अतः भाष्य की स्वोपज्ञता निर्विवाद है।

9. भाष्य में जो वस्त्र-पात्र सम्बन्धी उल्लेख है, वे वर्तमान श्वेताम्बर परम्परा के पोषक न होकर उस स्थिति के सूचक हैं, जो ई. सन् की दूसरी-तीसरी शती में उत्तरभारत के निर्ग्रंथ संघ की थी और जिनका अंकन मथुरा की मुनि प्रतिमाओं में भी हुआ है। मथुरा के इस काल के अंकनों में मुनि नग्न है, किन्तु उसके हाथ में कम्बल और मुखवस्त्रिका है। कुछ मुनि नग्न होकर भी पात्रयुक्त झोली हाथ में लिए हुए हैं, तो कुछ झोली रहित मात्र पात्र लिए हुए हैं। यह सब उस संक्रमण काल का सूचक है, जिसके कारण विवाद हुआ और फलतः श्वेताम्बर और यापनीय परम्परा (उत्तरभारत की अचेल धारा) का विकास हुआ।

10. उमास्वाति को यापनीय ग्रन्थ षट्खण्डागम आदि का अनुसरणकर्त्ता मानकर यापनीय कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि यापनीय परम्परा पाँचवी शताब्दी के पश्चात् ही अस्तित्व में आई है और षट्खण्डागम आदि में गुणस्थान सिद्धान्त का विस्तृत विवरण होने से वे तत्त्वार्थसूत्र से परवर्ती है। वस्तुतः उमास्वाति श्वेताम्बर और यापनीय दोनों ही धाराओं की पूर्वज उत्तर भारत की, निर्ग्रंथ धारा की उच्चर्नगर शाखा में हुए हैं। यह संभव है कि वे सचेल पक्ष के समर्थक रहे हों, किन्तु इस आधार पर उन्हें श्वेताम्बर नहीं कहा जा सकता। अपवाद रूप में सचेलता तो यापनीयों को भी मान्य थी। हम देखते हैं कि मथुरा के शिल्प में मुनियों की मूर्तियों के अंकन का काल और उमास्वाति का काल एक ही है। इस आधार पर यह माना जा सकता है कि चाहे उमास्वाति अपवाद मार्ग में मुनि के द्वारा वस्त्र और पात्र ग्रहण करने के विरोधी भले न हों, किन्तु

वे उस अर्थ में सचेलता के समर्थक भी नहीं हैं जिस अर्थ में आज श्वेताम्बर उसका अर्थ ग्रहण करते हैं।

11. वे श्वेताम्बर और यापनीय दोनों के पूर्वज हैं। यद्यपि इतना निश्चित है कि वे दक्षिण भारत की प्राचीन निर्ग्रंथ धारा से सम्बद्ध नहीं थे, क्योंकि वे उत्तर भारत में हुए हैं। उनका जन्मस्थान न्यग्रोधिका और उनकी उच्चनागरशाखा का उत्पत्ति स्थल उच्चकल्पनगर आज भी उत्तर-पूर्व मध्यप्रदेश में सतना के निकट नागोद और ऊँचेहरा के नाम से अवस्थित हैं। उनका विहार-क्षेत्र भी मुख्य रूप से पटना से मथुरा तक रहा है। इस सबसे यही फलित होता है कि वे दक्षिण भारत की अचेल धारा से सम्बद्ध न होकर उत्तर भारत की उस धारा से सम्बद्ध रहे हैं जिससे आगे चलकर श्वेताम्बर और यापनीय दोनों परम्पराओं का विकास हुआ है। दक्षिण भारत की निर्ग्रंथ परम्परा जो आगे चलकर दिगम्बर नाम से अभिहित हुई, उनसे यापनीयों के माध्यम से ही परिचित हुई है।

वस्तुतः तत्त्वार्थ की रचना उत्तर भारत की उस निर्ग्रंथ धारा में हुई, जिससे आगे चलकर श्वेताम्बर एवं यापनीय परम्पराओं का विकास हुआ है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (मध्यप्रदेश)

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचार्य पद रजत साधना वर्ष की पूर्णता पर 'आचार्यपद' विशेषांक के प्रकाशन हेतु सबसे हार्दिक सहयोग का आह्वान

परम हर्ष का विषय है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पद रजत साधना वर्ष की पूर्णता के अवसर पर जिनवाणी का 'आचार्यपद' विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। शीघ्र ही प्रकाश्यमान इस अंक हेतु पूर्व की भाँति विज्ञापन आमन्त्रित न करके रुपये 5,100/- तथा रुपये 11,000/- अथवा अधिक राशि के सहयोग की योजना तय की गई है, जिससे कि अधिक से अधिक उदारमना श्रद्धालुओं का श्रद्धा पूर्ण सहयोग प्राप्त हो सके। 15 मार्च 2016 तक राशि प्रेषित करने वाले गुरु भक्तों के नाम जिनवाणी विशेषांक में प्रकाशित किये जायेंगे। आप अपनी राशि जिनवाणी के बैंक खाता **JINWANI, BAPU BAZAR, STATE BANK OF BIKANER AND JAIPUR, BANK A/c No. 51026632986, IFS Code SBBJ0010843, MICRO Code 30200305, PAN No. AABTS 3915 P** में सीधे जमा करवाकर मंडल कार्यालय को सूचित कर सकते हैं। जिनवाणी के नाम से बैंक ड्राफ्ट, चैक एवं नकद राशि भी स्वीकार्य है। आप यह राशि **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)** के पते पर प्रेषित करावें। *-विनयचन्द डागा-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

English-Section

BREAKING THE BONDS

Dr Dalpat Singh Baya

The Lord's Exhortation

"Awake! know thy bonds and break them"[1], echoed the Lord's sonorous voice that carried itself far and wide within and without His divine hall of discourse (Samavasaraṇa). It reverberated in the atmosphere amongst the gods, humans, and the subhuman creatures present there in their thousands. speaking of bondage the Lord clarified that 'one who possesses even a minuscule speck of any kind of material possession, and is attached to it, is bound by it and cannot liberate'[2]. 'The possessions can be living like family, friends, followers, relatives and animal wealth or it can be inanimate like lands, buildings, etc but attachment towards them is the real bondage', He said.[3]

This forces us to think and reflect on what the Lord said about bondage. It is very clearly seen that everyone wants to be free; none desires to be in bondage. Therefore, it is imperative that we understand the meaning and import of the Lord's words.

First of all, the Lord exhorts His listeners to awaken. By this He does not mean awakening from sleep but awaken from the slumber of ignorance, negligence and sloth. The reason is amply clear, too. Anyone who is ignorant, is given to sloth and neglects his duties can never accomplish the desired results. He becomes captive of his own laziness and neglect. Spiritually speaking also one who is not enlightened about the spiritual bonds will never be aware of them, leave aside trying to break free of them. It is, therefore, essential that a spiritual aspirant is mentally and spiritually alert and aware, awakened and vigilant at all times. Only when one is so alert and aware of one's state of bondage that he can be expected to make an effort for freedom from such bondage.

Next the Lord says, 'know thy bonds'. By this, He means that the knowledge of the nature of bondage and what causes it is essential before trying to break free of it. the question may be asked as to'why is such knowledge essential?' The reason for this is not far to seek either. As long as the nature and form of bondage are not known, their make up and

strength are not known and their intensity and intricacies are not known and unless one is aware of the reasons that cause such bondages, how can one chalk out a course for attaining freedom from their clutches? It is this knowledge that can help a spiritual aspirant to see a way out of the tunnel of such bondage. It may pave the way for his freedom by evolving an action-plan, a course of conduct, and practices and modes of moods that may, eventually, make him shed his karmic bondages and render him free. 'Knowledge is power', after all.

Attachment to Possessions : The Most Potent Cause of Bondage

The Lord is unequivocal in saying that even a minuscule speck of living or non-living possession, to which a person is attached, is the most potent cause of bondage.

Nothing could be truer. Most wars, differences and discords are caused over possessions like wealth and women. Greed is the most driving force of sinful activities. Greed is said to kill the very conscience and consciousness of the greedy. It is this consciousness that gives a person the ability to distinguish the right from the wrong and a spirit to or willingness to give up the wrong and adhere to the right. Greed when actuated, does not recognise any limits. Even the entire wealth of the world may fail to satisfy the greed of a single greedy person. It is so because the desires are as limitless as the sky.[4]

It is, therefore, perfectly understandable that the possessions and attachment thereto, how so ever small, cause bondage. It may be clarified that the possessions by themselves, to which one is not attached are not binding. The example of the sage king Nami in the Jaina lore and that of king Videha Janak in the Hindu lore - both kings of Mithila - are illustrative of this point. It is said that when it was reported to the king Nami that his capital town was burning, he is supposed to have said that if Mithila burnt, what was his that burnt.[5] this was the height of detachment. Both the Kings clearly understood that only their souls were theirs and that everything else including their bodies was no theirs. The epithet, 'Videha (bodyless)' attached to the name of Janak is indicative of his detachment from his own body also. It is such a state of lack of attachment that is unbinding.

To Break Bonds

By now we have established that absence of attachment for any kind of living or non-living possessions does not cause any bondage. However,

we still have to contend with the question of karmic bondages that already exist. These karmic bondages that are the result of life after life of activities of body, mind and speech and that of uncontrolled passions, from time immemorial, the karmic encumbrance that is our inheritance from all our previous births and from the present life to date, also have to be shed if we have to liberate.

According to Jaina thought the karmic encumbrance can be gotten rid of in two ways- By suffering the retribution due to it (savipak nirjara) and by expiation through adequate penance (Avipak nirjara). However, it must be understood that there are some specific form of very sticky karmic bondages (Nikachit karma) that cannot be shed without suffering their retribution on fruition. It may be gratifying for the spiritually inclined that most karmic bondages can be shed by undertaking adequate penance of either the external kind or the internal kind. The external kind of penance is of six kinds - fasting, reduced diet, mendicancy, overcoming taste, bearing bodily discomfort and retracting from worldly attractions.[6] The internal penance is, again, of six kinds and includes repentance, humility, service, self-study, meditation and giving up physicality.[7]

Conclusion

We can conclude this write up on 'Breaking the Bonds' on the note that attachment is bonding and detachment is non-bonding. The restraint of body, mind and speech prevents fresh karmic bonds and penance sheds the existing ones.

It is important to know the nature and form of karmic bonds before one can actually proceed to break them. Deliberate effort by way of restraint and penance are necessary to break free from the physical, mental and emotional karmic bondage. Only then can one be free from their clutches and liberate.

References

1. Bujjhijja tiuttejja bandhanam Parijaniya - Sutrakritanga 1.1
2. Ibid. 1.2
3. Ibid. 1.3-1.6
4. Icchha hu agas sama anantaya - Uttaradhyayana sutra Ch. 9.
5. Mihila dajjhai, majjha kim dajjhai? - Ibid.
6. Anshan, Unodari, Bhikshachrya, Rasaparityaga, Kayaklesha and Pratisalleenata.
7. Prayashchitta, Vinaya, Vaiyavritya, Svadhyaya, Dhyan and Kayotsarg.

-E-26, Bhupalpura, Udaipur (Raj.)

प्रासंगिक

आचार्य हस्ती की दृष्टि में ध्यान की उपयोगिता

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. स्वाध्याय एवं ध्यान को श्रमणाचार के अन्तर्गत विशेष स्थान दिया गया है। ध्यान एक ऐसा आभ्यन्तर तप है जिससे कर्म शीघ्रता से दग्ध हो जाते हैं। धर्म ध्यान का अभ्यास ही शुक्ल ध्यान तक पहुँचने में सहायक होता है। किन्तु अभी जैन संघ के श्रमण वर्ग व श्रावक वर्ग में 'ध्यान' व 'ध्यान शिविरों' को लेकर कई भ्रान्तियाँ हैं- विशेषकर उसके महत्त्व व उपयोगिता के बारे में। ध्यान शिविरों से एकाग्रता एवं समत्वभाव का विकास होता है, जो धर्म का प्रमुख स्वरूप है। समता की साधना के सम्बन्ध में कैसी भ्रान्ति? आगम-साहित्य एवं विभिन्न आचार्यों के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी, आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री नानेश भी ध्यान-साधना के समर्थक रहे। यहाँ ''नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'' से 'अमृत वाक्', 'हस्ती उवाच' और आचार्य हस्ती के समय के विशिष्ट श्रावकों व साधकों द्वारा प्रकट किये गये आचार्य हस्ती के विचार इस सम्बन्ध में प्रस्तुत हैं, जिनसे ध्यान व ध्यान-शिविरों का महत्त्व व अनिवार्यता स्पष्ट प्रतिपादित होती है।
2. पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के विचार-

(अ) ''ध्यान का विशद विवेचन आगम और आगमेतर ग्रन्थों में है। आज श्रमण समाज में ध्यान का अभ्यास प्रायः नहीं के समान है। इसके लिए विशेष रूप से शिक्षा देनी आवश्यक है। जैन व जैनेतर परम्पराओं से प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान कर मौलिक तथ्य प्रकट करना चाहिए और सुनियोजित मार्ग-निर्माण करना चाहिए।''

(ब) ''जैन दीक्षा में इसी प्रकार के योग की शिक्षा और दीक्षा दी जाती है। जैन दीक्षा का सावद्ययोग प्रत्याख्यान इसी बात का द्योतक है।''

(स) ''इस प्रकार की साधना के निरन्तर अभ्यास से अनुभव आने के पश्चात् सविकल्प और निर्विकल्प समाधि रूप सुख की अनुभूति होती है। इसी को सिद्ध योग की दीक्षा कह सकते हैं। इसमें यम-नियम और आसन आदि स्वतः आ जाते हैं।''

(द) ''आज भी दीक्षा तो वही दी जाती है, पर शिक्षादान और उसका यथावत् ग्रहण, धारण एवं आराधन नहीं होने से आज उसका प्रभाव जैसा चाहिये वैसा दृष्टिगोचर नहीं होता। यह हम साधकों के प्रमाद का परिणाम है। हमें इस ओर जागृत होने की आवश्यकता

है।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ सं. 404)

3. ''चरितनायक (पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.) की मौन और ध्यान-साधना का भी विकास हुआ।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थणं, पृष्ठ 75)। उस समय चरितनायक की उम्र सिर्फ 22 वर्ष की थी। यानी छोटी उम्र से ही चरितनायक **ने ध्यान साधना का विकास किया**। यही कारण है कि 41 की उम्र में अपने ध्यान-चिन्तन से चार अध्यात्म-गीतिकाओं की रचना कर जयमलजी म.सा. की सम्प्रदाय के संथारा-रत श्री चौथमलजी म.सा. को सुनाया और मृत्यु को महोत्सव बनाते हुए उन्हें परलोक की महायात्रा के लिए प्रचुर पाथेय प्रदान किया। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 104)

4. स्वाध्यायियों को जीवन-निर्माण के लिए जो नियम पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने दिलाए उनमें एक था-''प्रतिदिन 15 मिनट 'ॐ अर्हम्' या 'सोहम्' का ध्यान करना।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 182)।

5. ''यहाँ 1 से 5 अक्टूबर तक ध्यान-साधना शिविर आयोजित हुआ।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 270,)। (सवाईमाधोपुर चातुर्मास 1988)।

6. ''जैन ध्यान-केन्द्र की स्थापना हो।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 277)। (कोसाणा चातुर्मास, 1989)।

7. ''मुक्ति का राही'' पुस्तक से-

वीतराग के ध्यान से, जो होते हैं विभोर। 'हस्ती' पहला कदम है, वीतराग की ओर।।
राग निवारण के लिये, वीतराग के बैन। 'हस्ती' औषध है तभी, हिय उतरे दिन रैन।।

8. ''सप्त दिवसीय **ध्यान-साधना-शिविर** का आयोजन हुआ।'' प्रबुद्ध चिन्तक एवं ध्यान-साधक श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा के संयोजन में। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 278)। (पीपाड़, जनवरी 1990)

9. हस्ती उवाच- ''सभी साधकों को साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ना है। **ध्यान और मौन की साधना के साथ यदि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना करेंगे तो आत्मा का अवश्य कल्याण होगा।**'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 400)।

10. ''श्रमण जीवन/साधक जीवन'' (हस्ती उवाच, नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 448)

(अ) 24 घंटों में **प्रतिदिन चार बार ध्यान करना चाहिए** तथा चार-पाँच बार स्वाध्याय करना चाहिए। अर्थात् स्वाध्याय और ध्यान का लगभग समान महत्त्व है।

(ब) सेवा, तपस्या, लेखन, भाषण और ध्यान की यह पंचसूत्री योजना कार्यान्वित हो जाय तो मैं समझता हूँ कि साधना में एक नया मोड़ आ जायेगा। उत्तराध्ययनसूत्र के

छब्बीसवें अध्ययन में समाचारी का जो रूप प्रस्तुत किया है वह निराला है।"

11. "ध्यान पद्धति को निश्चित रूप दो।" "नई पीढ़ी को इस ओर प्रेरित करो, आकर्षित करो।" गुरु हस्ती की विद्वान् और 'जिनवाणी' के सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत को अंतिम भोलावन। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 544)।

12. "ध्यान तप तो आपके जीवन का अंग ही था। प्रातःकाल सूर्योदय के समय, मध्याह्न में 12 से 1 बजे तक तथा रात्रि में शयन के समय आपकी साधना नियमित चलती थी। **चतुर्विध संघ में स्वाध्याय व सामायिक की तरह ही ध्यान साधना चालू हो, इसके लिये मुझे आपसे बराबर प्रेरणा मिलती रही।** आप फरमाते- स्वयं भी ध्यान-साधना करो तथा दूसरों को भी ध्यान सिखाओ। अतः आपके सान्निध्य में अनेक ध्यान शिविर लगाये गये।"- विद्वान् और ध्यान-गुरु श्री कन्हैयालाल लोढ़ा (नमो पुरिसवरगंध-हत्थीणं, पृष्ठ 583)।

13. "आपकी ध्यान के प्रति विशेष लगन थी। जब कभी भी **ध्यान के विषय को लेकर चर्चा चलती तो आप विशेष आह्लादित नजर आते थे।** ध्यान शिविर लगाकर ध्यान-साधकों की आपने अच्छी टीम तैयार की" (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं : श्री ब्रजमोहन जैन (मीणा), पृष्ठ 617-618)।

14. "विशिष्ट ध्यान-साधक आचार्य हस्ती : (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, श्री प्रकाशचन्द जैन-प्राचार्य, जलगांव, पृष्ठ 622)-

(अ) उन्होंने अपने 71 वर्ष के साधना काल में सामायिक-स्वाध्याय व ध्यान-साधना पर विशेष बल दिया।

(ब) ध्यान से चित्त की शुद्धता बढ़ती जाती है और परिणामस्वरूप अनेक अज्ञात बातें ज्ञात हो जाती हैं।

(स) ऐसा स्वयं आचार्य श्री ने फरमाया था- **"मैं करीब 40 वर्षों से निरन्तर नियमित समय पर ध्यान करता हूँ। ध्यान साधना से चित्त की शुद्धता इतनी बढ़ जाती है कि अनेक बातें ध्यान के समय प्रत्यक्ष दिखाई देने लगती हैं।** अजमेर सम्मेलन के समय आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म.सा. का एक शिष्य कहीं चला गया था। आचार्य श्री को बहुत चिन्ता हुई, मुझे भी वह समाचार ज्ञात हुए। 12 बजे के समय मैं ध्यान में बैठा तो वह साधु मुझे एक मकान के कमरे के कोने में बैठा हुआ दिखाई दिया। मैंने एक भक्त श्रावक को ध्यान समाप्ति पर बुलाकर उस स्थान पर जाने का संकेत किया। उन्होंने वहाँ जाकर देखा तो साधु उस स्थान पर बैठा हुआ था।

आचार्य श्री आत्मारामजी म.सा. को समाचार देकर उस साधु को वापस लाया गया। यह कोई चमत्कार नहीं था। चित्त की शुद्धि से यह सम्भव हो जाता है।''

15. ''1978 में विपश्यना ध्यान में बैठा। उसके बारे में आचार्यश्री ने बहुत बातें पूछी। उनको नई नहीं लगी, क्योंकि लगता था कि वे स्वयं इसको प्राप्त कर चुके थे। आचारांग सूत्र की कुछ गाथाओं के बारे में मुझे कुछ शंका हुई और पूछने गया तो उन्होंने निःसंकोच कहा- ''जो कुछ विपश्यना में सीखा पढ़ा है, वही उन गाथाओं का अर्थ है।'' ''स्वाध्याय, ध्यान और लेखन पर हमेशा उन्होंने जोर दिया।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, श्री रणजीतसिंह कूमट-जयपुर, पृष्ठ 625)।

16. ''आचार्य श्री अपने ध्यान में इतने तल्लीन थे कि उन पर इस कटु वातावरण का कोई असर नहीं हुआ, निर्विघ्न रूप से रात्रि-ध्यान करते रहे।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं से श्री बस्तीमलजी चोरड़िया-जोधपुर, पृष्ठ 639)।

17. ''पूज्य श्री के त्रिकाल ध्यान व स्वाध्याय का समय प्रायः नियत रहा।'' ''आकोदिया गांव की श्मशान शाला में बैठकर ध्यान हुआ ही।'' (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं से श्री चंदुलाल केशवलाल मेहता, पृष्ठ 663-664)।

18. आचार्यप्रवर के निर्देशन में ध्यान विषयक पुस्तक तैयार हुई थी, किन्तु न तो यह प्रकाशित हुई और न ही इसकी पांडुलिपि का अता-पता है। (पृष्ठ 758, नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं) सम्पादक : डॉ0 धर्मचन्द जैन; सम्पादक-मण्डल डॉ. मंजुलाजी बम्ब, ज्ञानेन्द्रजी बाफना, प्रसन्नचन्दजी बाफना, डॉ. सुषमाजी सिंघवी।

19. तन पुष्टि-हित व्यायाम चला, मन पोषण को शुभ-ध्यान भला।- गुरु हस्ती (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 768)

20. गुरु हस्ती : गुरु मात, गुरु तात, गुरु सच्चे जानो भ्रात। आत्म शांति पाने हेतु ध्यान तूँ लगाए जा। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 792)

21. प्रातः उठ मंगलमय प्रभु का निर्मल ध्यान लगाओ।
भव भव के उपकारी सद्गुरु, उनको सीस नमाओ।।

-गुरु हस्ती (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 795)

22. योग-साधना का सबसे बड़ा विघ्न लोकैषणा है। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं, पृष्ठ 315) अमृत वाक्

23. आचार्य हस्ती अधिकतर ध्यान, मौन, जप, साधना आदि में लीन रहते। (नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं में व्यक्तित्व खण्ड, पृष्ठ 682)।

24. ध्यान-साधना श्रावकों द्वारा सामायिक वेश में भी की जा सकती है। ध्यान में समभाव रूप सामायिक की साधना सहज रूप से सम्यक्रूपेण हो सकती है। चित्त को शुद्ध एवं स्वस्थ बनाने की अनमोल विधि है-ध्यान। स्वाध्याय में स्व का अध्ययन भी होता है तथा शास्त्रों का अध्ययन भी किया जाता है। ध्यान साधक इन दोनों क्रियाओं को अधिक सजगता से कर सकता है। ध्यान का प्रतिक्रमण से कोई विरोध नहीं है। ध्यान करने वाला साधक प्रतिक्रमण अधिक अच्छे ढंग से कर सकता है। उसे अपने कृत दोषों एवं पापों का सहज पता चलता है तथा उनके निराकरण के लिए वह संकल्पबद्ध हो सकता है। अतः ध्यान-साधना से सामायिक-स्वाध्याय-प्रतिक्रमण की परिपाटी अधिक प्राणवान हो जाएगी, ऐसा प्रतीत होता है। रत्नसंघ में 'वीतराग ध्यान-साधना' से सैकड़ों लोग लाभान्वित हुए हैं। धर्म के पथ पर चलकर विकारमुक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है-ध्यान। अतः इसको किसी भी प्रकार अनुपयोगी समझना हमारी मिथ्या धारणा हो सकती है, सच्चाई नहीं।

-प्रथम सेवक, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई (तमिलनाडु)

जिनवाणी के विशेषांक हेतु रचनाएँ शीघ्र भेजें

जिनशासन गौरव संघनायक आचार्यश्री हीराचन्द्रजी महाराज के आचार्यपद रजत साधनावर्ष के उपलक्ष्य में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 'आचार्यपद विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक हेतु हमें अनेक लेख प्राप्त हो गए हैं। जिन विद्वान् तत्त्वज्ञ लेखकों से इस विशेषांक हेतु अपना आलेख प्रदान करने हेतु निवेदन किया गया था तथा अभी तक लेख प्रेषित नहीं कर पाये हैं, वे शीघ्र ही अपना आलेख 28 फरवरी 2016 तक प्रेषित करने की कृपा करें। अन्य महानुभाव भी चाहें तो आलेख प्रेषित कर सकते हैं। विषयवस्तु के बिन्दुओं हेतु जिनवाणी के अक्टूबर-2015 अंक में पृष्ठ संख्या 104 द्रष्टव्य है। *-सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका*

जिनवाणी की सदस्यता अर्द्धमूल्य में

जिनवाणी सदस्यता प्राप्त करने के इच्छुक सभी महानुभावों को सूचित किया जाता है कि श्री पारसमलजी चोरड़िया, (वी. पारस भय्या), उज्जैन के सहयोग से अर्द्धमूल्य के अन्तर्गत 50 सदस्य बनाये जा रहे हैं। जो भी महानुभाव सदस्य बनना चाहें वे रुपये 500/- का चैक, जिनवाणी के नाम से भिजवाएं, साथ ही अपना पूरा पता मय पिनकोड एवं फोन नं. सहित भिजवाएं, जिससे सदस्यता प्रदान की जा सके। 50 सदस्य बनने के पश्चात् यह स्कीम पूर्ण हो जायेगी। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

समाज-चिन्तन

पूजा की हिंसा से बचने का औचित्य

डॉ. जीवराज जैन

एक पंडित साधक के साथ चर्चा करते हुए प्रसंगवश मैंने जैन दर्शन के एक प्रसिद्ध सिद्धान्त को दोहरा दिया- ''जहाँ हिंसा है, वहाँ धर्म नहीं है।'' इस पर साधकजी मुस्कराते हुए बोले कि नहीं, बात ऐसी नहीं है। आगे फरमाया कि पद-यात्रा में हिंसा होती है, तो फिर भगवान ने चातुर्मास समाप्त होते ही हमें विहार करने के लिए क्यों फरमाया? क्योंकि यदि पद-विहार की हिंसा से बचने के लिए, हम एक जगह रुके रहे तो मोह-कर्म के बंध का निमित्त बन जाएगा। अतः आध्यात्मिक उन्नति के लिए जैसे वह हिंसा स्वीकार्य है, वैसे ही पूजा की हिंसा भी स्वीकार्य है, क्योंकि उससे मोह-कर्म को क्षय करने में मदद मिलती है।

यानी मोह-कर्म के बंध जाने की संभावना को रोकने के लिए प्रभु ने पद-यात्रा की हिंसा की अनुमति दी है, वैसे ही मोह-कर्म के क्षय की संभावना को ध्यान में रखते हुए, उस आध्यात्मिक लाभ (धर्म) के लिए पूजा में हो रही अग्नि, जल आदि जीवों की हिंसा की अनुमति दी है।

प्रश्न उठता है कि क्या ऐसी आज्ञा का कोई आगमिक संदर्भ मिलता है? मेरे तो ऐसा ध्यान में नहीं आता है।

दूसरा, पूजा से तो व्यक्ति कभी-कभी ही शुद्ध भाव में आएगा और तभी उसके कर्म-क्षय की स्थिति बनेगी। अन्यथा कर्म-बंधन तो निश्चित रूप से होता ही रहेगा।

खैर इस मुद्दे के अन्य पहलुओं पर भी आगे चिन्तन करते हैं-

1. यदि आप पद-विहार की हिंसा के उदाहरण के आधार पर, तहे दिल से पूजा की हिंसा को स्वीकार्य मानते हैं, तो फिर आप साधक, स्वयं पूजा की हिंसा करने से क्यों दूर रहते हो? आपके लिए यदि वह हिंसा स्वीकार्य नहीं है, तो आप श्रावकों को पूजा-हिंसा की ओर क्यों प्रेरित करते हो?
2. इसके विपरीत आपको पद-विहार की हिंसा तो करनी ही पड़ेगी, लेकिन कुछ श्रावक लोग तो साल भर यात्रा का पच्चक्खाण लेकर विहार हिंसा से भी बच जाएंगे। उनको फिर आप अपने लिए अस्वीकार्य हिंसा में क्यों धकेलते हो?
3. **आगमन क्रिया से तुलना-** गमनक्रिया तो साधक लोग विवेक और अनिवार्यता की विवशता का भाव रख करके करते हैं। यानी इसमें साधक सजग रहकर, हिंसा के

अल्पीकरण का भाव रखते हैं। यहाँ आगम के पाठ का ध्यान आता है। दशवैकालिक सूत्र में भगवान ने हिंसा-अहिंसा का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र बताया है-

''जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयं मासे, जयं सए।
जयं भुजन्तो भासंतो, पाव कम्मं न बन्धई।।''

-दशवैकालिक, 4.8

भगवान ने इस सूत्र द्वारा मनुष्य जीवन की सभी 6 अनिवार्य क्रियाओं (चलना, ठहरना, बैठना, सोना, भोजन करना, शयन करना) में हो रही हिंसा से पाप कर्म-बंध नहीं हो, उसका उपाय (यतना) बता दिया है। यह ध्यान देने योग्य प्रश्न है कि इन 6 अनिवार्य क्रियाओं में 'पूजा' जैसी महत्त्वपूर्ण क्रिया को शामिल क्यों नहीं किया है?

''पाप-कर्म नहीं बंधता है।'' इसका क्या मतलब है? यतना से ईर्यापथिकी क्रियाओं में पूर्णरूपेण कर्म-बंध से बचा जा सकता है और अन्य क्रियाओं में शायद आंशिक रूप से बचा जा सकता है। जैसा कि भगवान ने मेघकुमार को फरमाया। अनर्थजा हिंसा तो पूर्णरूपेण हिंसा ही है, लेकिन जीवन-यापन की अर्थजा हिंसा यानी आवश्यक हिंसा में यदि अल्पीकरण और विवशता का भाव रहता है तो कर्म-बंध का अनुभाग गाढ़ा नहीं होगा।

4. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 12, हरिकेशीय, गाथा 38-39 में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जो लोग आत्मशुद्धि के यज्ञ में अग्नि का आरम्भ और जल से बाह्य शुद्धि की खोज करते हैं, उन्हें सम्यग्दृष्टि सम्पन्न नहीं कह सकते हैं। जो अग्नि का प्रयोग और प्रातः एवं संध्या में जल का स्पर्श करते हैं, वे मन्दबुद्धि लोग जीवों की हिंसा करते हुए पाप कर्म का उपार्जन करते हैं।

अतः पूजा की हिंसा को हिंसा नहीं समझना, उसी तर्क के समान लगता है, जो लोहिताचार्य के जमाने के यज्ञों के बारे में कहा जाता था कि- ''यज्ञहिंसा हिंसा न भवति।''

भगवान की मूर्ति के आगे दीपक जलाने, सचित्त फल फूल चढ़ाने व जल से प्रक्षालन कराने में हिंसा तो होती है, लेकिन श्रावक को इसकी छूट दी गयी है, क्योंकि इससे उसके भावों की शुद्धि होती है, मोह-कर्म का नाश होता है। यह तर्क तो लोहिताचार्यजी के जमाने की अज्ञानता का ही दूसरा स्वरूप लगता है। इससे तो मिथ्यात्व बढ़ता ही नज़र आता है।

इसके अलावा उनकी पूजा में हो रही हिंसा में कोई अल्पीकरण व विवशता का भाव भी तो नहीं रखा जाता है, अतः कर्म-बंध का प्रसंग समझ में आता है।

5. ऐसा भी तो संभव लगता है कि यदि भगवान के सामने बैठकर बिना दीपक जलाये, सचित्त फल-फूल चढ़ाये व जल से प्रक्षालन कराये भी कोई उनके आलम्बन से शुभ ध्यान करता है, तो उसके मोह में कमी आ सकती है। बिना सहायक क्रियाओं का पाप किये भी बंध से छुटकारा मिल सकता है।

पूजा के प्रतिपादन या प्ररूपणा के औचित्य का विश्लेषण

कौनसा आचार	आचार में कौनसी सहायक क्रिया	कौनसे भाव से	हिंसा का प्रकार (शास्त्र सन्दर्भ)	कितना कर्म बंध होगा	आचार क्रिया के अंतिम उद्देश्य में कितनी सफलता?
1. विहार (पद विहार)	ईर्यापथिकी (गमनागमन)	*विवेक व विवशता *अल्पीकरण	अर्थजा क्रिया (दशवैकालिक 4.8, 6 अनिवार्य क्रियाओं का वर्णन)	कर्म-बंध नहीं	मोह-कर्म के आश्रव व बंध का रुक जाना। (100% सफलता)
2. पूजा (चढ़ावा, प्रक्षालन)	दीया जलाना, जल स्नान, फल-फूल चढ़ाना आदि सहायक क्रियाएँ।	*खुशी मनाना *अल्पीकरण का भाव नहीं, *अज्ञानतावश इन क्रियाओं में अहोभाव मानना या रखना	अनर्थजा (उत्तरा. अध्ययन 12, गाथा 38,39)	गाढ़ा अनुभाग बंध (हरिकेशीय)	भक्ति-भाव (बिना राग-द्वेष के हो तो) से पुण्य उपार्जन। कभी-कभी निर्जरा हो सकती है, जिसके लिए सहायक क्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है। (<5% !)

-40, कमानी सेण्टर, जमशेदपुर(छत्तीसगढ़)

पाठक-अभिमत

श्री राणुलाल माणिकचंद कोचर

मैं जितने भी मासिक पत्र पढ़ता हूँ, मुझे सबसे अच्छी जिनवाणी लगती है। जैसे चातक पक्षी पानी की बूँद की राह देखता है, वैसे ही मैं जिनवाणी का इन्तजार करता हूँ। हाथ में किताब आने पर पूरी की पूरी लगन से पढ़ता हूँ। दिसम्बर-2015 के अंक में बाल-दीक्षा सम्बन्धी जो बातें बतायी हैं, वे बालदीक्षा का महत्त्व बताती हैं। आजकल श्रावक-श्राविका बाल दीक्षा पसन्द नहीं करते, बाल-दीक्षा लेने से ही आत्मा का तथा समाज का कल्याण हो सकता है। यह लेख संग्रहणीय है। प्रवचन में इसका महत्त्व बताना होगा। स्वास्थ्य विज्ञान, बाल-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि स्तम्भ सभी स्तर के श्रावक-श्राविकाओं को मनन, चिन्तन कराने लगाते हैं। सचमुच जिनवाणी एक उच्चतम मासिक है। जैनियों के सभी घरों में इसे रखने की आवश्यकता है। जिनवाणी विवाह में, सालगिरह आदि उत्सव में भेंट देने हेतु अति उपयुक्त है।

-'सौभाग्य' सहस्रादि हॉस्पिटल के पीछे, वडाला रोड़, नासिक-422011(महा.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (19)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-सम्पादक

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम-2)

विविक्त शय्यासन से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
एकान्तवास के सेवन से, किसमें रत हो जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।539।।
विविक्त शय्यासन से प्राणी, चरित की रक्षा करता,
शुद्ध सात्त्विक आहारी बन, अनासक्ति को वरता,
मोक्ष साधन में रह रह कर, कर्म काट सब डालो।।540।।
विनिवर्तना से प्राणी किस गुण को है पाता,
विषय वासना से निवृत्त हो, किसे पार कर पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।541।।
पाप कर्म के बंध हेतु से, निवृत्त वह हो जाता,
संवर और निर्जरा करके, संसार पार कर पाता,
पाप कर्म के कारण तज कर, कर्म क्षीण कर डालो।।542।।
संभोग प्रत्याख्यान से प्राणी, जीव यहाँ क्या पाता,
मंडली भोज के त्याग से कैसी, सुख शय्या को पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।543।।
संभोग के पच्चक्खाण से, सारा आलम्बन मिटता,
निरावलम्बी बनके साधक, स्व संतोष को पाता,

नहीं कल्पना चाह प्रार्थना, सुख शय्या को पालो।।544।।
उपधि प्रत्याख्यान से प्राणी, जीव यहाँ क्या पाता,
उपकरणों को तज देने से, किससे मुक्ति पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।545।।
उपधि प्रत्याख्यान से प्राणी, निर्विघ्न भाव को पाता,
आकांक्षा से मुक्त बना, संक्लेश नहीं है धरता,
उपधि तजकर स्वाध्याय से, विघ्न दूरकर डालो।।546।।
आहार के प्रत्याख्यान से भंते! कहो जीव क्या पाता,
आहार त्याग कर देने से, किससे मुक्ति पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।547।।
आहार प्रत्याख्यान से साधक, जीवन इच्छा तजता,
आहार बिना वह जीवन में, संक्लेश नहीं है धरता,
अनैषणीय आहार त्याग कर, परीषह जय कर डालो।।548।।
कषाय के प्रत्याख्यान से प्राणी, किस गुण को है पाता,
क्रोध मान मायादि तजकर, किसमें स्थिर हो जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।549।।
कषाय त्याग करने से प्राणी, वीतराग बन जाता,
हर्ष-शोक, संयोग-वियोग में, नहीं उद्वेग है लाता,
समभावों में थिर रहने को, कषाय संग छुड़ालो।।550।।
योग के प्रत्याख्यान से प्राणी, क्या जग में है पाता,
योग निरोध करने से किसका, प्राणी क्षय कर पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।551।।
योग प्रवृत्ति तज देने से, अविचल भाव को पाता,
त्रिविध योग का निरोध करके, अयोगी बन जाता,
नव कर्मों का बंध नहीं हो, संचित कर्म खपालो।।552।।
देह त्याग करने से प्राणी, इस जग में क्या पाता,
पाँच शरीर को तजकर, किस सुख को है पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।553।।
देह त्याग करने से प्राणी, सिद्धों के गुण पाए,

लोक के अग्रिम भाग में जाकर, परम सुखी हो जाए,
जन्म-मरण का बंधन तज दो, शाश्वत सुख को पालो।।554।।
सहाय प्रत्याख्यान से भंते! प्राणी क्या है पाता,
परजन का सहकार त्याग कर, आखिर में क्या पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।555।।
सहाय नहीं लेने से प्राणी, एकत्व भाव में रमता,
कलह रहित हो जाता है, वह अल्प कषायी बनता,
संयम-संवर में वृद्धि कर, चित्त समाधि पालो।।556।।
भक्त प्रत्याख्यान से भंते! कहो जीव क्या पाता,
संलेखन का आश्रय लेकर, किसका अंत कराता,
बोध प्राप्त करने का उत्सुक, अपना शीश नमालो।।557।।
भक्त प्रत्याख्यान से प्राणी, भव निरोध है करता,
आहार ग्रहण की अनासक्ति से, जन्म-मरण है हरता,
पूर्ण समाधि भाव में रहकर, भव का चक्र मिटालो।।558।।
सद्भाव प्रत्याख्यान से भंते! जीव यहाँ क्या तजता,
सर्व क्रिया योगों को तजकर, क्या त्याग कुछ बचता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।559।।
सर्व क्रिया योगों को तजकर, अनिवृत्ति को पाता,
अघाती कर्मों का क्षय करके, सिद्ध-मुक्त हो जाता,
अंतिम प्रत्याख्यान पाल कर, पुनर्जन्म को टालो।।560।।
प्रतिरूपता से प्राणी, किस गुण को पाता,
जिनकल्पी सम निर्वाहन से, आखिर में क्या पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश झुकालो।।561।।
जिनकल्पी सम निर्वाहन से, प्राणी लघुता पाता,
प्रमाद रहित होकर के साधक, समकित शुद्धि लाता,
अन्दर-बाहर एकरूप हो, संयम शुद्ध करालो।।562।।
वैयावृत्त्य से हे भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
साधु सन्तों की सेवाएँ, कैसे तप कहलाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमा लो।।563।।

वैयावृत्त्य है चरण सत्तरी, भाव सहित जो धारे,
गोत्र तीर्थंकर बांधे वो, पहुँचे भव से किनारे,
महानिर्जरा करने के हित, आभ्यंतर तप ठालो।।564।।
सब गुण से सम्पन्न जीव प्रभु! कहो प्राप्त क्या करता,
रत्नत्रयी परिपूर्ण खिले तो, किसका अंत है करता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।565।।
सब गुण से सम्पन्न जीव, अपुनरावृत्ति पाता,
अविचल मुक्ति पा कर के वह, सारे दुःख मिटाता,
दुःख के कारण नहीं मुक्ति में, निजगुण को चमकालो।।566।।
वीतरागता से भगवन्! कहो जीव क्या पाता,
रागद्वेष रहित होकर के, कैसे उपरति पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।567।।
वीतरागता लक्ष्य साधकर, करता बंधन मुक्ति,
प्रिय-अप्रिय इन्द्रिय विषयों में, आती इससे विरक्ति,
राग मूल है सब बंधन का, इसको दूर भगालो।।568।।
क्षांति गुण से है भगवन्! कहो जीव क्या पाता,
सहन शक्ति धारण करने से, कैसी समता पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीशा नमालो।।569।।
खंति धर्म है प्रथम यति का, सहना और खमाना,
सहने से समता बढ़ती है, परीषह जय फिर पाना,
हँसते सहना-सहते हँसना, प्रभु पथ को अपनालो।।570।।
मुक्ति का गुण आने से, जीव यहाँ क्या पाता,
निर्लोभी बन जाने से वह, कौन भाव नहीं लाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।571।।
निर्लोभी बनकर के प्राणी, अकिंचनता को पाता,
द्रव्यों का परिग्रह तजने से, याचक भाव न आता,
द्रव्य रहित होकर के प्राणी, चिन्ता सभी छुड़ालो।।572।।
आर्जवता को धारण करके, जीव यहाँ क्या पाता,
भाव सरलता को पाकर क्या, आराधक बन जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।573।।

आर्जवता धारण करने से, काय सरलता पाता,
भाव सरलता पाकर के फिर, अवंचक बन जाता,
धर्म आराधक बन जाता है, ऋजुता भाव बसालो।।574।।
मृदुता को धारण करने से, जीव यहाँ क्या पाता,
नम्र स्वभावी बन करके वह, किसका मद है तजता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।575।।
मृदुता को धारण करने से, मान रहित हो नम्रता,
मृदु मार्दव से युत होकर के, अष्ट मदों को तजता,
मान परिषह जय करने को, मार्दव भाव भरालो।।576।।
भाव सत्य से जीव कहो, किस गुण को है पाता,-
अंतर की सच्चाई से, परलोक में क्या है मिलाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।577।।
भाव सत्य से जीव यहाँ पर, भाव विशुद्धि पाता,
अर्हत् भाषित धर्माराधन, में उद्यत हो जाता,
धर्म मिले जन्मान्तर में भी, अंतर शुद्ध बनालो।।578।।
करण सत्य से है भंते, वो जीव यहाँ क्या पाता,
काम करे सच्चाई से तो, कैसा वह हो जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।579।।
करण सत्य से सत्य क्रिया, करने की क्षमता पाता,
जैसा कहता वैसा करता, यथाकार कहलाता,
कथनी-करनी में नहीं अंतर, करण सत्य अपनालो।।580।।
योग सत्य से है भगवन्! प्राणी क्या है पाता,
मन-वच-काया की सच्चाई, होने से क्या मिलता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।581।।
योग सत्य से प्राणी जग में, योग विशुद्धि करता,
मन-वच-काया के योगों से, सत्य तथ्य है मिलता,
पूर्ण सत्य को पाने हेतु, सत्य त्रिवेणी नहा-लो।।582।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

धारावाहिक

लगन की वेला (17)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

दर्शन का लाभ

जब गंगेश ने शिवसुन्दर से कहा- 'अपने गुरुओं के पास जाने में क्या संकोच? तभी सार्थवाह गुणसुन्दर ने अपने गृह में प्रवेश किया, परन्तु गंगेश की बात पर उनका ध्यान नहीं गया। गंगेश ने उन्हें देखा। वह उठा और उसने उनको प्रणाम किया। सार्थवाह ने उसे आशीर्वाद दिया- 'चिरंजीवी! सुखी रहो! फिर बोले- 'आयुष्मन्, गंगेश! बहुत दिवसों में दिखाई दिये।'' ''एक-दो दिन के अन्तर से प्रायः आ जाता हूँ, परन्तु आप पूज्यवर से भेंट न हो सकी। आपके दर्शन से मुझे प्रसन्नता होती है।''

''अच्छी बात है, वत्स! आया करो और कभी-कभी मुझ वृद्ध से भी मिल लिया करो। अच्छा, बैठो'' वे एक मंचिका पर बैठ गये। गंगेश ने बात चालू रखने के लिये कहा- ''पूज्यवर! आप अपने को वृद्ध कहते हैं, परन्तु आप वृद्ध दिखाई तो नहीं देते हैं।''

''तात! आप जैसी कला से क्षणभर में बहुत बड़े भार को इधर से उधर पटक देते हैं, वैसा तो हम युवा भी नहीं कर सकते हैं।''-शिवसुन्दर ने अपने पिता की शक्ति का प्रमाण बतलाया।

सार्थवाह थोड़े मुस्कराये। फिर अपनी भौंरे-सी काली मूँछ पर दाहिना हाथ फिराते हुए बोले- ''वत्स! यह नित्य व्यायाम, नियमित आहार-विहार और संयमित जीवन का फल है। जो आज शरीर में इतनी स्फूर्ति है और वत्स! मैं सार्थवाह-सही अर्थ में सार्थवाह का पुत्र हूँ। अपने पिता के साथ मैंने परदेश की यात्रा की है। भार को लीला मात्र में इधर-से-उधर कर देने की कला उन्हीं की देन है।'' वे अपने पिता की पावन-स्मृति से आह्लादित हो गये।

''तात! आप प्रसन्न हैं?''-शिवसुन्दर ने पूछा-''इस मध्याह्न में उपाश्रय में पधारना किसलिये हुआ था?''

''चरित-गायक-मण्डल की एक समस्या का समाधान करना था। मैं गया तो था उपाश्रय में भी। वहाँ तो गुरुदेव के दर्शन करने गया था। परन्तु संघ के कई प्रमुख सदस्य गाथापति संघदासजी के यहाँ एकत्रित हुए थे, मैं वहीं गया था।

''चरित-गायक-मण्डल कोई संस्था है क्या?''

''चरित-गायक-मण्डल एक सहज में ही जुड़ा हुआ मण्डल है। जिसमें आचार्य महाराज के प्रमुख शिष्य श्री धर्मप्रियजी मुनिराज निमित्त बने। तुम लोगों के कलायतन जाने

के बाद यहाँ एक विशिष्ट घटना घटी थी- ''इस बात से दोनों की उत्सुकता बढ़ गयी। वे दोनों एकटक सार्थवाह की ओर देख रहे थे। सार्थवाह भक्ति-भाव से गद्गद् होकर बोल रहे थे- ''आचार्यदेव तब यहाँ पधारे ही थे। गुरुदेव की वृद्धावस्था के कारण हम उनसे स्थिरवास की प्रार्थना कर रहे थे। गुरुदेव का अभिप्राय हम जानना चाहते थे और हम अपने संघ के सदस्यों को इस विषय में तैयार करना चाहते थे। इसलिये संघ की ओर से स्पष्ट रूप से प्रार्थना नहीं की थी। इसी बीच में एक विचित्र घटना घट गयी। तुमने कापालिक प्रचण्ड का नाम तो सुना ही होगा।'' यह कहकर सार्थवाह ने उनकी ओर देखा।

कापालिक का नाम सुनते ही गंगेश बोल उठा- ''जानते हैं- खूब जानते हैं। उसका नाम हमें बचपन में डराने के काम आता था।''

''हाँ, बराबर, वही कापालिक.....''

''वह अपने नगर के समीप के कानन में ही रहता था''- शिवसुन्दर उसका नाम सुनकर रोमाचिंत हो उठा, अतः वह बीच में बोल उठा- ''तात! उसके नाम से बड़े-बड़े शूर-वीर भी डरते थे। उस कानन के समीप से लोग निकलना ही नहीं चाहते थे। कई गव्यूति का चक्कर काटकर लोग जाते थे। परन्तु अभी तो वह मार्ग खूब चल रहा है। हम उस ओर परिभ्रमण करने लगे थे। अब तो वह स्थल रमणीय हो गया है। क्या कापलिक मर गया है या कहीं चला गया है?''

''कापालिक मरा नहीं है। अब तो वह पूजनीय पुरुष बन गया है। मैं तुम्हें वही घटना बतला रहा हूँ। तुमने मुनिराज श्री धर्मप्रियजी का नाम तो सुना ही होगा?''

''हाँ, कलायतन से आने के बाद यहाँ सुना।''-गंगेश ने कहा-''अर्धगव्यूति दूर उसी स्थान पर एक रमणीय विश्राम स्थल बना हुआ है। कोई उसे 'चमत्कार-विश्राम' कहता है तो कोई 'धर्मप्रिय-विश्राम'। यह क्या मुनिराज से ही सम्बन्धित स्थान है?''

''वह स्थान ही प्रमुख घटना का स्थान है।''- सार्थवाह रहस्य बतलाते हैं- ''प्रचण्ड की प्रिया ने ही उस स्थान को यह रूप दिया है। आज वह स्थान शान्ति का महान् धाम-सा बन गया है। अधिकांश लोग बहिर्मुख वृत्ति वाले हैं। वे बाहर ही शान्ति को खोजते रहते हैं। अतः शान्ति के अन्वेषक कई जन उस स्थान पर जाते हैं।''-सार्थवाह कुछ क्षण रुककर वार्ता का पुनः अनुसन्धान करते हुए बोले- ''मुनिराज धर्मप्रियजी आचार्यश्री के प्रमुख शिष्य हैं। उस समय आचार्यदेव की सेवा में ही थे। समरादित्य के पुत्र नरादित्य और भवदत्त के पुत्र गुरुदत्त के किसी के द्वारा अपहरण के कारण नगर में हलचल मची हुई थी। मुनिराज अपने एक शिष्य के साथ दीर्घशंका से निवृत्त होने के लिए उस कापालिक के कानन की ओर निकल गये। वे निवृत्त होकर लौट ही रहे थे कि अर्धनग्न दो नवयुवक उनके चरणों में

आकर गिर गये और बोले–"हमें बचाओ, गुरुदेव! वे थे नरादित्य और गुरुदत्त। उनके पीछे प्रचण्ड कापालिक भी शस्त्र लेकर दौड़ता हुआ आया। उसने मुनिराज से विवाद किया। उन्हें पाने के लिये शस्त्र लेकर मुनिराज की ओर दौड़ा। उसका कुछ भी जोर नहीं चला। उसी स्थान पर उसका जीवन पलट गया और उसी वर्षावास में वह मुनिराज का शिष्य बन गया। आज तो प्रचण्ड मुनि महान् तपस्वी संत है।" इस प्रकार सार्थवाह ने संक्षेप में वह घटना सुनायी। यह घटना सुनकर दोनों ही युवक आश्चर्यचकित रह गये।

गंगेश ने भाव-विभोर होकर कहा–"कितनी अद्भुत बात है। यह तो शान्ति और रौद्रता का द्वन्द्व था। शान्ति ने रौद्रता पर विजय पायी। पूज्यवर! जिस स्थान पर यह विजय हुई, वह स्थान अमर क्यों न बनेगा? और शान्ति का धाम क्यों न बनेगा? वह स्थान अजस्र श्रद्धा का भव्य स्रोत है। यह बात सुनकर सार्थवाह हँस पड़े, वे बोले– "आयुष्मन्! शान्ति आत्मा का गुण है। अतः वह आत्मा में ही अन्वेषणीय है। बाह्य पदार्थों में उसका आरोपण और बाह्य पदार्थों में उसकी खोज साधक को भटका देती है। उसके तले कई मिथ्या मान्यताएँ और छल पनपने लगते हैं। अस्तु, हमारी मूल बात यह है कि नरादित्य और गुरुदत्त ने मुनिराज के द्वारा अभय प्राप्त किया। उस दिन की घटना उनकी दृष्टि के समक्ष घटी थी। उस समय के भावों को उन्होंने भोगा था। उस दिन की सारी घटना गुरुदत्त ने लगभग एक मुहूर्त्त तक गीतिकाओं के माध्यम से जनता के बीच प्रस्तुत की और उन भावों का अनुभव लोगों को भी करा दिया। जनता प्रसन्न हो गई। जिस दिन गुरुदेव ने स्थिरवास की प्रार्थना स्वीकार की उस दिन उन्होंने समवेत गान किया। उनकी कला से मुनिराज प्रसन्न हुए और उनकी प्रेरणा से चरित-गायक-मण्डल अस्तित्व में आया।" सार्थवाह ने इस प्रकार बात पूरी कर दी।

"उस मण्डल के सामने अभी क्या समस्या आ गयी, जो उसके समाधान के लिये संघ के प्रमुखों को विचार-विमर्श करना पड़ा।"–शिवसुन्दर ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की। "बात यह है वत्स!"– सार्थवाह बात का सूत्र जोड़ते हुए बोले– "उस घटना को घटे सात वर्ष से अधिक समय हो गया है। कापालिक की पत्नी कहो या प्रियतमा कहो, वह उसी आश्रम में रहती है। उसने गुरुदत्त के मण्डल से यह आग्रह किया कि प्रचण्ड मुनि के जीवन-परिवर्तन की गाथा, वे लोग अभिनय-पूर्वक प्रस्तुत करें।

"इसमें क्या समस्या है?"–गंगेश ने पूछा– "यह तो अच्छी बात है। वे अभिनय से युक्त प्रस्तुत कर दें। लोगों पर भी उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आप जिसे धर्म की प्रभावना कहते हो, वह भी होगी। इसमें क्या विचार करना है?"

"वत्स! उनके मण्डल में कई लोग हैं। कुछ लोगों की प्रेरणा से एक बार उन लोगों ने अभिनय के साथ किसी चरित्र को प्रस्तुत किया। उसमें उन्होंने वाद्य-यंत्रों का भी प्रयोग

किया। यह बात कई सुज्ञजनों को अच्छी नहीं लगी। मुनिराज धर्मप्रियजी के पास भी यह बात पहुँच गयी। उनका संदेश आया-"मैंने मण्डल की स्थापना करवाकर बहुत बड़ी गलती की है, क्योंकि इस प्रकार अभिनय और वाद्ययंत्रों के प्रयोग से अपनी संस्कृति में विकार पैदा होगा। धर्म की प्रभावना तो न जाने कहाँ रह जायेगी और लोग विकारों में बह जायेंगे। इसलिए आप मण्डल का विसर्जन कर दें।" इस संदेश से नरादित्य और गुरुदत्त को बड़ा दुःख हुआ। वे मण्डल को बिखेरना नहीं चाहते थे। अतः वे मुनिराज की सेवा में पहुँचे। उनसे क्षमा माँगी और उन्हें निवेदन किया-"आप जो प्रायश्चित्त देना चाहें वह प्रायश्चित दीजिये, परन्तु इस मण्डल के विसर्जन करने की आज्ञा मत दीजिये।" तब मुनिराज ने उन्हें वाद्य यंत्रों के प्रयोग और अभिनय के प्रत्याख्यान लेने को कहा। उन्होंने सहर्ष प्रत्याख्यान ले लिये। उन्होंने स्वयं भी कुछ भावनाएँ बना ली हैं कि अधिकतर धर्मस्थानों में ही चरित-गान करना। प्रधानरूप से तीर्थंकरों के चरित्र प्रस्तुत करना और अन्य महापुरुषों के चरित्र आवश्यकता हो तो गौण रूप से प्रस्तुत करना। इन सब कारणों से उनके सामने समस्या उत्पन्न हो गयी थी, क्योंकि वह बहिन अपना आग्रह छोड़ ही नहीं रही थी और वे भी अपना नियम भंग करके अपने उपकारी मुनिराज के मन को व्यथित करना नहीं चाहते थे।"

"तो फिर क्या समाधान हुआ।"-शिवसुन्दर ने पूछा।

"उन्होंने अपनी समस्या संघ के समक्ष रख दी। अतः संघ के प्रमुख सदस्यों का यह कर्तव्य हो गया कि वे उसका समाधान करें। उस बहिन को बुलवाया। उसे विविध प्रकार से समझाया। परन्तु उसने कहा-"अभिनय न सही। भले ही वाद्ययंत्रों का प्रयोग न किया जाय। परन्तु 'चरित-गायन' अवश्य हो, क्योंकि मैंने सुना है कि इन्होंने उसी दिन जो घटना-प्रसंग का गान किया था तो उसका अपूर्व प्रभाव हुआ था और उनका वह घटना-गान ही इस चरित गायक-मण्डल की स्थापना का कारण बना। जो इसके जन्म का मूल कारण है, उस चरित का गान ये क्यों नहीं कर रहे हैं?" तब गुरुदत्त ने चरित-गान स्वीकार किया। उसकी इच्छा उपाश्रय में ही चरित-गान की थी। परन्तु बहिन ने आग्रह किया-"यह कार्यक्रम मुनिराज-विश्राम स्थल पर हो।" हमने उसकी बात का अनुमोदन करते हुए कहा-"ऐसा करने में तुम्हारे किसी भी नियम का भंग नहीं होता है। बहिन की इतनी-सी बात को मान देना तुम्हारा कर्त्तव्य है।" उन्होंने इस बात को स्वीकार करते हुए कहा- "उस प्रसंग पर अपने समाज के लोगों को वहाँ। अवश्य पहुँचना चाहिए।" संघदासजी ने कहा- 'इसका उत्तरदायित्व मुझ पर।' गुरुदत्त पूरे प्रसंग को गीतियों में बाँधेगा। लगभग तीन मुहूर्त्त जितना कार्यक्रम होगा। चरित-गान-मण्डल के अधिकांश सदस्य गान में भाग लेंगे।"

"कब होगा- यह कार्यक्रम?क्या अन्य समाज के लोग भी भाग लेंगे?"-गंगेश ने

उत्सुकता से पूछा। "यह तो सार्वजनिक कार्यक्रम है। उपाश्रय में भी अन्य समाज के लोग अपनी इच्छानुसार आते ही हैं। यह कार्यक्रम परसों प्रथम प्रहर के अन्तिम मुहूर्त से प्रारम्भ होगा।"

गंगेश ने कहा- "पूज्यवर! मेरी जिज्ञासा है- मण्डल के पीछे इतने कठोर निषेध क्यों हैं? जब आपके यहाँ इतने सक्षम और कुशल अभिनेता और गायक हैं तथा वे स्वेच्छा से सेवा देने के लिये तत्पर हैं, तब उन्हें धर्म-प्रचार में विशिष्ट सहयोग देने से क्यों रोक दिया गया?"

"आयुष्मन्! स्थूल दृष्टि से यह बात धर्म-प्रचार में अवरोधक लगती है, परन्तु इनमें रहे हुए भाव को समझने के लिये जरा गहराई में जाना होगा। अभिनेता और गायक रागी ही होते हैं। वे विकारी भावों के ही भोक्ता हैं। अतः वे विकारी भावों का अभिनय ही स्वाभाविक रूप से वास्तविक रूप से कर सकते हैं, शान्त भावों का नहीं, क्योंकि वे न तो शान्त भाव के भोक्ता होते हैं और न अनुभवी ही। अतः लोक-हृदय में उन्हीं भावों का- विकारी भावों का ही प्रमुख रूप से संप्रेषण होगा और लोग भी उन्हीं भावों को ग्रहण करेंगे, क्योंकि द्रष्टा भी उन्हीं भावों में रमण करने वाले होते हैं। दृश्य भावों के प्रसार अति संक्रामक होते हैं। गायन में यह भय नहीं है। वस्तुतः शान्त भाव अभ्यास की वस्तु है- अभिनय की वस्तु नहीं।"

"परन्तु तात! मैंने सुना है"- शिवसुन्दर बोला- "शास्त्रों में देवों के द्वारा तीर्थंकर-चरित्र के अभिनय की बात तो आती है।"

सार्थवाह ने पूछा- "यह तुमने कहाँ से जाना?" "कलायतन में ही दृश्यकाल के अध्ययन के समय कलाचार्य ने कहा था। तो क्या यह बात सही नहीं है?"

"बिलकुल सही है, आयुष्मन्! परन्तु वह देवों का अपना विशिष्ट व्यवहार है और वह भी तीर्थंकर भगवन्तों के समक्ष ही यह व्यवहार निभाते हैं। कोई भी मनुष्य इस क्रिया को नहीं करता। इसे कहीं भी धर्म-प्रभावना का अंग नहीं माना।"

"गायन भी विचारों का संप्रेषण करते हैं और विचार संप्रेषण के लिये ही क्या उनका गान किया जाता है?"-गंगेश ने पूछा।

"तुम्हारा कहना ठीक है"- सार्थवाह स्पष्टीकरण करते हैं- "परन्तु गान भाषा रूप में होता है। गान में भाव- संप्रेषण के साथ विचार-परिमार्जन का सुयोग किया जाता है। श्रोता गान में विचारों की आवृत्ति के साथ भाव में लीन होता है और विचार उसमें परिमार्जित होते हैं। इसलिये विकारी भावों के प्रसार का अवकाश नहीं रहता। इसमें तुम वाद्ययंत्रों के निषेध की बात को भी सरलता से समझ सकते हो।"

गंगेश आश्चर्य से बोला- "कितनी सूक्ष्म विचारणा है!" (क्रमशः)

आचार्यपद रजतवर्ष

शत-शत अभिनन्दन आचार्यप्रवर 'हीरा' का

महासती श्री (नाम ज्ञात नहीं)

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. जिनशासन में एक उत्तम साधनाशील प्रभावी आचार्य हैं, उनकी महिमा का आकलन करने में पैनीदृष्टि की धनी रत्नसंघीया महासतीवर्या ने निपुणता का प्रशस्त प्रयोग किया है, किन्तु प्रयत्न करने पर भी उनका नाम ज्ञात न हो सका, अतः इस भावाभिव्यक्ति को बिना नाम के ही प्रकाशित किया जा रहा है। भक्त को भगवान का नाम ही स्मरण करना चाहिए, अपना नहीं। -सम्पादक

"नमोऽस्तु रत्नान्वयभूषणाय
नमोऽस्तु ते मोहिनीनंदनाय।
नमोऽस्तु मोती-जनकात्मजाय,
नमोऽस्तुहीराख्यगणाधिपाय।।"

महापुरुषों के जीवन का हर पल प्रेरणा स्रोत होता है। गणि हीरा का रजत पदारोहण वर्ष विशेषतः नई चेतना का संचार कर रहा है। कुशल रत्नसंघ के कुशल नायक आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचंद्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण रजत वर्ष पर भावों की अभिव्यक्ति को शब्दों में ढालने का यह प्रयास वस्तुतः असफल प्रयास है, मन मान रहा है-

"शब्दों की सीमा में क्या असीम है बँध सकता?
पोरों की मापो में क्या ब्रह्माण्ड है सिमट सकता?
पर भक्ति की यह बिन्दु सिन्धु में अस्तित्व बना लेगी,
आचार्य पदारोहण रजत वर्ष पर भावों को उंडेल देगी।"

आचार्य का पद अत्यन्त गरिमामय दायित्वपूर्ण पद है। इस पद की योग्यताएँ भी विशिष्ट होती हैं। आचार्यों को तीर्थंकर के प्रतिनिधि की संज्ञा दी गई है। 36 गुण और 8 सम्पदा से प्रवर्धमान वर्तमान में वर्धमान के शासन को शोभायमान करने वाले गणि हीरा आगमवर्णित प्रव्रज्याचार्य, दिगाचार्य, उद्देसनाचार्य, समुद्देशनाचार्य, वाचनाचार्य एवं उपस्थापनाचार्य हैं। श्रद्धावान, सत्यवादी, मेधावी, बहुश्रुत, शक्ति सम्पन्न, अल्पाधिकरण इन 6 स्थानों से संपन्न होने के कारण गुरु हीरा महान् गुरु हस्ती द्वारा मनोनीत रत्नसंघ में आचार्य पद से अलंकृत हैं।

गणि हीरा पंच परमेष्ठी के केन्द्र में विराजमान होते हुए भी सबके आकर्षण के केन्द्र हैं।

लगता है सब पूर्वाचार्यों का साया आपकी छाया में समाया है। आपमें आचार्य कुशलेश की कार्यकुशलता, आचार्य गुमान की गुण-ग्राहकता, आचार्य रत्नचंद्र की निःस्पृहता, आचार्य हमीर की हँसमुखता, आचार्य कजोड़ी की कोमलता, आचार्य विनयचन्द्र की प्रज्ञा-तेजस्विता, आचार्य शोभा की दूरदर्शिता, आचार्य हस्ती की सर्वप्रियता परिलक्षित होती है।

मनमोहक व्यक्तित्व और वर्चस्वी कर्तृत्व का नाम है- गुरु हीरा।

ग्रंथ और पंथ की सीमा से असीम व्यक्तित्व का नाम है- गुरु हीरा।

समग्र और संतुलित स्व पर कल्याणकारक नेतृत्व का नाम है- गुरु हीरा।

गुरु हीरा में इन्द्रधनुष-सी मोहकता, स्फटिक-सी प्राञ्जलता और बालसुलभ ऋजुता है। मंत्रमुग्ध करने वाला व्यक्तित्व है, शासन संचालन की क्षमता है, गुरु हस्ती की आभा जिनकी हर कृति में झलकती है, गुणों की सौरभ से जिनकी जीवन-बगिया महकती है, गुणानुराग और भक्ति ही मुझ अल्पज्ञा को गुण गाने को उत्सुक करती है। वैसे हीरा का मोल जौहरी ही कर सकता है, पर ''जहाँ हीरा वहाँ जगमगाहट-चमचमाहट'' होनी ही है, हीरा छुपा रह नहीं सकता। गणि हीरा के गुण भला कैसे प्रगट न हों-

''चैत्र कृष्णा अष्टमी कृष्ण पक्ष कल्याणक शुभ वार,
सिंहनी जैसे सिंह जन्म दे धन्य मोहिनी नार।।''

जिन्हें गुरु हस्ती का स्नेह, संरक्षण और सम्यक् मार्गदर्शन मिला, पुरुषार्थ के साथ-साथ जिनका सौभाग्य खिला और संरक्षक गुरु हस्ती को संथारा करवाने का सुअवसर मिलने के साथ-साथ निमाज ग्राम में गुरु हस्ती से मनोनीत हस्तलिखित रूप में सर्वोच्च पद मिला। ''सूर्य एक रश्मियाँ अनेक, पुष्प एक पखुडियाँ अनेक, पद एक विशेषण अनेक'' आप एक में अनेक ही नहीं आप All in one अलबेले आचार्य हैं। आपकी कतिपय प्रमुख विशेषताओं को निहारने का प्रयत्न किया जा रहा है-

1. **प्रवचन प्रभावक आचार्य**- मोकलसर में शेषकाल में प्रभावी प्रवचन को सुनकर वृद्ध श्रावकगण जो मूर्तिपूजक समाज के थे, उन्होंने हम सती मण्डल के समक्ष प्रवचन के पश्चात् आचार्य भगवन्त से कहा- हमने आज तक ऐसा प्रभावी प्रवचन किसी का नहीं सुना। हम स्थानकवासी परम्परा में से जब भी चौमासा करायेंगे तो आपका करायेंगे।

गले में गणि हीरा के, खुदा की अजीब बरकत है।
वो बोलते हैं तो एक रोशनी सी होती है।

जैन समाज में आपके प्रवचनों की अनूठी छाप है और आपके प्रवचन की पुस्तक पढ़कर आजीवन रात्रिभोजन के त्यागी बनने वाले राष्ट्रीय अध्यक्ष पी.एस. सुराना

हैं।

2. **प्रमाद-परिहारक आचार्य-** आप संयम-समाचारी में सजग होने के साथ-साथ शिष्य-शिष्याओं को सावचेत करते रहते हैं। प्रमाद का परिहार कराने हेतु स्वयं साधना चार्ट भरकर संत-सतियों से हर दो माह बाद चार्ट मंगवाकर बारीकी से अवलोकन करते हैं, फिर प्रमाद परिहार हेतु शिक्षा भी प्रदान करते हैं।

3. **प्रेरक आचार्य-** संत-सतियों को ज्ञानाराधन में पुरुषार्थ करने की प्रभावी प्रेरणा तो करते ही हैं, साथ ही साथ श्रावकों को भी सामायिक, प्रतिक्रमण, शास्त्र के पाठ स्वयं देकर उन्हें ज्ञान के मार्ग में जोड़ते हैं। बालोतरा में हमने आपको युवकों से व्यक्तिगत सम्पर्क साधकर व्यसन-मुक्ति की प्रबल प्रेरणा करने वाले प्रेरक आचार्य के रूप में देखा है।

4. **पंचाचार-पालक आचार्य-** आचार ही आपकी धड़कन है और आचरण ही आपकी श्वास है। पंचाचार के पालन से ही आप अंदर से दिव्य और बाहर से भव्य बनकर जिनशासन के मूर्धन्य आचार्य बनकर शासन की अपूर्व सेवा कर रहे हैं।

5. **पाप-ताप-संताप निवारक आचार्य-** चौरासी के चक्र को समाप्त कराने में प्रवीण आपने 84 मुमुक्षओं को संयम प्रदान कर उनके पाप का निवारण किया है। उन्हें सर्वविरति धर्म से जोड़कर ताप और संताप से बचाया है। यह आपकी महान् परोपकारिता है।

6. **प्रकृष्ट-प्रणम्य आचार्य-** आपकी समतामूलक साधना से प्रभावित होकर पल्लीवाल क्षेत्र में गुरु भक्तों ने 1008 बार विधिवत् वंदना का क्रम जारी किया और आपके 53 वें दीक्षा-दिवस पर मुरारीलालजी ने 5353 बाद वंदना कर महती कर्म निर्जरा कर अपने को कृतकृत्य माना है। आप वंदनीय पूजनीय आचार्य हैं।

7. **आज्ञा-आराधक आचार्य-** प्रभु आज्ञा को पालने में गणिहीरा सदैव तत्पर हैं। आप गुरु हस्ती के चरण-कमलों की उपासना, आज्ञा-पालना में सदैव तल्लीन रहे हैं। गुरु आज्ञा ही श्वास, गुरु-भक्ति ही विश्वास और गुरु चरणों में वास आपका जीवन मंत्र रहा है। Agreement No Argument यह आपकी जीवन की शैली रही है। विज्ञ कभी भगवदाज्ञा व गुरु आज्ञा का उल्लंघन नहीं करें (आचारांग सूत्र, 5.6), इसको अक्षरशः आपने जीवन में जीया है।

8. **आगम-मुखी आचार्य-** आगम आज्ञा को आगे रखकर दिन-चर्या-विहारचर्या संयमचर्या से संयमी जीवन का निर्माण करने वाले आप आगम आज्ञा के पालक

आचार्य हैं। आप कई बार उपवास के तप में प्रातः से सायं तक आगम-स्वाध्याय करने वाले आगममुखी आचार्य हैं।

9. **अन्तर्मुखी आचार्य-** तीर्थ-सेवा के सोपान- समयदान आगमज्ञान एवं क्रियापालन के अलावा अपने आप में निमग्न रहने वाले आचार्य हैं। पाट पर विराजमान रहते हुए भी पास में बैठे संत-सती, श्रावक-श्राविका क्या चर्चा कर रहे हैं, आचार्यश्री सबसे बेखबर होकर अन्तर्मुखी बनने की साधना में लीन रहते हैं।

10. **आदर्श आचार्य-** दर्पण की तरह दोषों का ज्ञान कराने वाले और प्रतिक्रिया से परे आचार्य भगवन्त आदर्श आचार्य हैं। आदर्श किसी का संग्रह नहीं करता, वैसे ही दर्पण की तरह संग्रह-संपदा के धारक होते हुए भी निरर्थक विचार आग्रह-विग्रह का संग्रह नहीं करने वाले आदर्श आचार्य है। आप चतुर्विध संघ के लिए Ideal आदर्श आचार्य बने हुए है।

11. **संयम मुखी आचार्य-** 'संयमः खलु जीवनम्' उक्ति को अक्षरशः जीवन में चरितार्थ करने वाले आप संयममुखी आचार्य हैं। आज के इस ग्लोबल युग में भी आपका सिद्धान्तों से समझौते का कोई रूप नहीं है। वही सादगी आज भी हम सबको दृष्टिगोचर होती है। Be simple, be an example का जीता जगता आपके जीवन का उदाहरण संयमियों के संयम पोषण में मूक प्रेरणादायी है।

12. **ह्रीं सपन्न आचार्य-** ह्रीं का अर्थ मंत्रों में 'कल्याण' किया गया है। आप लोक-व्यवहार को निभाते हुए सबके कल्याण में सन्नद्ध हैं। सबके मंगल कल्याण की कामना करने वाले कल्याणकारी आचार्य का दर्शन ही कल्याणकारी और मांगलिक ही पीडाहारी है, कुछ आँखों देखे ऐसे नज़ारे है जो ह्रीं सपन्नता को उजागर करने वाले हैं। आचार्य भगवन्त चेन्नई में विराज रहे थे-

1. प्रकाशचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वासी) की नव-विवाहित पुत्रवधू के हाथों में अचानक कंपन होने से इलाज-उपचार के बाद गुरु हीरा के पास लेकर आए, उनका हाथ कंपित हो रहा था। गुरुदेव ने 3 दिन मांगलिक सुनाई, रोग शांत हो गया।

2. ताहराबाद में काँकरिया परिवार की सुपुत्री छाया 13 दिनों से बेसुध थी। गुरुदेव के ताहराबाद में पधारने पर स्थानक में लाए। साधनापूत मांगलिक के श्रवण से वह होश-हवास में आ गई।

3. धूलिया चातुर्मास में ब्यावर निवासी श्री विमलचन्दजी सुराणा के सुपुत्र को आपने मांगलिक तीन बार सुनाई। जो मोनू सुराणा शादी के बाद कुछ खा-पी नहीं सकता,

वमन कर देता था, उसकी कई महीनों तक यह स्थिति रही। बड़े-बड़े शहरों में उपचार चला। पहली मांगलिक में थोड़ा पेट में टिकने लगा। तीसरी मांगलिक में तो भोजनालय में उसने पेट भर भोजन कर लिया और स्वस्थ होकर ब्यावर गया।

4. सवाईमाधोपुर में राजेन्द्रजी चौधरी की सुपौत्री एवं जयपुर में डॉ. प्रेमचन्दजी लोढ़ा की सुपौत्री को आपकी भाव मांगलिक से नवजीवन मिला है। कमल किशोर जी कांकरिया, प्रकाशजी बोथरा का स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया कि अस्पताल में नाड़ी शून्य पर आ गई। भाव मांगलिक के प्रभाव से दोनों को नवजीवन मिला है। मीठालालजी मधुर की धर्मसहायिका श्रीमती कमलाजी को ब्रेन हेमरेज और फिट्स की स्थिति में पालड़ी, अहमदाबाद से भाव मांगलिक मिलने से फिट्स बंद हो गए। जीवन दान पाने वाले लोग गुरु के उपकारों का कथन करते हैं। परन्तु आप प्रशस्ति प्रिय आचार्य नहीं, साधना प्रिय आचार्य है।

13. **श्री सम्पन्न आचार्य-** ज्ञान का ऐश्वर्य, दर्शन-चारित्र की संपदा, गणि सम्पदा, शिष्य-शिष्याओं की संपदा और क्षमा संपदा होने से आप श्री संपन्न आचार्य हैं। आप गज-लक्ष्मी गुरु के शिष्य रत्न लक्ष्मी के भण्डार हैं।

14. **धी संपन्न आचार्य-** आचार्य श्री का Intellectual Quotient (I.Q.) उत्तम और सधा हुआ है। आप प्रबुद्ध शास्ता हैं, सबके हित-अहित का चिंतन कर फिर निर्णय लेते हैं। आपमें विद्या, विनय और विवेक का अद्भुत संगम है- संघर्ष एवं संकट की वेला में आपकी सूक्ष्म प्रज्ञा ही पथ प्रशस्त करती है- "अभयमुनिजी एवं महासतीजी चन्द्रकलाजी को स्वास्थ्य लाभ" आपकी सूझबूझ एवं श्रावकों की उचित समय पर क्रियान्विति से समय पर मिला है।

15. **धृति संपन्न आचार्य-** आपमें धैर्य का गुण भी अपूर्व है। साधक-साधिकाओं की संयम में कमी को सुनकर भी आप तुरन्त विपरीत धारणा नहीं बनाते। उनसे पृच्छा करते हैं, सुधरने का अवकाश देते हैं, आत्मीयता भरे अनुशासन से वात्सल्य प्रदान कर दोष निवारण का भरसक प्रयत्न करते हैं।

16. **ज्ञान-योगी आचार्य-** ज्ञानाराधना में निरत आपका जीवन प्रेरणास्पद जीवन है। श्रावकों को मार्गदर्शन संत-सतियों को आवश्यक सूचन आगन्तुक दर्शनार्थियों को प्रेरणा करने के बाद आप तुरन्त स्वाध्याय में रमण करने वाले ज्ञान-योगी आचार्य हैं।

17. **ध्यान-योगी आचार्य-** आध्यात्मिक ऊँचाई पर आरोहण करने वाले आचार्य भगवन्त ऊर्जा का रूपान्तरण कर ऊर्जा का सदुपयोग कर जन-जन को बोध दे रहे हैं। आपका ऊर्जावलय दिव्य है, जिसमें प्रवेश के साथ व्यक्ति स्वयं को आपसे जुड़ा

महसूस करता है।

18. **भक्ति योगी आचार्य**- आपके श्रीमुख से प्रभु भक्ति के स्वरों को सुनकर हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। गुरु-भक्ति भी आपकी बेजोड़ है- **न हि कृतमुपकारं विस्मरन्ति साधवः।** आपके लिए गुरु हस्ती हृदयहार सर्वस्व बने हुए हैं। ''मुझे भगवन्त (गुरु हस्ती) चलाते हैं, मैं मन से नहीं चलता''-ये वाक्य आपके श्रीमुख से हस्ती जन्म-दिवस पर हमने कानों से सुने हैं। प्रवचनों में भी 'भगवन्त फरमाते थे', इसका प्रयोग करते हुए विनयभाव और कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

19. **कर्म-योगी आचार्य**- आपने अपने आचार्य काल में उत्तर से दक्षिण तक पदयात्रा से पतितों को पावन बनाया है। करणीय कार्यों को करते हुए आपने सामायिक-स्वाध्याय एवं व्यसन-मुक्ति से भक्तों की सूनी बगिया को सरस बनाया है। पथ-प्रदर्शक बनकर गीता के अनुसार 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' निष्काम कर्म योगी के रूप में आपने अपनी पहिचान बनाई है।

20. **कर्त्तव्य-निर्धारक आचार्य**- आप कर्त्तव्य परायण आचार्य होने के साथ कर्त्तव्यों का बोध कराने वाले, कर्त्तव्यों का निर्धारण करने वाले गणिप्रवर हैं। चतुर्विध संघ के हर घटक को कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाने वाले और अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर कामना से परे जीवन को निर्लेप रखने वाले हैं।

21. **समता-साधक आचार्य**- दक्षिण में नायकनेरी में अस्वस्थ होने पर महाराष्ट्र में खापोली खण्डाला घाट के मध्य मार्ग में स्वास्थ्य बिगड़ने पर, अलीगढ़ में नस का दर्द उठने पर भी आप समता से विचलित न होकर गुरु भक्ति एवं गुरु नाम के स्मरण से स्वस्थ होने वाले समता के सुमेरु साधक आचार्य हैं। कर्नाटक में बाड़े में गोबर की गंध एवं रात-भर मच्छरों के उपद्रव में भी बैठे-बैठे समता के साथ रात्रि व्यतीत करने वाले All is well कहने वाले समता साधक हैं।

22. **दोष-विसर्जक आचार्य**- आप अपने दोषों की 'निंदामि गरिहामि' से आलोचना कर सहवर्ती आज्ञानुवर्ती साधक-साधिकाओं के असंयमजनित दोषों का विसर्जन कराने में समर्थ दोष-विसर्जक आचार्य हैं। आप गलती पर सचोट प्रहार भी करते हैं, गलती का एहसास भी कराते हैं और जागरूकता हेतु सचेष्ट भी करते हैं।

23. **वात्सल्य-वर्षक आचार्य**- आपके सान्निध्य में आने वाला भक्त अपने आपको निहाल महसूस करता है। आपके स्नेह-वात्सल्य पूरित वचनों को श्रवण कर हमें ताजगी महसूस होती है। हमारी सारी थकान आधि-व्याधि दूर हो जाती है।

"तुम गगन के चन्द्रमा हो, मैं धरा की धूल हूँ।
तुम वात्सल्य के देवता हो, मैं समर्पित फूल हूँ।।"

आप 'पडिरुहो तेइस्समो महुरवक्खो घिइमन्तो' गुणों के धारक आचार्य हैं।

24. **गुरुत्वाकर्षक आचार्य**– गुरु की अपनी विशेषता ही गुरु का अपना गुरुत्वाकर्षण है, जिसके प्रभाव से सामने वाला बिना किसी निमंत्रण के खिंचा चला आता है। क्या है गुरु में जो शिष्य को खींच लाता है, वो कौनसी चुम्बक है जो अपनी ओर खींच लेती है? वह है गुरु का ज्ञान, गुरु का अनुभव, गुरु की साधना। आचार्य हीरा गुरु हैं। वे गुणों से ही गुरुत्वाकर्षक आचार्य हैं, इसीलिए जो एक बार दर्शन कर लेता है वह गुरु का हो जाता है, जुदा होना भी पड़े तो पुनः चरणों में लौट आता है।

25. **शासन संरक्षक आचार्य**– आचार्य जिनशासन के उत्तराधिकारी होते हैं। शासन के संरक्षक होते हैं। अधिकार की चाहना से अधिकार नहीं मिलते, किन्तु कर्त्तव्य के प्रति समर्पण से सारे अधिकार मिलते हैं। वीतरागी से शासन की स्थापना होती है और आचार्यों से शासन की सुरक्षा होती है। जिनशासन सदा जयवन्त है, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, मनस्वी आचार्यों से इस जिनशासन की बगिया सुरभित प्रफुल्लित है। मैंने उपकारी आचार्य भगवन्त गुरु हस्ती के अप्रतिम शासन में आसन पाया है तो गुरु गणि हीरा के शासन में मरुस्थल बने जीवन को मधुवन बनाने का प्रयास किया है। गुरु हीरा के लिए यह कहना उचित है– "मैं एक लम्हे में सदियाँ देखती हूँ, तुम्हारे साथ एक लम्हा बहुत हैं" आपका कल्याणकारी नेतृत्व मुझे लम्हे रूप में नहीं, सदियों तक युगों–युगों तक मिले। आपमें Connecting-commanding-Thinking-understanding एवं logic power है, जिससे यह रत्न संघ सदियों तक ऊँचाइयों के शिखर को छू सके। आप सदियों तक चतुर्विध संघ को ज्ञान का आलोक बाँटते रहें, आपके कृपा परफ्यूम से हम सब महकते रहें। हमारी जिन्दगी में प्रेरणा का रिंग–टोन बजता रहे।

"अंतर की आभा से करते रहो प्रभो! पथ प्रदर्शन।
हे विभो! उपकृत करो स्वीकारो रजत वर्ष पे अभिनन्दन।"

आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को दक्ष हिन्दी आशुलिपिकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यता–विवरण के साथ निम्नांकित पते पर आवेदन करें।– पूरणराज अबानी, महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर–342001 (राज.), फोनः 0291–2636763

युवा-स्तम्भ

सितारा व्यक्तियों का शाकाहार-प्रेम

डॉ. दिलीप धींग (एडवोकेट)

देश-दुनिया में शाकाहार के प्रति आकर्षण निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह आकर्षण आम आदमी में तो बढ़ ही रहा है, सभी क्षेत्रों के अनेक नामचीन व्यक्ति भी शाकाहारी जीवनशैली अपनाकर लोगों को अच्छा सन्देश दे रहे हैं। यहाँ हम मौजूदा वक्त के कुछ ऐसे सितारों का उल्लेख कर रहे हैं, जिन्होंने फिल्म, अभिनय या खेल की दुनिया में काफी शोहरत कमाई है।

वर्ष 2015 में फिल्म अभिनेता, निर्माता, निर्देशक आमिर खान ने मांसाहार पूरी तरह से छोड़ दिया। उनके जीवन में यह परिवर्तन एक वीडियो फिल्म देखकर आया, जो उनको उनकी पत्नी किरण राव ने दिखाया। वीडियो देखकर खान ने बताया कि किसी चिकित्सक के द्वारा तैयार उस घण्टे भर के वीडियो में पन्द्रह प्रकार की प्रचलित घातक बीमारियों का जिक्र था, जो मांसाहार तथा गलत खानपान से होती है। वीडियो देखकर उन्होंने शाकाहारी जीवन शैली अपना ली। इस प्रेरक घटना के अनुसार शाकाहार के लिए तथ्यों की प्रस्तुति में निम्न घटक उत्प्रेरक सिद्ध हुए -

1. तथ्यों पर आधारित शाकाहार विषयक वीडियो फिल्म तैयार करने और दिखाने से लोगों के मन पर अनुकूल प्रभाव होता है।
2. आयुर्विज्ञान और स्वास्थ्य की दृष्टि से चिकित्सक यदि शाकाहार की श्रेष्ठता बताते हैं तो उसका विशेष प्रभाव होता है।
3. शाकाहारी जीवनशैली की श्रेष्ठता को स्थापित करने में घर की महिला सदस्यों (माता, पत्नी, बहिन, भाभी, चाची इत्यादि) की भूमिका बहुत असरकारक होती है।

उल्लेखनीय है कि आमिर की फिल्म 'पीके' में सह-अभिनय करने वाली अनुष्का शर्मा भी मांसाहार पूरी तरह से छोड़ चुकी है। लेकिन दिलचस्प यह है कि अनुष्का को मांसाहार-त्याग का सबक उनके प्यारे पालतू शाकाहारी कुत्ते से मिला, जो किसी भी प्रकार के मांस की गंध बिलकुल पसन्द नहीं करता है।

श्रीलंका में जन्मी जैकलीन फर्नाण्डीज को बॉलीवुड में सौन्दर्य परी (ब्यूटी क्वीन) माना जाता है। वे अपने शाकाहारी होने के अनुभव साझे करते हुए कहती हैं - ''यदि आप पशु-पक्षियों पर अत्याचार रोकना चाहते हैं, पर्यावरण और आपका स्वास्थ्य बचाना चाहते हैं

तो शाकाहारी होना सबसे अच्छा कदम है।'' वस्तुत: शाकाहार का सौन्दर्य से गहरा नाता है। शाकाहार प्राकृतिक सौन्दर्य की रक्षा तो करता ही है, वह शारीरिक सौन्दर्य का भी एक नैसर्गिक कारण है। शाकाहार का कम वसा वाला सरस भोजन शरीर को सुडौल बनाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि शाकाहार से अर्जित सौन्दर्य दीर्घकालिक होता है। शाकाहार से मोटापा, तनाव और आवेश का निवारण होता है, इससे तन-मन चुस्त और प्रसन्न रहते हैं। यह एक सुस्थापित तथ्य है कि किसी भी प्रकार के मांसाहार में विटामिन 'सी' बिलकुल ही नहीं होता है। विटामिन 'सी' रोग-निवारक, आरोग्यदायी और कमनीयता बढ़ाने वाला होता है, जिसे शाकाहार से ही प्राप्त किया जा सकता है।

पशु-पक्षियों के साथ नैतिक व्यवहार करने वाले लोगों की संस्था 'पेटा' (पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स) द्वारा 2012 में 'मशहूर शाकाहारी' (होटेस्ट वेजिटेरियन) का खिताब जीतने वाली बॉलीवुड अभिनेत्री विद्या बालन कहती हैं कि उनके छरहरे और लचीले बदन का राज शाकाहार ही है। बॉलीवुड अभिनेत्री मल्लिका शेरावत भी अपनी सुन्दरता का कारण शाकाहार को ही मानती हैं। एक बार उन्होंने कहा था कि वे ऐसे शख्स को अपना जीवन साथी चुनेंगी, जो पूर्ण शाकाहारी हो तथा मद्यपान और धूम्रपान भी नहीं करता हो।

पेटा द्वारा 2013 में 'मशहूर शाकाहारी' घोषित अभिनेता विद्युत जाँवल ने मात्र 14 वर्ष की उम्र में ही शाकाहार अपना लिया था। उनका मानना है कि अभिनय के लिए आवश्यक उनके शरीर की लयबद्धता का एक कारण उनका शाकाहारी होना है। 2013 में ही पेटा द्वारा 'मशहूर शाकाहारी' घोषित कंगना राणौत अभिनय के लिए मुम्बई आने के उपरान्त पूर्णत: शाकाहारी बन गई थी। चर्चित फिल्म 'क्वीन' की नायिका कंगना के अनुसार शाकाहारी जीवन शैली ने उनको सकारात्मक बनाया है। उनके रूप व लावण्य का राज भी शाकाहार ही है।

वर्ष 2014 में पेटा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा वरिष्ठ अभिनेत्री रेखा को 'मशहूर शाकाहारी' घोषित किया था। रेखा के अनुसार निर्दोष आध्यात्मिक जीवन के लिए शाकाहार जरूरी है। 'बिग बी' अमिताभ बच्चन के बारे में तो सब जानते ही हैं कि वे इस उम्र में भी स्वस्थ और सक्रिय हैं और उनकी इस बेहतरीन सेहत का राज है उनका शाकाहारी होना। उल्लेखनीय है कि अमिताभ अलग-अलग वर्षों में पेटा द्वारा तीन बार 'मशहूर शाकाहारी' घोषित किये गये हैं।

अच्छी पुस्तकें भी व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का कारण बनती हैं। अभिनेता शाहिद कपूर को उनके पिता पंकज कपूर ने ब्रियन हिनेस की शाकाहार का महत्त्व बताने वाली पुस्तक 'लाइफ इज़ फेयर' पढ़ने के लिए दी। पुस्तक पढ़कर शाहिद शाकाहारी

हो गये। इजरायली-अमेरिकी अभिनेत्री नताली पोर्टमैन वर्ष 2011 में उस समय शाकाहारी हो गई, जब वे गर्भवती थीं। शाकाहार की प्रेरणा उन्हें जोनाथन सफ्रैन की पुस्तक "ईटिंग एनिमल्स" से मिली। उन्होंने अपने ब्लोग पर लिखा कि मांस के लिए पशुओं का संवर्धन और कत्ल पर्यावरण की दृष्टि से बेहद नुकसानप्रद है। इसके अलावा मांस उद्योग से कत्लखाना-कर्मचारियों का अहित भी होता है। उनका वैवाहिक भोज भी पूरी तरह से शाकाहारी था।

देश-विदेश के सिनेमा, अभिनय और कला संसार के अनेक सितारे किसी न किसी कारण से शाकाहार को अहमियत देते हैं। बॉलीवुड की करीना कपूर, आर. माधवन, लारा दत्ता, सोनू सूद, नेहा धुपिया, आयशा तकिया आजमी, रिचा चड्ढ़ा, महिमा चौधरी, दिया मिर्जा, अदिति गोवित्रीकर, केलिना जेटली, तमिल अभिनेत्री अमला अक्किनेनी जैसे अनेक सितारों ने भी शाकाहार को अपनाया और लोगों को शाकाहारी होने का सन्देश दिया है। हॉलीवुड के सितारों में भी शाकाहार के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है।

हॉलीवुड में टीवी की लोकप्रिय शख्सियत एलेन डिजेनर्स ने वर्ष 2009 में ही शाकाहार अपना लिया था। उनकी भागीदार आस्ट्रेलियन-अमेरिकन अभिनेत्री पोर्शिया डि रोसी भी शाकाहारी हैं। उन्होंने एक निरामिष दावत में स्वीकार किया कि उनका शाकाहारी होने का निर्णय इतना आसान नहीं था, लेकिन इच्छाशक्ति से सब संभव है। उन्होंने अपनी वेबसाइट में भी शाकाहारी व्यंजन दर्शाये हैं। हॉलीवुड अभिनेत्री पामेला एंडरसन तो एक पशु अधिकार कार्यकर्ता हैं। वे पिछले 20 वर्षों से पूर्ण शाकाहारी हैं। उन्होंने एक आहार संबंधी वेबसाइट भी लांच की, जिसमें सिर्फ शाकाहारी व्यंजनों का ही उल्लेख है। वे कहती है - "मेरा रेफ्रिजरेटर गोभी, फलों और सब्जियों से भरा रहता है। मैं किसी भी किस्म का गोश्त खाने की कल्पना ही नहीं कर सकती।"

विदेशों में अभिनय-संसार से जुड़े रिचर्ड गेरे, टुबे मैग्वरे, एलेस बैल्डविन, ओरनाल्डो ब्लूम, लौरेन बुश, संगीतज्ञ पॉल मैकार्टनी, जेम्स केमेरन, रसेल ब्रैंड, क्रिस्टन बेल, शानिया ट्वैन, ब्रियान एडम्स आदि अनेक नामी कलाकार शाकाहारी हैं। वे लोगों को शाकाहारी होने की प्रेरणा भी देते हैं।

फिल्म और टीवी कलाकारों के अलावा खिलाड़ियों में भी शाकाहार के प्रति आकर्षण देखा गया है। ओलंपियन *कुश्तीबाज सुशीलकुमार कहते हैं कि बीमारियों से कुश्ती लड़ने* के लिए शाकाहार सर्वोत्तम है - रेस्टलिंग विद हैल्थ प्रोब्लम? बी फिट एंड स्ट्रांग, गो वेजिटेरियन। वे कहते हैं कि स्वास्थ्य ही नहीं, पशु-पक्षी और धरती को बचाने के लिए भी शाकाहार जरूरी है। शाकाहार से भरपूर ऊर्जा, शक्ति और एकाग्रता प्राप्त होती है, जो खेल

और जीवन में सफलता के लिए बेहद जरूरी है।

पूर्व बोक्सिंग चैंपियन माइक टाइसन भी शाकाहारी जीवनशैली वाले हैं। एक टीवी चैनल को दिये साक्षात्कार में उन्होंने स्वीकार किया था- ''शाकाहारी होने से मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ है। इससे पूर्व मैं दवाइयों और कोकीन से परेशान रहता था। मुझे साँस लेने में दिक्कत होती थी। मुझे उच्च रक्तचाप था, जोड़ों में दर्द था तथा मरने जैसा हो गया था। पूर्ण शाकाहारी जीवनशैली अपनाने के बाद ये सारी समस्याएँ खत्म हो गईं।''

निरामिष जीवनशैली के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए क्रिकेटर मुरली कार्तिक को पेटा ने 'दयालु खिलाड़ी' का खिताब दिया है। कार्तिक कहते हैं कि सिर्फ शाकाहारी भोजन चुनने से ही जानवरों को रोजाना की पीड़ा से बचाया जा सकता है और इससे स्वास्थ्य भी बेहतर होता है। क्रिकेट खिलाड़ी अनिल कुम्बले, पंकज आडवाणी, ग्रेग चैपल, वेंकटेश प्रसाद जैसे भी लोगों को इस प्रकार के सन्देश देते हैं। ओलंपिक रेस-वॉकिंग चैंपियन डेबी लॉरेंस, पावर लिफ्टिंग चैंपियन बिल मनेती, टेनिस चैंपियन बिली जीन किंग, कीथ होम्स, डेव स्कॉट, अल ओर्टर जैसे अनेक सफल और विजेता खिलाड़ी शाकाहारी हैं।

यहाँ तो उदाहरण के तौर पर मनोरंजन और खेल जगत के कुछ नाम ही दिये गये हैं। वस्तुतः केवल फिल्म और खेल-जगत के ही नहीं; राजनीति, व्यवसाय, कला, नृत्य, संगीत, साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, अर्थशास्त्र, सेना, कानून आदि सभी क्षेत्रों में शाकाहारी अपनी सफलताओं की नई इबारत लिखते आये हैं। वर्तमान में भी सभी क्षेत्रों में शाकाहारी भारी सफलता और प्रतिष्ठा अर्जित कर रहे हैं। सचमुच! प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शाकाहार या शाकाहारी थाली को 'स्टार डिश' की संज्ञा देना बिलकुल ठीक है।

वस्तुतः दुनियाभर में शाकाहार अपनाने को लेकर विविध चर्चाएँ चलती रहती हैं। इन चर्चाओं के अनेक कारण हैं - पौष्टिकता, आरोग्य, नैतिकता, मानवीयता, पर्यावरण-चेतना, प्रणियों के प्रति करुणा, आर्थिक लाभ इत्यादि। परिणामस्वरूप देश-विदेश में बड़ी संख्या में साधारण और असाधारण लोग शाकाहार की श्रेष्ठता स्वीकार कर रहे हैं। वे तुरन्त या धीरे-धीरे, आंशिक या पूर्णतः शाकाहारी जीवनशैली की ओर अग्रसर हो रहे हैं। भारत में शाकाहारी होना और कहना हमेशा गौरव का विषय रहा है। अब विदेशों में भी शाकाहारी होना गौरवपूर्ण माना जाता है।

शाकाहार की महत्ता को समझने और प्रचारित करने वाले विदेशी लोग 'मीटलेस मंडे' (मांसरहित सोमवार) या 'मीटफ्री मंडे' (मांसमुक्त सोमवार) जैसे अभियान को सांस्थानिक रूप में गति दे रहे हैं। वर्तमान में लगभग तीन दर्जन देश किसी न किसी रूप में 'मीटलेस मंडे अभियान' से जुड़े हैं। भारत में तो सदियों से अमारि, अहिंसा-दिवस या

मांसनिषेध दिवस की परम्परा रही है। इसे कायम रखना और दृढ़ता से आगे बढ़ाना हर भारतीय का सांस्कृतिक और राष्ट्रीय कर्त्तव्य होना चाहिये।

इधर, शाकाहार के प्रति बढ़ते आकर्षण का आलम यह है कि देश-दुनिया में शाकाहारी भोजनालयों की संख्या तथा भोजनालयों में शाकाहारी ग्राहकों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। रसोई सम्बन्धी पुस्तकों के लेखक व प्रसिद्ध बावर्ची विकास खन्ना ने एक साक्षात्कार में कहा कि एक दशक पहले न्यूयॉर्क में निरामिष भोजनालय ढूंढना मुश्किल था, लेकिन अब तो अमेरिका में शाकाहारियों की संख्या आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ रही है। यह बड़ा परिवर्तन है। 2014 में लिखी उनकी पुस्तक 'हिम्स फ्रॉम द सॉइल' निरामिष व्यंजनों पर केन्द्रित है, जिसमें अधिकांश सन्दर्भ न्यूयॉर्क के हैं। वे कहते हैं कि नित नये निरामिष मीनूज़ (भोजन-सूचियाँ) देखकर कहा जा सकता है कि अमेरिका ही नहीं, दुनिया में एक शाकाहार-क्रांति का वातावरण है।

भारत का पारम्परिक आहार, भारत के बहुसंख्यक लोगों का आहार, आम आदमी का आहार-शाकाहार ही है। अनेक लोग जो मांसाहारी माने या कहे जाते हैं, उनके भी आहार का 90 से 95 प्रतिशत आहार शाकाहार ही होता है। शाकाहार सर्वस्वीकार्य है। मांसाहार करने वाले अनेक व्यक्ति अपने सामूहिक भोज पूर्ण शाकाहारी करते हैं। वे अपनी सामिष भोजन की आदत को समाज और परिवार से अलग रखते हैं। दुनियाभर के शाकाहारियों में सर्वाधिक शाकाहारी भारत में हैं। ऐसी स्थिति में, भारत में शाकाहारिता और पशु-पक्षियों की रक्षा के कार्य और आगे बढ़ाये जाने चाहिये। ऐसे उत्तम और अहिंसक कार्यों में किसी भी प्रकार की राजनीतिक और गैर-राजनीतिक बाधाएँ नहीं पैदा की जानी चाहिये।

आतंक और प्रदूषण से जूझते संसार में शाकाहारी जीवनशैली को अपनाना तथा इस प्रकार की स्वस्थ, सन्तुलित और समग्र जीवनशैली का हर मोर्चे से प्रचार-प्रसार करना वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है। मैं मेरे युवा साथियों से आग्रह करना चाहूँगा कि उनका कार्यक्षेत्र कुछ भी हो, वे जहाँ हैं, वहाँ शाकाहार और प्राणिरक्षा की चर्चा भी करें। वे समय निकालकर अध्ययन करें, बोलें और लिखें। मीडिया और सोशल मीडिया के जरिये प्रभावी, प्रेरक और निर्विवाद सामग्री का आदान-प्रदान करें। यह मानव-धर्म, सौहार्द और परमार्थ का कार्य है। नई पीढ़ी में अहिंसक मूल्यों के प्रति निष्ठा से संसार की अनेक परेशानियाँ खत्म की जा सकती हैं और खुशियाँ बहुगुणित की जा सकती हैं।

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

82 वें जन्म-दिवस पर

उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. : श्रद्धार्पण

श्री धीरज डोसी

उ- उत्तम है तन-सम्पदा, उत्तम उन्नत भाल।
उत्तम उत्कल-केसरी, छोटा-अचल-लाल।।
पा- पाया जन्म जोधपुर में, माघ कृष्णा चौथ।
क्षमा-तितिक्षा-साधना, सदा आपके साथ।।
ध्या- ध्यान लगा गुरु-चरण में, आया भव्य बसन्त।
आतम से लौ लग गई, हुआ अशुभ का अन्त।।
य- यम-दम पूर्वक ज्ञान का, किया खूब अभ्यास।
फिर फैलाया जगत में, जिनवाणी प्रकाश।।
श्री- श्री ह्री युत पदवी वरी, बने रत्नसंघ उपाध्याय।
नमूँ वचन-प्रमाण को, करूँ नित स्वाध्याय।।
मा- मनोहर चिन्तन आपका, हितकर दिए संदेश।
धन्य आपका ज्ञान है, धन्य आपका वेश।।
न- नो-इन्द्रिय (मन)-शक्ति गजब, खूब लगाया ध्यान।
भेद ज्ञात यथार्थ का, दूर हुआ अज्ञान।।
च- चंदन बन हर प्रान्त में, किया जिनवाणी प्रचार।
सबको सब की भाषा में, समझाया धर्म का सार।।
द्र- रहे सदा मुख पर खिली, निश्छल शुद्ध मुस्कान।
लख जिसको प्रतिकूल भी, झुके चरण में आन।।
जी- जीवन जीते हैं सभी, (पर) जो जीते पर-काज।
उन्हीं के पीछे सदा, चलता सुजन-समाज।।
म- महावीर भगवान के उपदेशों का सार।
मण्डन-खण्डन में न पड़, किया सत्य स्वीकार।।
हा- हाता हो तुम हेय के, आडम्बर से दूर।
कथनी-करनी में सम, इसलिए मुख पर नूर।।
रा- राका सम सुषमा सदा, प्रसृत थी चहुँ ओर।
जीवन में हर रोज ही, उगा सुयश का भोर।।
ज- जय हो संयम पथ की, जय हो महा मुनिराज।
जय हो जिनशासन सदा, वंदन बारम्बार।।

-कार्यालय प्रभारी, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

क्या हैं असली प्यार के मायने?

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

प्रिय बहना,

मधुर स्नेह,

आजकल तुम जिस दौर से गुज़र रही हो उसका मुझे अहसास है। उम्र के इस उफान पर जिस प्रकार हमें अपनी पढ़ाई और करियर के प्रति सजग रहना आवश्यक है उसी प्रकार प्यार के रिश्तों-संबंधों से निर्मित अपने पारिवारिक और सामाजिक परिवेश के प्रति भी बहुत सजगता जरूरी है। दोनों ही स्थितियों में हमें बड़ों के अनुभवों का लाभ उठाना आना चाहिए। आज तुम्हारी जो भावनात्मक और पारिवारिक स्थिति है वैसी स्थिति कमोवेश हर लड़की की होती है।

तुम अपने पैरों पर खड़ी हो और स्व-चयनित वर से ही विवाह करने की जिद घर वालों के सामने रखी है। एक ऐसा वर जिसकी पृष्ठभूमि अपने धर्म संस्कृति से बिलकुल जुदा है और तुम्हारी हर जिद और इच्छा की पूर्ति में तत्पर तुम्हारे माता-पिता सहित सभी अभिभावक आज तुम्हारी इस जिद को नहीं मान रहे हैं, तो वे बहुत बुरे लग रहे हैं।

प्यार करना बुरी बात नहीं है। जब नयी जवानी का सावन आता है और घटायें घुमड़ कर बरसती हैं तो बारिस सब कुछ भिगो देती है तब ऐसे मौसम में बारिश में भीगना कोई जुर्म नहीं है। मैं इस निश्छल प्रेम को अपराध न मानकर मानवीय स्वभाव मानता हूँ। किन्तु कभी-कभी यह असहज भावनात्मक आवेश सैक्स और वासना के रूप में हमारे जीवन में कुछ अजीब तरह के नाटकीय ढंग से सामने आता है कि हम उसे सच्चा प्यार समझने लगते हैं। उसका प्रभाव हमारे दिल और दिमाग पर इस कदर छाने लगता है कि हमें उसके सिवा पूरी दुनिया दुश्मन नज़र आने लगती है। यहाँ तक कि वे भी जो हमसे प्रेम करते हैं और सिर्फ हमारा हित चाहते हैं। सुना है वो तुम्हें इतना चाहता है कि घर का इकलौता होते हुए भी तुम्हारे लिए अपने माता-पिता, भाई-बहन, धर्म आदि सबकुछ ठुकराने को तैयार है। किसी दूसरे शहर में अपनी नयी दुनिया बसाएगा। मुझे आश्चर्य है और तरस आता है तुम्हारी इस समझ पर कि तुम इसे उसका स्वयं के प्रति सच्चा समर्पण और प्यार समझ रही हो। क्या हो गया है तुम्हें? इतनी उच्च शिक्षा के बाद भी क्या तुम्हें इतना समझ में नहीं आया कि यह प्रेम नहीं स्वार्थ है। अरे! जो अपनों का न हो सका वो तुम्हारा क्या होगा। तुम्हारा

उसका परिचय तो कुछ वर्षों का ही हो सकता है, लेकिन अपने माँ-बाप के अनन्त उपकार और प्यार को वो तुम्हारे मोह में एक क्षण में भूल गया? **यह प्रेम नहीं नशा है जो कभी भी उतर सकता है और यकीन मानो इस प्रकार का नशा विवाह के बाद उतरता ही है।** लेकिन तब तक बहुत देर भी हो जाती है।

मैं प्रेम का प्रबल समर्थक होते हुए भी हमेशा यही कहता हूँ कि पारिवारिक दायित्वों और मूल्यों की बलि चढ़ाकर प्रेम-विवाह कभी नहीं करना चाहिए। सच्चा प्रेम भी होता है लेकिन इसकी परिणति या सार्थकता विवाह में ही पूर्ण होती है यह किसने समझा दिया?

तुम्हें मैं कैसे समझाऊँ कि **सिर्फ प्यार का नाम जिन्दगी नहीं है। प्यार सिर्फ उसका एक अनिवार्य अंग है। जो जरूरी तो है पर वह अकेला जिन्दगी के सफर का संवाहक नहीं है।** जिन्दगी में अपने लोगों के प्रेम और विश्वास को भी तबज्जो देनी पड़ती है। धन, पैसा, समाज, जाति, कुल, गोत्र, धर्म, संस्कृति, परिवार, रिश्ते- ये सब अर्थहीन नहीं हैं। इनकी समग्रता से ही एक जीवन का निर्माण होता है। एक जिम्मेदार और समझदार युवा सिर्फ क्षणिक भावुकता के लिए इन सभी को छद्म आधुनिकता की आड़ में तिलांजलि नहीं दे सकता।

प्रेमविवाह के उपरांत भी तुम्हें संसार में इन सभी की आवश्यकता तो पड़ेगी ही। यथार्थ रूप से इनके बिना जीवन संभव ही नहीं दिखाई देगा। लिव-इन रिलेशनशिप की संस्कृति भी कोई बाहर से आयातित नहीं है। भारतीय संस्कृति के असामाजिक कृत्यों में यह परम्परा 'रखैल' के रूप में पाई जाती है। कुछ स्वार्थी लोग बस नाम बदलकर इस दुराचार को आधुनिकता के नाम पर अपनी वासना पूर्ति का साधन बना रहे हैं। आश्चर्य यह है कि इसकी सामाजिक स्वीकृति भी चाहते हैं। 'पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें' यह पाश्चात्त्य जीवन दर्शन हो सकता है, भारतीय जीवन दर्शन तो कतई नहीं है। हम पहले विश्वास करते हैं, फिर कर्तव्य का पालन करते हैं, समर्पण करते हैं। जिसे अपना माना है उसके लिए अपने सुख का भी त्याग करते हैं और इसे ही प्यार कहते हैं। सार्वजनिक स्थलों पर गले में हाथ डालकर घूमना, गले मिलना और चुम्बन लेने को प्यार की संज्ञा देने वाली अन्दर से हताश और निराश पीढ़ी शायद ही यह समझ पाए कि त्याग और समर्पण की क्या कीमत होती है और प्रेम की अतुल गहराइयाँ कैसे नापी जाती हैं। प्रेम विवाह भी उचित हो सकता है, किन्तु उसकी सफलता भी उसमें निहित मूल्यों पर आधारित होती है। उसके अभाव में औसतन इसके पुराने परिणाम बहुत अच्छे नहीं पाए गए हैं। सामाजिक विवाह भी सारे सफल ही होते हों ऐसा भी नहीं है, किन्तु उसकी जिम्मेदारी सभी की बनती है और औसतन वे किन्हीं कारणों से ज्यादा सफल पाए गए हैं। तुम्हें शायद कभी कोई अनुभवी यह

समझा पाए कि प्रेमविवाह उस कल्पनाशील प्रेमी की दर्दनाक समाप्ति का नाम है।

यथार्थ के धरातल पर प्रेम का वृक्ष यकायक उत्पन्न नहीं होता वो शनैःशनैः धूप, गर्मी, पानी और वायु के सिंचन से अंकुरित होकर पहले पौधा बनता है फिर वर्षों में वृक्ष। तब जाकर उम्र भर छाया और फल देता है। दुनिया बहुत बड़ी है और समय रहते बात समझ में भाग्य से ही आती है।

आजकल के माता-पिता भी बहुत असहाय होते हैं। उन्हें मालूम है कि तुम्हारा प्रेम और विवाह दोनों ही तुम्हारे लिए हितकारी नहीं हैं फिर भी उन्हें तुम्हारा जिन्दा रहना ज्यादा प्यारा है, अतः दिल पर पत्थर रखकर भी हो सकता है अंत में हमेशा की तरह तुम्हारी यह जिद भी पूरी कर दें, किन्तु वो बात तुम्हें इसलिए समझनी होगी क्यूँ कि जीवन तुम्हारा है और **अभी भी समय है। बाद में ऐसा न हो सिवा पछताने के कोई विकल्प ही बाकी न रह जाये।**

समझना कि प्रेम का वास्तविक अर्थ प्राप्ति नहीं, त्याग है। यह अभी तुम्हारी 18-20 साल की उम्र शायद तुम्हें समझने न दे, लेकिन समझना पड़ेगा। यह वह परीक्षा है जहाँ परीक्षार्थी भी तुम हो और परीक्षक भी तुम हो। चाहो तो पास हो जाओ, नहीं तो विधि और नियति को जो मंजूर है होगा वह ही। देखो अब निर्णय तुम्हारे हाथ में है। मैंने इस विषय पर किसी जोर जबरदस्ती पर कभी यकीन नहीं किया और न करूँगा, लेकिन कुछ समझाने का भाव सिर्फ इसीलिए व्यक्त किया है कि मुझे यह मलाल न रहे और तुम कभी यह शिकायत न करो कि पहले क्यों नहीं बताया। घर के सभी सदस्यों ने तो यही कहा है कि तुम्हें समझाना निरर्थक है, अब भले ही हो, पर मुझे दुःख रहेगा कि तुमने अपने जीवन पर हम किसी को कोई अधिकार नहीं दिया सिवाय खुद के और उसके। पता नहीं इतने आधुनिक ख्यालातों का होते हुए भी मैं तुम्हारे इस निर्णय पर अपनी सहमति क्यों नहीं रख पा रहा हूँ? मुझे आधुनिकता और प्राचीनता से कोई आग्रह नहीं है। हमें तो मूल्यपरक, सुखी और सफल जीवन चाहिए और वो जिन नियमों से मिले हमें वह अपना लेने चाहिए।

इस विस्तृत सन्देश के बाद भी मैं तो यही चाहता हूँ कि तुम्हारा आकलन सही निकले और तुम हमेशा सुखी रहो। शेष शुभ।

तुम्हारा बड़ा भाई

अनेकान्त कुमार जैन

-जिन फाउण्डेशन, ए93/7ए, नन्दा हॉस्पिटल के पीछे,

छतरपुर एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110074

anekant76@gmail.com

स्वास्थ्य-विज्ञान

क्या ऐलोपेथी ही मुख्य चिकित्सा पद्धति है?

डॉ. चंचलमल चोरडिया

अंग्रेजी चिकित्सा की विशेषताएँ

अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति के पास जन साधारण को आकर्षित करने हेतु सशक्त तर्क, निदान व उपचार हेतु काम में लिये जाने वाले नवीनतम वैज्ञानिक उपकरणों की सुविधाएँ तथा रोग को दबाकर शीघ्र राहत पहुंचाने वाली दक्षता है। अपने प्रयोगों, परीक्षणों के परिणामों की सफलता एवं उपलब्धियों के आंकड़ों को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का सम्बल है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता? शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में तो उन्होंने अद्वितीय प्रगति की है। जिसके परिणामस्वरूप आँखों की पुतलियों, गुर्दों, हृदय एवं शरीर के किसी भी खराब अनुपयोगी अंगों का प्रत्यारोपण संभव हो सका है। कृत्रिम ढंग से शारीरिक क्षमताओं को बढ़ाने तथा प्रक्रियाओं के संचालन में भी उन्होंने आंशिक सफलता प्राप्त की है। जैसे चश्मों के उपयोग से देखने की क्षमता सुधारना, श्रवण यंत्रों से सुनने की ताकत बढ़ाना, डायलिसिस द्वारा रक्त का शुद्धीकरण, इंजेक्शन द्वारा शरीर में सीधे आवश्यक तत्त्व पहुँचाना, ऑक्सीजन द्वारा फेंफड़ों के कार्यो में सहयोग देना, कृत्रिम दांत अथवा हाथ या पैर लगाना आदि सुविधाएं हैं, जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों में इतनी सरल नहीं। स्पष्ट है कि अंग्रेजी चिकित्सा पद्धतियों की उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता।

अंग्रेजी चिकित्सा की पोषक सरकारी नीतियाँ

उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ऐलोपेथिक चिकित्सा पद्धति भारत सहित अधिकांश देशों में सर्वमान्य हो रही है। उसे पूर्णत: वैज्ञानिक समझा जा रहा है। उन्हें सरकारी मान्यता, संरक्षण एवं पूर्ण सहयोग प्राप्त है। स्वास्थ्य मंत्रालय व चिकित्सा संबंधी नीति निर्माता एवं संचार माध्यम उनके प्रति पूर्ण रुचि लेकर खुल्लम्-खुल्ला प्रचार कर रहे हैं। दवा निर्माताओं के लुभावने, मायावी भ्रामक विज्ञापनों एवं दबाव के कारण स्वास्थ्य मंत्रालय जन-साधारण के स्वास्थ्य की चिंता छोड़ ऐलोपेथिक चिकित्सा के हितों का पोषक बन कर रह गया है। स्वास्थ्य पर करोड़ों रुपयों को खर्च करने के बावजूद आज रोग और रोगियों की संख्या निरन्तर क्यों बढ़ रही है? इस समस्या की तरफ उनका चिंतन सुषुप्त है। अंग्रेजी विदेशी चिकित्सा पद्धति को आवश्यक, उपयोगी, वैज्ञानिक, विकासोन्मुख, प्रभावशाली तथा पौराणिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को वैकल्पिक, अनावश्यक, अनुपयोगी,

अवैज्ञानिक, अविकसित, सहयोगी चिकित्सा के रूप में बतलाने की साजिश हो रही है। अंग्रेजी चिकित्सा पद्धतियों की उपलब्धियों को बढ़ा चढ़ाकर प्रचारित किया जा रहा है तथा उसके दुष्प्रभावों को छिपाया जा रहा है। जो समस्यायें एवं नये-नये रोग अंग्रेजी चिकित्सा के दुष्प्रभावों से उत्पन्न हो रहे हैं, उनका समाधान उन्हीं से पूछा जा रहा है।

स्वास्थ्य हेतु जन-साधारण की सोच

ऐसी परिस्थितियों में जन-साधारण अन्य प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों को संदेहास्पद समझे, तो आश्चर्य नहीं। विज्ञान एवं विज्ञापनों की चकाचौंध में आज प्राय: मानव का आध्यात्मिक चिंतन सुषुप्त होता जा रहा है। चिकित्सक और दवा निर्माता रोग मिटाने के बड़े-बड़े दावे प्रस्तुत कर रहे हैं। फलत: जन साधारण की भीड़ उनसे भ्रमित हो, बिना सोचे समझे उनका अंधानुकरण करती है।

आज जन-साधारण को जितना दवा पर विश्वास है उतना अपनी अमूल्य क्षमताओं पर नहीं हो रहा है। बहुत से व्यक्ति जो किन्हीं कारणों से ऐलोपेथी का उपचार लेना तो पसन्द नहीं करते परन्तु निदान तो आधुनिक चिकित्सकों के परामर्श एवं निर्देशानुसार करवाना आवश्यक समझते हैं। रोग में राहत मिलने के बाद तथा रोग के लक्षणों के समाप्त हो जाने के पश्चात् भी जब तक ऐलोपेथिक डॉक्टर रोग की अनुपस्थिति की पुष्टि नहीं करते, तब तक उनमें अन्य उपचार की विश्वसनीयता पर संदेह बना रहता है। श्रद्धा और समर्पण के अभाव में उपचार की प्रभावशालिता तो वैसे ही कम हो जाती है। ऐसे रोगी अपनी पूर्वाग्रही मानसिकता के कारण अन्य चिकित्सा पद्धतियों का पूर्ण लाभ नहीं ले पाते। अन्य चिकित्सा के लम्बे चौड़े दावे करने वाले बहुत से चिकित्सक भी जिन्हें अपनी चिकित्सा के मौलिक सिद्धान्तों की जानकारी नहीं होती अथवा पूर्ण अनुभव नहीं होता, वे चिकित्सक भी आत्मविश्वास एवं चिकित्सा की प्रभावशालिता पर पूर्ण विश्वास न होने से स्वयं के रोगग्रस्त होने की स्थिति में अपनी चिकित्सा पद्धति से निदान अथवा उपचार करने के बजाय तात्कालिक राहत हेतु ऐलोपेथिक उपचार लेना पसंद करते हैं, तो उनके सारे दावे जन-साधारण को खोखले लगने लगते हैं। परिणामस्वरूप जन-साधारण अन्य चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जल्दी आकर्षित नहीं होता।

प्रभावशाली अन्य चिकित्सा पद्धतियों पर चिंतन आवश्यक

कोई चिकित्सा पद्धति अपने आप में पूर्ण नहीं होती और न कोई भी चिकित्सा पद्धति ऐसी है, जिसमें कोई विशेषता ही न हो। अर्थात् अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति के जो सिद्धान्त, मान्यताएँ, धारणाएँ हैं, वे ही संपूर्ण सत्य हों, बाकी सभी चिकित्सा पद्धतियाँ अवैज्ञानिक, अविकसित, अनुपयोगी, अनावश्यक हों, ऐसा मानना कदापि उचित नहीं। हम किसी बात पर विश्वास न करें, परन्तु इस संबंध में बिना पूर्ण जानकारी अविश्वास करना भी उचित नहीं।

ऐसे चिंतन को वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार यदि कोई गाँव का अशिक्षित व्यक्ति डॉक्टरों की भरी सभा में चिकित्सा विषयों पर अधिकारपूर्वक बोले तो उसकी बात का क्या महत्त्व, उसकी क्या सार्थकता? उसी प्रकार जिस विषय का ज्ञान न हो उस पर अभिमत देना नासमझी है। कारण चाहे जो हों, तथाकथित **अच्छी प्रभावशाली स्वावलंबी मौलिक चिकित्सा पद्धतियां वर्तमान में सरकारी उपेक्षा की शिकार हैं। सरकार द्वारा न तो उन पर शोध को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और न उनके प्रशिक्षण व उपचार व्यवस्था की तरफ सरकार का विशेष ध्यान ही जा रहा है। सरकारी मान्यता और सहयोग का तो प्रश्न ही नहीं। उनकी प्रभावशालिता एवं अच्छाइयों को बिना सोचे समझे, बिना अध्ययन किये नकारा जा रहा है।** भले ही वे चिकित्सा के मापदंडों में सरकारी मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक समझी जाने वाली आधुनिक अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति से काफी आगे हो। मानो परीक्षा में 25 अंक प्राप्त करने वालों को सर्वश्रेष्ठ तथा 60 से 70 अंक प्राप्त करने वालों को अयोग्य घोषित किया जा रहा है। क्या स्वास्थ्य मंत्रालय से संबंधित नीति निर्माताओं ने उन पद्धतियों के विशेषज्ञों से परामर्श कर समझने का प्रयास किया? प्रकृति का यह मौलिक सिद्धान्त है कि रोग जिस स्थान, वातावरण एवं परिस्थितियों में उत्पन्न होता है, उसका उपचार उसी वातावरण, परिस्थितियों एवं धरती के अवयवों में समाहित होता है। अत: स्वावलम्बी, चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धान्त, उपचार का तरीका भारत की जलवायु, संस्कृति व वातावरण के ज्यादा अनुकूल है। जिस पर पूर्वाग्रह छोड़ अनेकान्त दृष्टि से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुन: शोध व व्यापक चिंतन आवश्यक है। आधुनिक चिकित्सकों को अन्य प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों का सैद्धान्तिक ज्ञान कराया जाना चाहिये, जिससे चिकित्सकों का चिंतन बहुपक्षीय हो सके।

विज्ञान का आधार क्या?

विज्ञान का आधार होता है सत्यदृष्टि, अनेकांतदृष्टि, समग्रदृष्टि। इसके विपरीत जिसमें आग्रह है, दुराग्रह है, एकान्त मान्यताओं एवं धारणाओं का पोषण होता है, मायावी आचरण है, वहां कितना ही विज्ञापन क्यों न हो वह सोच विज्ञान का नहीं हो सकता। विज्ञान की पहली शर्त है "सच्चा सो मेरा न कि मेरा सो सच्चा।" प्राप्त सूचनाओं, प्रमाणों, प्रयोगों एवं परीक्षणों से उपलब्ध आंकड़ों का व्यवस्थित लिपिबद्ध संकलन और प्रस्तुतीकरण विज्ञान का एक पक्ष मात्र है। जब तक पुरुषार्थ, कर्म, नियति, स्वभाव व काल के प्रभावों को नकारा जाएगा, सत्य समझ में नहीं आयेगा। अध्यात्म के बिना विज्ञान अधूरा है, अपूर्ण है। विज्ञान के लिये सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् आचरण आवश्यक होता है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति की विसंगतियाँ

चिकित्सा के क्षेत्र में लम्बे चौड़े दावों के बावजूद दु:ख जो रोग का मूल कारण होता है, तनाव, भय, निराशा, अधीरता नकारात्मक सोच जो रोग के कारणों के जनक होते हैं, उनको मापने, समझने और दूर करने का सर्वमान्य उपाय तक नहीं है। आधुनिक चिकित्सा में आत्मा, मन एवं भावों की उपेक्षा होने से निदान एवं उपचार आंशिक और अधूरा होता है। प्राय: प्रत्येक अंग, उपांग, अवयव, इन्द्रियों आदि के अलग-अलग विशेषज्ञ होते हैं। परिणामस्वरूप उपचार शरीर को एक इकाई मान कर नहीं किया जाता है, जबकि शरीर के सभी तंत्रों में पूर्ण रूप से आपसी सहयोग होता है। प्रत्येक रोग का प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष प्रभाव पूरे शरीर पर भी पड़ता है। टुकड़ों-टुकड़ों में शरीर का उपचार करने से उसका प्रभाव शारीरिक स्तर पर भी पूर्ण रूप से नहीं होता।

क्या उपचार हेतु सही निदान आवश्यक है?

1. आधुनिक चिकित्सा पद्धति रोग का मुख्य कारण शरीर में वायरस अथवा रोग के कीटाणुओं को मानती है। मानव अनन्त शक्तिशाली होता है। उसमें अनन्त क्षमता होती है। क्या लाखों चूहे मिलकर किसी शेर को परेशान कर सकते हैं? हाँ, यदि शेर को अपनी क्षमता का खयाल न हो, वह प्रमादी हो अथवा गहरी निद्रा में सोया हुआ हो, तो निश्चित रूप से उसे परेशानी हो सकती है। अन्यथा चूहे उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। ठीक उसी प्रकार यदि हमारी प्रतीकारात्मक शक्ति अच्छी हो तो वायरस और कीटाणु हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं? गन्दी बस्तियों में रहने वाले, रोजाना पाखाना और गटर-नालियों की सफाई करने वाले तथा प्रतिदिन अस्पताल में असाध्य एवं संक्रामक रोगियों के बीच रह कर सेवायें देने वाले चिकित्सकों और नर्सेज आदि को तो इस मान्यतानुसार सदैव रोग ग्रस्त ही होना चाहिये। परन्तु इसमें कितनी वास्तविकता है, जन साधारण से छिपी नहीं है।

   मिथ्यात्व अर्थात् गलत सोच और मान्यताएं सभी समस्याओं का मूल कारण होती हैं। आधुनिक चिकित्सकों के इसी अवैज्ञानिक सोच के कारण कभी Mad Cow रोग के कारण लाखों निरपराध, गायों का कत्ल करवाया जाता है तो Bird Flu रोग की आशंका के कारण कभी महाराष्ट्र में तो कभी पश्चिमी बंगाल में लाखों बेजुबान, बेकसूर मुर्गियों की हत्या करवायी जाती है। प्रकृति के न्याय में देर भले ही हो, अन्धेर नहीं है। नित्य नये रोगों की नामावली जो आधुनिक चिकित्सक बता रहे हैं, वे सब उसी का दुष्परिणाम होते हैं। चिकनगुनियां, स्वायन फ्लू, डेंगू, एड्स, एन्थ्रेक्स आदि रोग इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

2. संसार की सारी गतिविधियां एक दूसरे के सहयोग एवं नियंत्रण से संचालित होती हैं। जिस प्रकार गाड़ी की गति ब्रेक द्वारा नियंत्रित होती है, बिना अच्छे ब्रेक वाहन का उपयोग नहीं किया जा सकता, ठीक उसी प्रकार शरीर में किसी भी अंग की कार्यप्रणाली पूर्णतया स्वतंत्र नहीं होती। प्रत्येक अंग का पूरक अथवा सहयोगी अंग अवश्य होता है और जब उन सहयोगी अंगों में असंतुलन हो जाता है तो रोग की स्थिति बनती है। परन्तु आधुनिक अंग्रेजी चिकित्सा में यिन यांग का यह सिद्धान्त गौण है। फलत: जो अंग रोगग्रस्त होता है उसी में उसका कारण ढूंढा जाता है तथा उसी अंग के उपचार को प्राथमिकता दी जाती है। जो सदैव सही नहीं होता।
3. दुनिया में जब दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते, तब दो रोगियों और उनके रोग का निदान एक जैसा कैसे हो सकता है? वास्तव में आज लक्षणों के आधार पर जिन रोगों का नामकरण किया जाता है, वे अनेक रोगों के समूह के नेता की भांति होते हैं। जिन्हें सैकड़ों अप्रत्यक्ष रोगों का सहयोग प्राप्त होता है। जनतंत्र में नेता को हटाने का सरलतम उपाय है कि उसके सहयोगियों को उनसे अलग करना। सहयोगियों को अलग किये बिना नेता को हटाना सरल नहीं होता। ठीक उसी प्रकार निदान करते समय, यदि अप्रत्यक्ष रोगों की उपेक्षा करें तो, एक ही नाम से पहचाने जाने वाले रोगियों का निदान और उस पर आधारित उपचार आंशिक अथवा अधूरा ही होता है।
4. किसी व्यक्ति को निद्रा में खर्राटे आते हैं तो किसी को डकारें, किसी को हिचकियां, किसी को छींकें, किसी को जम्भाइयाँ (उबासी) आदि अधिक आती हैं। शरीर में इन ध्वनियों के स्पन्दन स्वास्थ्य से संबंधित होते हैं। ध्वनि चिकित्सा इन्हीं असंतुलनों को दूर कर व्यक्ति को रोग मुक्त करती है। परन्तु निदान करते समय प्राय: उनकी समीक्षा न होने से निदान व उपचार अधूरा होता है।
5. किसी को लाल तो किसी को हरा, पीला, नीला, सफेद आदि रंग अच्छे या बुरे क्यों लगते हैं? क्या रंगों की पसंद या नापसन्द का स्वास्थ्य से कोई संबंध होता है? रंग चिकित्सा शरीर में रंगों का संतुलन कर उपचार करती है। क्या रोग का निदान करते समय इस तथ्य की समीक्षा होती है?
6. किसी को खट्टा तो किसी को मीठा, नमकीन, चटपटा आदि में से कोई भी स्वाद रूचिकर अथवा अरुचिकर लगता है। क्या इन स्वादों की पसन्द या अरुचि का स्वास्थ्य से कोई संबंध है? मधुमेह वालों को मिठाई और रक्तचाप के रोगियों को नमक छोड़ने की क्यों सलाह दी जाती है? शरीर में इन स्वादों का नियन्त्रण कौन करता है? क्या अपनी इच्छानुसार जब चाहें स्वादों के प्रति लगाव बदला जा सकता है? क्या स्वादों

का रोग से संबंध होता है तथा निदान करते समय इस तथ्य को ध्यान में रखा जाता है?

7. चंद व्यक्ति अत्यधिक सुगन्ध प्रिय होते हैं। वे तनिक भी दुर्गन्ध सहन नहीं कर सकते। कुछ व्यक्तियों को दूर में कुछ भी जल रहा हो, सहज आभास हो जाता है तो कुछ को समीप में जलने का भी आभास नहीं होता। क्या शरीर से निकलने वाली तथा बाहिर से आने वाली गन्धों के प्रति रुचि अथवा अरुचि के भाव का स्वास्थ्य से कोई संबंध होता है? क्या गन्ध के प्रति हमारी प्रकृति को दवा द्वारा मन चाहा बदलना संभव है? क्या गंध के प्रति रुचि या अरुचि निदान को प्रभावित करती है?

8. किसी व्यक्ति को बैठे-बैठे ही पसीना आता है तो अन्य को कठिन परिश्रम अथवा दौड़ने के बावजूद भी नहीं आता। ऐसा क्यों? किसी को आंखों में बिना कारण आंसू आ जाते हैं। किसी के थूक, कफ अथवा पसीना ज्यादा आता है, तो वैसे ही अन्य लक्षणों वाले अन्य रोगी को कभी-कभी कम भी आता है। क्या हम जैसा चाहें, जितना चाहें, जिस मार्ग से चाहें तरल विजातीय पदार्थों का विसर्जन अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं? क्या विजातीय तरल विभिन्न द्रवों के विसर्जन तरीकों का आपसी संबंध होता है? क्या पेथालोजिकल अथवा अन्य परीक्षणों द्वारा इनके कारणों का पूर्ण निदान संभव होता है?

9. कोई व्यक्ति दयालु तो कोई क्रूर हिंसक क्यों? कोई निराश, बेचैन अधीर तो कोई धैर्यवान क्यों? कोई लोभी, लालची तो कोई संतोषी क्यों? कोई क्रोधी, चिड़चिड़ा तो दूसरा शान्त और मधुर वक्ता क्यों? कोई मायावी, कपटी, दगेबाज तो दूसरा सहज, सरल क्यों? कोई घमण्डी तो कोई विनम्र क्यों? कोई भयभीत, तनावग्रस्त, दुःखी तो कोई निर्भय, तनावमुक्त और सुखी क्यों? क्या ये संस्कार स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं? क्या आधुनिक चिकित्सा पद्धतियां निदान में इन तथ्यों को महत्त्व देती हैं? क्या बाह्य लक्षणों के साथ इनका कोई संबंध है? क्या समान लक्षण वालों का स्वभाव एक जैसा होना जरूरी है?

रोग के ऐसे अनेक मूल कारणों की उपेक्षा होने से तथा मात्र बाह्य प्रकट होने वाले समान लक्षणों के आधार पर होने वाले निदान एवं उपचार का लक्ष्य रोगी को राहत दिलाने तक ही सीमित होता है। दवाइयों का दुष्प्रभाव भी पड़ता है। रोग के कारण बने रहते हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति का प्रायः जीवन पद्धति से संबंध नहीं होता। आधुनिक चिकित्सक प्रायः रोग की चिकित्सा करते हैं, रोग न होने की नहीं। उस तरफ उनका ध्यान ही नहीं जाता। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में निदान को प्रभावित करने वाले उपर्युक्त एवं ऐसे अनेक तथ्य उपेक्षित होते हैं, फलतः निदान समग्र दृष्टिकोण से नहीं होता। जब तक रोग का कारण मौजूद

रहता है, तब तक उपचार स्थायी और प्रभावशाली नहीं हो सकता।

क्या अंग्रेजी चिकित्सा ही प्रभावशाली है?

प्राय: ऐसा प्रचारित किया जाता है कि आधुनिक समझी जाने वाली ऐलोपेथी चिकित्सा पद्धति ही वैज्ञानिक, मौलिक एवं अत्यधिक प्रभावशाली है तथा अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ अवैज्ञानिक, अमौलिक या वैकल्पिक हैं। क्या ऐसा कथन सत्य पर आधारित है? अगर ऐलोपेथिक चिकित्सा प्रभावशाली होती तो दवा लेते ही उपचार हो जाता। रोगियों को लम्बे समय तक अस्पतालों और डॉक्टरों के चक्कर नहीं काटने पड़ते। रोगियों की संख्या में दिनों दिन तीव्र गति से वृद्धि नहीं होती। बहुत से रोगों में जिन्दगी भर दवायें खाने की आवश्यकता नहीं होती। उपचार के दुष्प्रभाव नहीं पड़ते। केंसर, एड्स, एन्थ्रेक्स, चिकनगुनिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू जैसे नवीन रोगों का जन्म नहीं होता।

क्या उपचार में राहत ही पूर्ण चिकित्सा हो सकती है?

आधुनिक चिकित्सा पद्धति का उद्देश्य एवं प्राथमिकताएँ तात्कालिक परिणामों पर आधारित होने से प्राय: उपचार राहत तक ही सीमित होता है। उपचार के कारण भविष्य में पड़ने वाले दवाओं के दुष्प्रभावों की उपेक्षा होती है। संक्रामक और असाध्य रोगों में दवा जीवन पर्यन्त आवश्यक बन जाती है। क्या राहत को ही पूर्ण उपचार मानने वाली चिकित्सा पद्धति स्वयं को वैज्ञानिक तथा अन्य प्रभावशाली चिकित्सा पद्धतियों को वैकल्पिक कहने का दावा कर सकती है?

स्वास्थ्य के प्रति सच्चा दृष्टिकोण क्या है?

अत: जब तक चिकित्सक का दृष्टिकोण शरीर को स्वस्थ करने के साथ मन और आत्मा को स्वस्थ बनाने का नहीं होगा, उपचार अधूरा होगा। जो स्वयं अपूर्ण है वह पूर्णता की बात करने का दावा कैसे कर सकता है? उससे विरोधाभास होगा। जहां विरोधाभास होगा वहां नुकसान की संभावना रहेगी। हमें हमारा विवेक जाग्रत रखना है। हानि-लाभ, उपयोगी-अनुपयोगी, करणीय-अकरणीय की प्राथमिकताओं के आधार पर चिंतन कर स्वयं का आचरण करना होगा। विकार रोग है। अत: जो उपचार शरीर, मन, वाणी एवं आत्मा के विकारों को जितना जल्दी एवं स्थायी रूप से दूर करने में सक्षम होगा, वही चिकित्सा पद्धति सर्वश्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक कहलाने का दावा कर सकती हैं। स्वास्थ्य के प्रति यही सच्चा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण होता है।

वैकल्पिक चिकित्सा कौनसी?

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति कौनसी है? स्वावलम्बी या परावलम्बी? सहज अथवा दुर्लभ? सरल अथवा कठिन? सस्ती अथवा महंगी? प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों पर

आधारित प्राकृतिक या नित्य बदलते मापदण्डों वाली अप्राकृतिक? अहिंसक अथवा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा, निर्दयता, क्रूरता को बढ़ावा देने वाली। दुष्प्रभावों से रहित अथवा दुष्प्रभावों वाली? शरीर की प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ाने वाली या कम करने वाली? रोग का स्थायी उपचार करने वाली अथवा राहत पहुंचाने वाली? सारे शरीर को एक इकाई मानकर उपचार करने वाली अथवा शरीर का टुकड़ों-टुकड़ों के सिद्धान्त पर उपचार करने वाली?

उपर्युक्त मापदण्डों के आधार पर हम स्वयं निर्णय करें कि कौनसी चिकित्सा पद्धति मौलिक है और कौनसी वैकल्पिक? मौलिकता का मापदण्ड भ्रामक विज्ञापन अथवा संख्याबल नहीं होता। करोड़ों व्यक्तियों के कहने से दो और दो पांच नहीं हो जाते। दो और दो तो चार ही होते हैं। अत: हमें स्वीकारना होगा कि स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियाँ भी मौलिक चिकित्सा पद्धतियाँ हैं, वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियां नहीं हैं।

किसी बात को बिना सोचे समझे स्वीकार करना यदि मूर्खता है तो अनुभूत सत्य को बिना सम्यक् चिन्तन एवं तर्क की कसौटी पर कसे, प्रचार-प्रसार के अभाव में पूर्वग्रसित गलत धारणाओं के कारण अस्वीकार करने वालों को कैसे बुद्धिमान कहा जा सकता है?

अच्छी चिकित्सा पद्धति कौनसी

अच्छी चिकित्सा पद्धति के लिए आवश्यक होता है, रोग के मूल कारणों का प्रारम्भिक अवस्था में ही सही निदान, तुरन्त दुष्प्रभावों से रहित प्रभावशाली स्थायी उपचार। जो पद्धति सहज, सरल, सस्ती, स्वावलंबी एवं अहिंसक होने के साथ-साथ शरीर, मन, वाणी, भाव और आत्मा के विकारों को कम करने में सक्षम हो; जिन चिकित्सा पद्धतियों में करणीय-अकरणीय, भक्ष्य-अभक्ष्य, अहिंसा-हिंसा, न्याय-अन्याय, वर्जित-अवर्जित का विवेक हो, वे ही चिकित्सा पद्धतियां अपने आपको वैज्ञानिक एवं सर्वश्रेष्ठ होने का दावा कर सकती हैं।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 मार्च 2016** तक डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित करें। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. क्या आधुनिक चिकित्सा पद्धति वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है?
2. क्या अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता वालों को वायरस रोगी बना सकते हैं?
3. क्या यिंग-यांग की उपेक्षा करने वाला निदान सदैव सही हो सकता है?
4. क्या स्वाद, गंध, रंग, शरीर से निकलने वाली ध्वनियों का रोग से सम्बन्ध होता है?
5. क्या समान लक्षणों वाले दो रोगियों का उपचार एक जैसा हो सकता है?
6. क्या आधुनिक चिकित्सा ही मौलिक एवं अन्य चिकित्सा पद्धतियां वैकल्पिक हैं?
7. क्या स्वास्थ्य मंत्रालय का अन्य चिकितसा पद्धतियों के प्रति दृष्टिकोण सही है?

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2015 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत **'शरीर में स्वयं रोग-मुक्त होने की क्षमता होती है'** के प्रश्नों के उत्तर 23 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**	
प्रथम पुरस्कार (1000/-रु.)	श्रीमती विजया कोठारी-अजमेर (राज.)	(70/70)
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री अशोक चौधरी-जोधपुर (राज.)	(69/70)
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती प्रीतिजी पीपाड़ा-विजयनगर (राज.)	(69/70)

द्वितीय एवं तृतीय प्रतिभागी के समान अंक होने से द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की राशि को मिलाकर(750+500=1250/2=625 प्रत्येक) दोनों में बराबर बाट दी गई है। अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल जी चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व फोन मय पूर्ण पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें। पता नहीं लिखे जाने पर उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा।

साहित्य प्रकाशन में सहयोग का अवसर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने साहित्य प्रकाशन में रुपये न्यूनतम 3,100/- एवं उससे अधिक 5,100 तथा 11,000/- आदि राशि का अर्थसहयोग भी स्वीकार करने का निर्णय लिया है। इस राशि से प्रकाशित पुस्तक में अर्थसहयोगियों का नामोल्लेख किया जाएगा। आप सभी से अनुरोध है कि साहित्य प्रकाशन में स्वेच्छा से अर्थसहयोग प्रदान करावें और साहित्य (ज्ञान) सेवा का अंग बन ज्ञानवरणीय कर्मनिर्जरा का लाभ लिरावें। बैंक संबंधी विवरण-**SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL, BAPU BAZAR, STATE BANK OF BIKANER AND JAIPUR, BANK A/c No. 51026632997, IFS Code SBBJ0010843, MICRO Code 30200305, PAN No. AABTS 3915 P, DENA BANK, Johari Bazar, Bank A/c No.**

-विनयचन्द डागा-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

प्रेरक जीवन-प्रसंग

न्यायमूर्ति श्री जसराज चौपड़ा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मार्च 2016 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

(1)
मुहम्मद साहब एवं यहूदी बुढ़िया

एक यहूदी बूढ़ी महिला मोहम्मद साहब के इस्लाम धर्म के प्रचार से बेहद खफ़ा थी। प्रतिदिन जब मोहम्मद साहब उधर से निकलते, वह इंतजार करती व उनके निकलते वक्त घर का एकत्र कचरा उन पर डाल देती। मुहम्मद साहब हँसते हुए उधर से कपड़े झाड़कर निकल जाते। एक रोज वे उधर से गुजरे, पर बुढ़िया ने उन पर कचरे की बौछार नहीं की तो खयाल आया कि बुढ़िया माँ कहीं बीमार तो नहीं है? अंदर ऊपर जाकर देखा तो बुढ़िया माँ बुखार एवं खाँसी से पीड़ित थी। पन्द्रह दिन उसकी सेवा शुश्रूषा कर जब उसे चंगा (स्वस्थ) किया तो बुढ़िया माँ उनकी भक्त बन गई। प्रेम ही धर्म है एवं अहिंसा की यह सकारात्मक धरोहर है।

(2)
राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की शिष्टता एवं शत्रु-विनाश की प्रक्रिया

एक बार राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अंगरक्षकों के साथ घूमने निकले। एक साधारण धोबी ने अपना टोप उतार, कमर एवं सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया। राष्ट्रपति लिंकन ने भी अपना टोप उतार सिर झुकाकर अभिवादन का जवाब दिया। अंगरक्षक को राष्ट्रपतिजी का ऐसा समानता व सद्भाव दर्शाने वाला कृत्य बहुत अखरा। उसने बड़ी

विनम्रता से निवेदन किया कि आप महान् देश संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष हैं। हर ऐरे-गेरे के सामने टोप उतारकर अभिवादन का जवाब न दें। लिंकन ने कहा कि अमेरिका का राष्ट्रपति शिष्टता प्रदर्शन में अपने किसी नागरिक से पीछे नहीं रहना चाहता। एक सामान्य व्यक्ति के लिए भी उनके हृदय में आदर एवं समानता का भाव था।

अब्राहम लिंकन के कुछ सलाहकारों ने उन्हें सुझाव दिया कि मौका है, आप राष्ट्रपति जैसे गरिमामय पद पर आसीन हैं अतएव अपने प्रतिद्वन्द्वियों एवं दुश्मनों को खत्म करने का कार्य कर सकते हैं। लिंकन ने प्रत्युत्तर में कहा कि यही तो मैं कर रहा हूँ। उनके सलाहकार आश्चर्यचकित हो कहने लगे कि आपके सारे घोर विरोधी व दुश्मन खुले घूम रहे हैं एवं मौज उड़ा रहे हैं। आपने न किसी को पद से वंचित किया न किसी को जेल में डाला, फिर भी आप कहते हो कि आप उन्हें खत्म कर रहे हैं तो हमें तो आपकी सोच एवं बुद्धि पर तरस आ रहा है। इस पर लिंकन ने उन्हें समझाते हुए कहा कि मित्रों, मैं दुश्मन नहीं दुश्मनी को एवं विरोधी को नहीं विरोध को समाप्त करने में विश्वास करता हूँ। पद पर रहते कोई व्यक्ति मेरा दुश्मन भले ही हो, पर संयुक्त राज्य अमेरिका का दुश्मन नहीं है, अतः उसे पद से हटाने की अशिष्टता कर मैं दोषी नहीं बनना चाहता। साथियों, मेरी शिष्टता एवं अवैरभाव कुछ ही समय में उन्हें मेरा मित्र बना देगा। अहिंसा द्वारा लोगों का हृदय जीतने का यह लिंकन का अभिनव प्रयोग साबित हुआ था। वे अमेरिका के पाँच सफलतम राष्ट्रपतियों में एक माने जाते हैं।

(3)

लाला जंबू प्रसाद की जैन धर्मनिष्ठा

लाला जंबूप्रसाद जैन धर्म के समर्पित श्रावक एवं सहारनपुर के ख्यातिनाम रईस एवं श्रेष्ठी थे जिनके यहाँ ठण्डे वक्त में हाथी सवारी हेतु रखे जाते थे। एक बार सहारनपुर के अंग्रेज कलेक्टर साहब को सघन वन में शिकार हेतु जाने की इच्छा हुई। घास इतनी बड़ी व कंटीली थी कि घोड़ों पर जाना बहुत कष्ट दायक एवं जोखिम भरा था। शहर कोतवाल ने कहा- हुजूर, हाथी पर शिकार हेतु पधारें। आप कहें तो लाला जंबू प्रसाद के पास हाथी हैं जिन्हें शिकार हेतु मांग लिया जाए। कलेक्टर से आज्ञा प्राप्त कर शहर कोतवाल लाला जंबूप्रसादजी के पास शिकार हेतु हाथी मांगने गया। लाला जी ने कहा- कलेक्टर साहब बहादुर के सैर-सपाटे, गोठ-घूघरी हेतु हाथी सेवा में तैयार हैं, परन्तु मैं एक जैन श्रावक हूँ, मैं जीव हत्या के शिकार अभियान हेतु हाथी उपलब्ध नहीं करा सकता। सेठ का जवाब जो मनाही में था, कोतवाल ने नमक-मिर्च लगाकर कलेक्टर साहब बहादुर को सुना दिया। कलेक्टर महोदय अंग्रेजों के राज्य में सेठ द्वारा की जाने वाली हुक्म अदूली (आज्ञा का

उल्लंघन) से इतने कुपित एवं क्रोधित हुए कि उन्होंने कोतवाल को आदेश दिया कि सेठ जंबूप्रसाद को पकड़कर हमारे सामने पेश किया जाए। कोतवाल ने वैसा ही किया। जैसे ही कलेक्टर साहब ने सेठ को देखा तो क्रोध में तमतमाते हुए बोले कि तुम हमारे आदेश की अनुपालना न करने का नतीजा जानते हो? हम तुम्हें बरबाद कर सकते हैं। सेठ ने बड़ी निर्भयता से उत्तर दिया कि सरकार मैं जानता हूँ कि आप मुझे जेल में डाल सकते हैं, मेरी जायदाद जब्त कर सकते हैं, यहाँ तक कि मुझे जान से भी हाथ धोना पड़ सकता है, परन्तु मैं एक श्रद्धानिष्ठ जैन श्रावक हूँ। मैं जीव हत्या या शिकार हेतु अपने हाथियों को उपलब्ध कराने की स्वप्न में भी नहीं सोच सकता। मैं मेरे जीते जी ऐसे अधार्मिक आचरण को करने का मन में भी विचार नहीं ला सकता। ईस्ट इण्डिया कंपनी सरकार इस देश में सभी को अपना-अपना धर्म पालने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। मैं धर्म भ्रष्ट होने का यह दुष्कृत्य कभी नहीं करूँगा। अंग्रेज कलेक्टर लाला जंबू प्रसाद की धार्मिक आस्था एवं समर्पण से बड़ा प्रभावित हुआ एवं अपनी जगह से उठकर उसने लालाजी की पीठ थपथपाते हुए कहा कि सेठ! तुम्हें शाबासी एवं धन्यवाद है। अपनी धार्मिक आस्था एवं निष्ठा के प्रति भविष्य में भी इसी तरह दृढ़ एवं अडिग रहना। धार्मिक आस्था हर मुश्किल को आसान करने में सक्षम है।

(4)

गोपाल कृष्ण गोखले की सत्यवादिता के दो उदाहरण

एक गणित के शिक्षक ने कुछ प्रश्न सब विद्यार्थियों को घर से हल करके लाने हेतु दिये। पर साथ ही हिदायत दी कि किसी की सहायता न ली जाए। पूरी क्लास में सिर्फ गोखले ने ही सारे प्रश्न सही रूप से हल किये थे। शिक्षक ने बालक गोखले की बुद्धिमत्ता के लिए उसकी पीठ थपथपाई तो गोपालकृष्णजी की आँखों से अश्रुधारा बह चली। शिक्षक ने उसका कारण पूछा तो गोपालकृष्ण ने रोते-रोते कहा कि इनमें से तीन प्रश्नों के हल में मैने मेरे पिता की सहायता ली है। सारे प्रश्न मैंने स्वयं हल नहीं किये हैं तो शिक्षक ने दुबारा उसकी पीठ थपथपा कर कहा कि गोपाल! मैं तुम्हारी सत्यवादिता से बहुत प्रसन्न हूँ। देखना बेटे! इस सत्यवादिता के सहारे तुम एक दिन देश के बहुत बड़े आदमी बनोगे। शिक्षक की वह भविष्यवाणी शत-प्रतिशत सही साबित हुई।

गोखले साहब कुछ लिखना चाहते थे। पुत्र से दवात कलम मंगवाई। लेख लिख कर दवात कलम वापस लौटाने हेतु पुत्र को आवाज दी। दवात पुत्र पूरी तरह पकड़ नहीं पाया, अतः वह गिरकर फूट गई एवं कालीन बिगड़ जाने के नुकसान के कारण पुत्र हतप्रभ था, बोला- जी, मैं दवात को ठीक से पकड़ नहीं पाया। गोखलेजी ने कहा- नहीं बेटे मैं लेख के विचारों में उलझा था। अतः तुम पकड़ पाओ इसके पूर्व ही मैंने दवात छोड़ दी। मुझे यदि

स्याही की दवात तुझे पकड़वानी थी तो मुझे पूरा ध्यान उधर देना चाहिए था। अतः गलती तुम्हारी नहीं मेरी है कि दवात तुम पूरी तरह पकड़ पाये हो या नहीं यह निश्चित करने के पूर्व ही मैंने दवात छोड़ दी। गोखले साहब की इस सत्य स्वीकृति ने उस बालक को सत्य का भक्त बना दिया। कितने पिता एवं अभिभावक सत्य को इस तरह अंगीकृत कर अपना दोष दूसरों पर ढोलने की कोशिश नहीं करते? मन के सत्य के बिना वचन का सत्य कभी प्रभावकारी नहीं होता। *-'जैन धर्म की आराधना एवं साधना' पुस्तक से संकलित*

प्रश्नः-

1. गोपाल कृष्ण गोखले से आपको क्या प्रेरणा प्राप्त हुई? वे कैसे प्रसिद्ध थे?
2. अपने साथ बुरा करने वाले के प्रति भी हमें अच्छा व्यवहार करना चाहिए। क्यों?
3. मित्र बनाने में अवैरभाव एवं शिष्टता किस प्रकार सहायक हैं?
4. लाला जम्बूप्रसाद ने अपना हाथी जिला कलेक्टर को देने से क्यों मना किया? क्या आप उनके निर्णय से सहमत हैं? कारण बताएँ।
5. अब्राहम लिंकन के बारे में आप क्या जानते हैं? तीन पंक्तियों में लिखिए।
6. अंग्रेज कलेक्टर ने लाला जम्बूप्रसाद की पीठ क्यों थपथपाई?

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2015] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दीपावली पर्व एवं उत्तराध्ययन सूत्र' के प्रश्नों के उत्तर 37 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अरिन चौरड़िया-जयपुर(राज.)	28
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	कुसुम मुरडिया-बल्लारी (कर्नाटक)	27
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	मानसी महेन्द्रजी पारख-नासिक(महा.)	26.5
	हर्ष देशलहरा-बालोद (छत्तीसगढ़)	26.5
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	26.5
	पूर्वांशी मुकेशजी जैन-जोधपुर (राज.)	26.5
	दीपांशु जैन-जयपुर (राज.)	26

रचनाएँ आमन्त्रित

जिनवाणी के लिए मौलिक एवं स्तरीय रचनाओं/आलेखों का सदैव स्वागत है। आपकी रचनाओं से ही यह पत्रिका दीप्तिमान हो रही है। इस वर्ष भी कतिपय श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत किया जाएगा।**-सम्पादक**

प्रतियोगिता

जिनवाणी के अंकों पर प्रतियोगिता

श्राविकारत्न स्व. श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी श्रावकरत्न श्री गौतमचन्दजी संकलेचा, कुम्बकोणम् की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र श्री प्रवीणकुमार, मनोजकुमार संकलेचा, कुम्बकोणम्, चेन्नई के सहयोग से 'जिनवाणी पत्रिका' के विगत अंकों का पुनः स्वाध्याय हो सके, इस दृष्टि से यह प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता हेतु जिनवाणी **मार्च-2014 से फरवरी-2015** के अंकों से यहाँ कतिपय वाक्य दिए जा रहे हैं। आपको इन वाक्यों को पढ़कर इनके **लेखक/प्रवचनकार, लेख-शीर्षक, माह एवं पृष्ठ संख्या** का उल्लेख करना है तथा अपने उत्तर **जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)** के पते पर **31 मार्च 2016** के पूर्व प्रेषित करने हैं। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः 1100/-रुपये, 700/-रुपये एवं 500/-रुपये की राशि से तथा तीन सांत्वना पुरस्कार में प्रत्येक को 200/-रुपये की राशि से पुरस्कृत किया जाएगा। अतः अपना नाम, पता स्पष्ट अक्षरों में प्रेषित करें एवं उत्तर प्रेषित करते समय वाक्यों को पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है, मात्र प्रश्नों की क्रम संख्या लिखकर अभीष्ट उत्तर लिफाफे में बंद कर प्रेषित करें।**-सम्पादक**

प्रश्न (जिनवाणी के विभिन्न अंकों से उपयोगी वाक्य):-

1. कुछ बच्चे बौद्धिक स्तर पर उत्तम नहीं होते तथा भावानात्मक दृष्टि से भी असंतुलित होते हैं। ऐसे सभी बच्चों में भावनात्मक संतुलन उत्पन्न करने हेतु आध्यात्मिक शिक्षा अपेक्षित है।
2. आप अनन्त पुण्यशाली होते हुए भी क्यों भटक रहे हैं, इस पर चिन्तन करने की जरूरत है।
3. हम ऐसा घर बनाएँ जिसकी नींव में नैतिकता हो, जिसमें संयम की सीमेन्ट लगी हो, जो प्रामाणिक पत्थरों से निर्मित हुआ हो।
4. आत्मशुद्धि के फलस्वरूप ही सदा-सर्वदा के लिए समस्त समस्याओं की समाप्ति, जन्म-मरण से मुक्ति होती है।
5. विडम्बना यह है कि जिन व्यक्तियों में कामनाएँ कम हैं, उन्हें आज पिछड़ा समझा जाता है।
6. माँ! मत सुनाओ मुझे परी कथाएँ, मत घोलो अपने दूध में मीठे-मीठे सपनों की

खुशबू।

7. ममत्व एवं आसक्ति टूटने के कारण दान कर्म-निर्जरा का भी साधन बनता है। उत्कृष्ट भावना से दिया गया दान तीर्थंकर नाम प्रकृति के उपार्जन में भी कारण बनता है।
8. जहाँ संवेदनहीनता है, वहाँ हिंसा स्वतः जीवन में प्रवेश कर जाती है और जहाँ संवेदन शीलता है, वहाँ अहिंसा बिना बुलाए ही आ जाती है।
9. शाकाहारी भी शाकाहार साहित्य पढ़ें और जानें कि शाकाहार क्यों श्रेष्ठ है, ताकि मांसाहारियों की दलीलों, कुतर्कों तथा प्रश्नों का सही व समाधानपरक उत्तर दे सकें।
10. धर्मक्रिया के लिए बाह्य प्रलोभन स्थायी उपाय नहीं होते। वे प्रारम्भ में आकर्षित कर सकते हैं, किन्तु उन बालकों या व्यक्तियों को धीरे-धीरे धर्म के वास्तविक स्वरूप का बोध कराना चाहिए।
11. जो यह समझकर अभिमान करे कि यह सब सुख मेरे ही कृतित्व का फल है तो इस प्रकार का अहंकार भी वृथा है।
12. इस धरती पर ऐसे-ऐसे निःस्वार्थी, निर्मल मन वाले व्यक्ति भी मिल जायेंगे जो किसी देवता से कम नहीं होते।
13. जिस व्यक्ति की इच्छाशक्ति प्रबल नहीं होती, वह अवसरवादी होता है। उसके मन में अपने लक्ष्य के प्रति गहरी निष्ठा नहीं होती, इसलिए वह हवा के रुख के साथ बदल जाता है।
14. संस्कृत को परुषबंध अर्थात् कठोर बंध वाली तथा प्राकृत को सुकुमार बंध वाली भाषा मानते हुए दोनों में उतना ही अन्तर माना गया है जितना स्त्री एवं पुरुष में।
15. बम-पटाखे छोड़ने से वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। अनेक पशु-पक्षी दुःखी होते हैं। वायु प्रदूषण बढ़ता है।
16. युवक संघ का हर सदस्य सक्रिय हो। आपको आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा के सपनों को साकार करना है तो समर्पण के साथ संघ को सक्रिय बनाना है।
17. जैन दर्शन की एक प्रमुख देन अनेकान्तवाद, नयवाद एवं स्याद्वाद का प्रतिपादन है। सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से जानना नयवाद है।
18. भुने हुए चने, गेहूँ आदि अनाज, गुड़ आदि से संस्कृत पदार्थ तथा खजूर, नारियल, द्राक्षा, ककड़ी, आम, कटहल आदि अनेक प्रकार के फल खादिम जानना चाहिए।
19. दीपक आकार में कितना लघुकाय होता है, परन्तु घर भर का अंधकार मिटाकर उसे प्रकाश से भर देता है। अमृत की एक बूँद कितनी नन्हीं सी होती है, पर कितना बड़ा कमाल कर दिखाती है।

20. समता की साधना वीतरागता की साधना है। यह अहिंसा एवं अपरिग्रह की सी साधना है। अहिंसा का पूर्ण स्वरूप समता की साधना से ही प्रकट होता है।
21. "मुँह का मौन होना मौन नहीं, सच्चा मौन तो मन का मौन होना है।", 'तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।"
22. जैन परम्परा के अनुसार सृष्टि अथवा लोक अनादिकाल से चला आ रहा है तथा अनन्त काल तक चलता रहेगा। इसकी रचना किसी ईश्वर आदि के द्वारा नहीं की गई।
23. यदि आत्मिक भाव से आगमवाणी के आधार पर विचार करें तो विदित होता है कि यह यश का भाव मान कषाय का ही पोषक है। जिसमें कषाय है, वह जीव मोक्षगामी नहीं हो सकता।
24. तीर्थंकर भगवान् महावीर ने कहा- गृहस्थ में रहते हुए भी जीव सिद्ध हो सकता है, तभी तो गृहस्थ लिंग सिद्ध कहा गया।
25. "रात्रिभोजन का त्याग"। यह जैनों की प्रमुख पहचान है। आप लोग ट्रेन में यात्रा करते हैं, वहाँ पर सूर्यास्त के पूर्व जब आप भोजन करने का उपक्रम करते हैं तो सहयात्री तुरन्त कह देते हैं- क्या आप जैन हैं?
26. आगम, योग शास्त्र, चरक संहिता, मनु स्मृति, महाभारत आदि विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर रात्रिभोजन से विरति को श्रेष्ठ माना गया है।
27. 'महाभारत, शांतिपर्व'- रात्रि में पानी रक्त के समान हो जाता है और अन्न मांस के समान हो जाता है। रात्रि में भोजन करने वाले को तथा पानी पीने वाले को मांसभक्षण तथा रक्तपान के समान दोष लगता है।
28. हर घटना में प्रतिबोध निहित है। अनहोनी-अनदेखी घटना पर ज्यादा विचार न करें। जो होने वाला है उसे होने दें।
29. जो निश्छल स्नेह रखता है वह मित्र है तथा मित्र का समस्त प्राणियों के प्रति स्नेहभाव मैत्री है। भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा का एक सकारात्मक आयाम मैत्रीभाव है।
30. "सुण म्हारा जाया, करणी करता, कोई प्रमाद मती कीजो।
मुझको छोड़कर और जननी घर, जनम मत लीजो।।"
31. जो बीत गया उसका शोक करने की आवश्यकता नहीं है तथा भविष्य में क्या होगा इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। विचक्षण पुरुष वर्तमान के अनुसार व्यवहार करते हैं।
32. वाणी के द्वारा कहे गए दुष्ट और कठोर वचन दीर्घकाल के लिए वैर और भय के कारण

बन जाते हैं। अतः वाणी का प्रयोग सम्यक्तया विचार कर ही करना चाहिए।

33. हँसता जग मुझ पर, शराबी की पत्नी मान,
सुन-सुन कर ये ताने, निराश हुआ जीवन।
छोड़ दूँ इसको, तोड़ दूँ इससे नाता
नहीं, नहीं छोड़ूँगी इसे, यह मेरा पति है।

34. कामना की पूर्ति का साधन अर्थ है और मोक्ष की पूर्ति का साधन धर्म है। आपको धर्म पुरुषार्थ करना है। वही बन्धन काटने वाला है।

35. आचरण को चरित्र कहा जा सकता है। चरित्र आचरण को संयमित बनाने की शक्ति प्रदान करता है और इस शक्ति के माध्यम से व्यक्ति कामनाओं और वासनाओं पर नियंत्रण स्थापित करना है।

36. भीतर में राग व द्वेष की आग नष्ट नहीं होती, दबी रहती है, किन्तु साधना के द्वारा क्षणिक शीतलता वीतरागता प्राप्त हो जाती है, यह साधना का उपशम है।

आगामी पर्व तिथि

माघ शुक्ला 8, सोमवार	15.02.2016	अष्टमी
माघ शुक्ला 14, रविवार	21.02.2016	चतुर्दशी
माघ शुक्ला 15, सोमवार	22.02.2016	पक्खी
फाल्गुन कृष्णा 8, बुधवार	02.03.2016	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14, मंगलवार	08.03.2016	चतुर्दशी, पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8, बुधवार	16.03.2016	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14, मंगलवार	22.03.2016	फाल्गुनी चौमासी पर्व

दृष्टिकोण

श्रीमती कंचन जैन

हमें विद्यालय में त्रिकोण, चतुष्कोण,
लघुकोण, समकोण इत्यादि
सब पढ़ाया जाता है...
पर जो जीवन में सबसे अधिक एवं सदैव
उपयोगी है वह कभी नहीं पढ़ाया जाता
वह है "दृष्टिकोण"।

-सुराणा की बड़ी पोल, नागौर-341001 (राज.)

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें

भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी 6 का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में इतिहास-अध्ययन के लक्ष्य से जिनवाणी के माध्यम से प्रारम्भ की गई 'श्री भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता षष्ठ (अगस्त-2015)' में 189 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम संभागक्रम से इस प्रकार है-

संभाग/क्षेत्र	15 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
1. पल्लीवाल/दिल्ली/पंजाब	(1) अलका जैन-जम्मू	(1) श्री रतनलाल जैन-खेरली
	(2) संगीता रांका-फरीदाबाद	(2) अरुणाजी जैन-होशियारपुर
	(3) श्रेयांस जैन-हिण्डौन	(3) स्नेह जैन-गंगापुर
2. जयपुर/पोरवाल/मध्यप्रदेश	(1) आर्ची जैन-कोटा	(1) सुनिता ओस्तवाल-जयपुर
	(2) साधना छाजेड़-कोटा	(2) अनिल जैन-कोटा
	(3) पूजा हींगड़-जयपुर	(3) कल्पना जैन-सवाईमाधोपुर
3. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र	(1) सीमा जैन-जलगांव	(1) धनवंती नाहटा-नासिक
	(2) नेहा कोचर-नासिक	(2) शशीकला लुणावत-नासिक
	(3) हेमलता छाजेड़-शहादा	(3) इंदु कमलेश जैन-मलाड़
4. कर्नाटक/तमिलनाडु/आंध्रप्रदेश	(1) प्रेक्षा गुगलिया-हैदराबाद	(1) मनीषा कांकरिया-चेन्नई
	(2) हेमा बाघमार-सिंकदराबाद	(2) पारस जैन-बल्लारी
	(3) रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर	(3) मीना चोरड़िया-चेन्नई
5. मारवाड़/गुजरात	(1) उपमा चौधरी-अजमेर	(1) विमला जैन-अजमेर
	(2) रेखा आंचलिया-सरवाड़	(2) अरुणकुमार भण्डारी-अहमदाबाद
	(3) निधि कम्भड़-सरवाड़	(3) सुगनचन्द छाजेड़-जोधपुर

6. ग्रुप में-
(1) महादेवी जैन/प्रेमबाई जैन/शशिकांता जैन/कुसुम जैन-गंगापुर
(2) हर्षा जैन/पुष्पा गादिया-पाली
(3) प्राची महावीरजी संचेती/तनुजा कोठारी-धुलिया

परिणाम के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री गौतम जी जैन, पचाला-090010-17837

उत्तरतालिका (भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी 6)

1. 250 वर्ष पश्चात् **2.** 12.5 वर्ष **3.** शुक्र ने

4. 700 मुनि	5. भगवती सूत्र	6. 6 मास
7. पोलास चैत्य में	8. आचार्य मुनिचन्द्र की	9. 13 मास
10. महावीर	11. 10 स्वप्न	12. कानों से कील निकालने का
13. Bonus/ पुस्तक में अप्राप्त	14. जृंभिका	15. मध्यमणता/पावापुरी
16. 10 रानियों ने	17. आजीवक मत	18. कालोदायी श्रमण ने
19. राजा श्रेणिक ने	20. कटपूतना व्यन्तरी का	21. दशमी
22. सिद्धार्थ त्रिशला,ऋषभदत्त देवानन्दा		23. आनन्द श्रावक ने
24. कामदेव श्रावक ने	25. श्रावस्ती	26. सिद्धगति/मोक्ष
27. 9 मास का	28. बारहवें स्वर्ग का	29. जमालि और तिष्यगुपत
30. कौशाम्बी	31. 500 व्यक्तियों के साथ	
32. रोहक मुनि ने	33. विजय	
34. रथमूसल अस्त्र के प्रयोग के कारण		35. 32 भेद
36. विपाक सूत्र एवं उत्तराध्ययन सूत्र		37. देव शर्मा ब्राह्मण को
38. राजगृही नगरी में	39. 50 वर्षों का	40. 2 गणधर
41. पुण्यपाल राजा को	42. 2004 आचार्य	43. इन्द्रभूति गौतम ने
44. 9 चातुर्मासिक तप	45. 5 प्रकार की	46. 349 दिन
47. परमान्न (खीर) से	48. अष्टम स्वर्ग	49. 13
50. दात्री की आँख में आँसू हो		

51. राजगृही के नालन्दा में विजय सेठ के यहाँ	52. अभावित परिषदा से
53. जीव के अस्तित्व विषयक शंका का	54. श्रावक-शंख,शतक श्राविका-सुलसा
55. उप्पणेई वा विगमेई वा धुवेई वा	56. कालशौकरिक और कपिला ब्राह्मणी
57. जितशत्रु राजा और पुद्गल परिव्राजक	58. रज्जुग सभा
59. 470 वर्ष पश्चात्	60. हस्तिपाल राजा और पावापुरी नगरी में

'आओ स्वाध्याय करें' के प्रतियोगियों हेतु सूचना

'आओ स्वाध्याय करें' प्रतियोगिता के अन्तर्गत विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में हस्तांतरित की जाएगी। प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ अपने बैंक का नाम, खाते का प्रकार, खाता धारक का नाम, खाता संख्या एवं बैंक **IFS Code** एवं मोबाइल नं. की जानकारी पत्र द्वारा इस पते पर भेंजे- **अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्**, सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

-मनीष लोढ़ा, महासचिव

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जैन धर्म की आराधना एवं साधना- न्यायाधिपति जसराज चौपड़ा, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन नं. 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***-344+10, ***मूल्य***- 300 रुपये, सन् 2015

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् विभिन्न बोर्ड एवं आयोगों की अध्यक्षता करने वाले न्यायमूर्ति श्री जसराजजी चौपड़ा ओजस्वी एवं प्रखर वक्ता हैं। उन्होंने हांगकांग में दूसरी बार पर्युषण पर्व में जो पंच महाव्रतों पर व्याख्यान दिए, उन्हीं का संकलित रूप में यह प्रकाशन है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह व्रतों के विवेचन के साथ सूक्तियाँ, दोहे, कवित्त और कथानक भी योजित हैं। वैदिक, सनातन, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख, यहूदी आदि धर्मों के सिद्धान्त एवं विचारों को यथास्थान संवलित करना लेखक के विचारों की उदात्तता प्रकट करता है। वे कहते हैं कि अहिंसा सब व्रतों की मातृशक्ति है, वह एक ऐसा व्रत का महासागर है जिसमें समस्त व्रतों की नदियाँ आकर समाहित होती हैं। सत्यव्रत के विवेचन के अन्तर्गत गौतम गणधर का प्रश्न है- "सत्य को कैसे जाना जाता है?" तो उत्तर में भग फरमाया- "कर्म को छोड़ दो। मन विकल्पों से मत भरो, मौन रहो एवं शरीर को स्थिर रखो।" कर्म के सम्बन्ध में पुनः प्रश्न किया जाता है कि कर्म के बिना जीवन कैसे चलेगा? उत्तर में कहते हैं- "हे गौतम! संयत कर्म करो।" सत्य क्या है, इसके सम्बन्ध में प्रभु महावीर कहते हैं- ***"तमेव सच्चेव निस्संकं जं जिणेहि पवेइयं"*** अर्थात् सत्य वह है, जो आप्त पुरुषों द्वारा कथित हो, क्योंकि वे यथार्थदर्शी होते हैं, उनका दर्शन सत्य, निर्मल व असंदिग्ध होता है।

लोभ ही चौर्य-कर्म का कारण है, अतः लोभ का संवर करो। ब्रह्मचर्य के विषय में जैन के साथ ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध धर्म के मन्तव्यों को भी प्रबुद्ध लेखक ने प्रस्तुत किया है। पदार्थ के प्रति आसक्ति, ममत्व, मेरेपन का भाव ही परिग्रह है।

पुस्तक में अहिंसा, सत्य आदि से सम्बद्ध कथानकों का संग्रह विशेष है, जिसमें लेखक की दृष्टि एवं उनके स्वाध्यायशील होने का स्वतः अनुमान होता है। कुछ कथानकों का यहाँ संकेत किया जा रहा है- **अहिंसा के सम्बन्ध में**- अंगुलिमाल, जार्ज बर्नार्ड शॉ,

अकबर-बीरबल, संत नामदेव, कुमारपाल, फकीर अबु इसहाक इब्राहिम खवास, तपस्वी अब्दुल कासिम, लाला जंबु प्रसाद, सूफीसंत रानिया एवं हसन बसरी, अब्राहम लिंकन, मुहम्मद साहब, स्वानुभव आदि; **सत्य के सम्बन्ध में**– गोपाल कृष्ण गोखले, अकबर-बीरबल, साधक इमेनुअल, स्कॉटलेंड की घटना, अब्राहम लिंकन, मल्लिक सेठ व दस्युदल; **अस्तेय के सम्बन्ध में**– महाराणा मेवाड़, गुणभद्र श्रेष्ठी, अग्निकुमार आदि; **ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में**– सूफी संत, बौद्ध भिक्षु, वाचस्पति मिश्र और भामती, कोशा, शिवाजी, वीर दुर्गादास, वेदव्यास, राजा ययाति, स्थूलिभद्र, विजयकुमार-विजयकुमारी, तिरुवल्लुवर, विवेकानन्द, गुजरात नरेश, मारवाड़ नरेश, चित्त मुनि आदि; **अपरिग्रह के सम्बन्ध में**– कर्ण, पूणिया श्रावक, संत एकनाथ, संत युक्तेश्वर, श्री राम, रबिन्द्रनाथ ठाकुर, शेखसादी, अर्नेस्ट कैसल, महर्षि नारद, एस्किमो जाति, योगी गोरखनाथजी, ऋषि याज्ञवल्क्य, सिकन्दर, खलीफा एवं बुढ़िया, आल्सीबाईडिस एवं महात्मा सुकरात आदि। यह पुस्तक स्वाध्यायियों एवं सुधीजनों के लिए उपादेय है।

प्राकृत की पुरुषार्थ कथाएँ- प्रो. प्रेमसुमन जैन, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन नं. 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***-159, ***मूल्य***- 120 रुपये, प्रथम संस्करण सन् 2015

प्रस्तुत पुस्तक में उद्योतनसूरि द्वारा प्राकृत भाषा में निबद्ध 'कुवलयमाला कहा' की कथाओं को सुबोध हिन्दी में संगृहीत किया गया है। ये कथाएँ बताती हैं कि व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम-पुरुषार्थ करते हुए कैसे मोक्ष पुरुषार्थ की प्राप्ति कर सकता है। इन कथाओं में साहस, धैर्य, सदाचरण, पुरुषार्थ जैसे गुणों का परिपाक जीवन में होते हुए दीखता है। इनका सांस्कृतिक एवं साहित्यिक महत्त्व भी अनुभूत होता है। लेखक प्राकृत-पालि, जैन-बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति के गहन अध्येता हैं, अतः उन्होंने प्राकृत कथाओं के हार्द को यहाँ प्रस्तुत किया है। इसमें 26 कथाओं का वर्णन है, यथा- राजा दृढ़वर्मन, कुवलयचन्द्र, चण्डसोम, सागरदत्त, राजा दर्पफलिक आदि। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत कुवलय-मालाकहा का मूल सानुवाद अनुच्छेद 1 से 12 तक दिया गया है। कथाकारों, शोधार्थियों, सुधी पाठकों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

भविष्यदत्त काव्य- ***सम्पादक एवं अनुवादक***- प्रो. राजाराम जैन, ***प्रकाशक***- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, खण्डेलवाल जैन मंदिर परिसर, 5, राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 ***पृष्ठ***-343, ***मूल्य***- 900 रुपये, प्रथम संस्करण, सन्- 2015

महाकवि विबुध श्रीधर कृत भविष्यदत्त-काव्य की पाण्डुलिपि का सम्पादन एवं अनुवाद कर लेखक ने जैन साहित्य की निधि में वृद्धि की है। यह काव्य उत्तर-मध्यकालीन भारतीय संस्कृति एवं समाज का निदर्शन है। यह संस्कृत भाषा में 15 सर्गों में आबद्ध है। इसमें कुल 1513 श्लोक अनुष्टुप् छन्द में वेष्टित हैं। शान्त रस की प्रमुखता के साथ वीर एवं शृंगार रस का भी संयोजन है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास, काव्यलिंग, परिसंख्या आदि अलंकारों की सुन्दर योजना की गई है। भविष्यदत्त के जीवन में आए उतार-चढ़ाव से यह कथा रोचक एवं पाठकों के लिए आकर्षक है। लेखक ने इस ग्रन्थ का सम्पादन कर संस्कृत भाषी पाठकों एवं इसका अनुवाद कर हिन्दी भाषी पाठकों के लिए इसे सुलभ करवाया है। अनुवाद सरल एवं सहज प्रतीत होता है। प्रो. जैन की समीक्षात्मक प्रस्तावना पढ़कर ही ग्रन्थ-पठन की रुचि हो जाती है। विषयानुक्रमणिका वृहत् एवं समृद्ध है। विषय-वस्तु का बोध अनुक्रमणिका से ही हो जाता है। अन्त में शब्दानुक्रमणिका भी संयोजित है।

जीवन-व्यवहार

जीवन के सत्य

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.

भोगी वह है
जिसे संसार से निकलना पड़ता है।
जबकि योगी वह है
जो संसार से निकल जाता है।
फर्क समझ में नहीं आया ना?
एक को संसार ''डिसमिस''
कर देता है।
जबकि दूसरा संसार से
'त्यागपत्र' दे देता है।
किसमें नंबर लगाना है?
सोच लेना।

जेब से दस रुपये की नोट गिर गई
यह खयाल आते ही मानव का चेहरा
उतर जाता है, लेकिन
नाशवंत पदार्थ बढ़ाने के पीछे,
भ्रामक ख्याति की प्राप्ति के पीछे
जीवन के अति महत्त्वपूर्ण कहे जा सकें
ऐसे पचास वर्ष बीत गये हैं
ऐसी प्रतीति होने के बाद भी
मानव के चेहरे पर कोई
व्यथा नहीं दिखती।
करुणता ही है ना?

-'इशारा' पुस्तक से साभार

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(02 फरवरी, 2016)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.आदि ठाणा 6 जयपुर से दूदू की ओर विहार कर रहे हैं। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आपके साथ हैं।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 हाउसिंग बोर्ड स्थानक, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जोधपुर के लक्ष्य से विहार चल रहा है। अभी शिवाजी नगर-किशनगढ़ में विराज रहे हैं। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी आपके साथ हैं।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 अलवर से विहार कर जयपुर पधार गए हैं। लालभवन में विराज रहे हैं। आगे दूदू की ओर विहार संभावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 11 एवं सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 3 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 नसियाँ कॉलोनी, गंगापुरसिटी विराज रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 का दूदू की ओर विहार चल रहा है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 का जयपुर से दूदू की ओर विहार चल रहा है।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 विनोदनगर-ब्यावर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 तिहारी विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4, सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5 दूदू विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 किशनगढ़ विराज रहे हैं। दूदू की ओर विहार संभावित है।

- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 उष्मा नगर, मलाड (वेस्ट), मुम्बई विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 8, व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 लासूर स्टेशन विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 धारवाड़ विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 अशोक विहार-दिल्ली विराज रहे हैं।

जयपुर को लाभान्वित कर आचार्यप्रवर का दूदू की ओर विहार

जयपुर में हर दिन उत्साह एवं उमंग के साथ हुई धर्माराधना

22 जनवरी को आचार्य हस्ती का 106 वां जन्म-दिवस

आत्मबल, मनोबल, संकल्पबल जब प्रबल होता है तब अवस्थाजन्य स्थिति, शारीरिक अशक्तता सब गौण हो जाया करती है। ऐसे ही संकल्प बल के धनी आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ की सौरभ, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परमाराध्य, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 चरवैति-चरवैति के आघोषानुसार पावन पादयुग्म आगे बढ़ाते हुए गुलाबी नगरी के उपनगर जवाहर नगर के महावीर साधना केन्द्र में 29 दिसम्बर 2015 को पधारे। सैकड़ों की उपस्थिति में मंगलमय पावन पदार्पण के समय जयनाद के उद्घोष का समवेत स्वर समूचे विहार मार्ग में गुंजायमान रहा। **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.**, श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा 5, **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभाविनी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 7, व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5** को वर्षावास पश्चात् पूज्य आचार्य भगवंत के पावन दर्शनों का सुयोग मिला। समागम पर चतुर्विध संघ का समवसरण जैसा परिदृश्य रहा, जो शब्दातीत है।

30 दिसम्बर को पंजाबी सम्प्रदाय के संघनायक श्री पदममुनिजी म.सा. की

आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सुचारू जी म.सा. व महासती श्री सुनितजी म.सा. ने पूज्य आचार्य भगवंत के दर्शन-वन्दन कर पावन सेवा सन्निधि का सुन्दर लाभ लिया। 31 दिसम्बर को पूज्यप्रवर का गुलाबी नगरी के हृदय-स्थल लाल भवन, चौड़ा रास्ता में पधारना हुआ। अच्छी उपस्थिति से चौड़ा रास्ता की सड़क भी संकड़ी पड़ गई। इस दिन वर्ष का अन्तिम दिन होने से देश के दूरवर्ती एवं निकटवर्ती अनेक स्थानों से श्रद्धालु भाइयों के अतिरिक्त महानगर के गुरुभक्तों ने भी पावन श्री चरणों में संवराराधना करने का लक्ष्य रखा। लाल भवन का विशाल परिसर लगभग 250 संवर साधना से शोभित हो रहा था। मध्य रात्रि तक भजनों के सुमधुर स्वरों से वातावरण भक्तिमय बना रहा। महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के तो जैसे दर्शन मोहनीय कर्म का क्षय हुआ लगता है। जब भी रात्रि में उन्हें देखेंगे, जप-माला में बैठे रहते विराजमान मिल जायेंगे। उन्होंने भक्तों की भावना को ध्यान में रखते हुए रात्रि 12 बजे पश्चात् नववर्ष की मांगलिक फरमाई।

नव वर्ष 2016 की सुप्रभात पर सभी अन्तर से मंगल की चाहना रखते ही हैं। इसी भावना से महापुरुषों के पावन मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण करने लाल भवन में विशाल संख्या में भाई-बहिन पधार आये थे। पूज्य आचार्य भगवंत ने प्रातः 7.30 बजे मंगल पाठ फरमाने की महती कृपा कर उपकृत किया। नववर्ष पर दो हजार से अधिक की संख्या प्रथम बार देखी गई। लाल भवन का यह ऐतिहासिक दृश्य था। न्यायाधिपति श्री जैनेन्द्रकुमारजी रांका ने वर्ष का शुभारंभ पूज्य गुरुदेव के दर्शन लाभ से किया।

1 जनवरी 2016 को प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी ने सम्बोधित किया। आचार्यप्रवर ने भी मंगल भाव व्यक्त किए। इस अवसर पर पंजाबी महासती श्री सुचारूजी एवं सुनीतिजी ने भी विचार व्यक्त किए एवं संतों एवं साध्वियों की नामावली सहित स्तुति प्रस्तुत की। प्रवचन सभा में उपस्थिति देखते ही बनती थी।

1 से 3 जनवरी तक स्वाध्यायी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। 4 जनवरी को भगवान पार्श्वनाथ का जन्म-कल्याणक था, जिसे उपवास, 400 एकासन, दया व सामूहिक सामायिक की आराधना अच्छी संख्या में कर तप-त्याग के साथ मनाया गया। राज्य सेवा के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री महेन्द्रजी पारख ने चरण सन्निधि का लाभ लिया। लाल भवन में 31 दिसम्बर से 4 जनवरी तक पूज्य गुरुदेव का विराजना हुआ। पाँचों ही दिवस पर्युषण जैसा अभूतपूर्व प्रसंग बना रहा। रात्रि में नियमित संवर-साधना हुई। पूज्य आचार्यप्रवर दोपहर 2 बजे बाद विहार कर रत्न स्वाध्याय भवन, तख्तेशाही रोड़ पधार आये। 5 से 7 जनवरी तक रत्न स्वाध्याय भवन में विराजकर धर्म प्रभावना की। 8 जनवरी को बजाज नगर स्थित साधना भवन में पूज्यप्रवर का पधारना हुआ। प्राणिमित्र, पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता,

एस.एम.एस. अस्पताल के पूर्व अधीक्षक श्री एस.आर. मेहता तथा राजस्थान सरकार के प्रतिपक्ष नेता श्री रामेश्वरप्रसाद जी डूंडी ने पूज्य आचार्य श्री की सेवा सन्निधि के साथ दर्शनों का लाभ लिया। यू.एस.ए. एवं युगोस्लाविया से तथा योगा परमहंस फिल्म के प्रोड्यूसर आदि मुम्बई से श्री एस. आर. मेहता साहब के साथ दर्शनार्थ आये। 9 जनवरी को पूज्य श्री मालवीय नगर पधारे। यहाँ का सम्पूर्ण संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ।

10 जनवरी को आचार्य देव महावीर नगर स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में उल्लास पूर्ण वातावरण में पधारे। संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, शासन-सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, संघाध्यक्ष श्री पी.एस. सुराना आदि पदाधिकारीगण, जो संचालन समिति की बैठक में पधारे थे, ने दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त ने प्रभावी एवं संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया- ''**अनेकानेक संघ होते हुए भी क्रियोद्धारक होने से रत्नसंघ की परम्परा आज तक अक्षुण्ण चल रही है। सामायिक-स्वाध्याय के कारण आज भी भगवंत के उपकार से संघ उपकृत है। श्रावक संघ, श्राविका संघ, युवक परिषद् ये तीनों मिलकर 9 नियमों का पालनकर इस गौरव को वर्धापित कर इस व्यवस्था के अभियान को आगे बढ़ायें।** रत्न संघ के संत-सतियों का गौरव बढ़े, इस हेतु दैनिक साधना चार्ट भरना प्रारम्भ करवाया। मैं स्वयं रोजाना नियम भर रहा हूँ। आचार पक्ष की प्रधानता है। संत-सतियों के समीप मर्यादा का पालन करें। आप दर्शन एवं मंगल पाठ के अधिकारी हैं, पर असमय दर्शन व्यवहार अशोभनीय है। सभी अधिकारी पालन कर सहयोग करें। देश में संघ की जो ख्याति है, उस पर चार चाँद लगायें। कार्यकाल तीन वर्ष का होता है। **हर पदाधिकारी सामायिक संघ का सदस्य हो। लगन के साथ हर कार्यकर्त्ता, कर्त्तव्य समझकर कार्य करे। पदाधिकारी गण कार्यकर्त्ता से कार्य की पृच्छा कर कर्त्तव्य का निर्वहन करें। सभी संस्थाएँ अपना कार्य बिना विक्षेप डाले करती रहें।** अधिकारी सुस्त होगा तो संस्थाओं के कार्य में शिथिलता आयेगी। सभी अपना दायित्व समझते हुए कार्यरत रहेंगे, ऐसी भावना है।'' मालवीय नगर जयपुर व शक्तिनगर संघ, जोधपुर विनति लेकर उपस्थित हुआ।

12 जनवरी को **मुमुक्षु बहिन सज्जनकंवरजी, मुमुक्षु बहिन नेहा जी, मुमुक्षु बहिन रुचिताजी, मुमुक्षु बहिन खुशबूजी की शोभायात्रा** महावीर नगर संघ की ओर से निकाली गयी। मुमुक्षु बहिनों का संघ की ओर से तथा व्यक्तिशः बहुमान किया गया। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रवचन सभा में फरमाया- ''सुनने वालों, बोलने वालों व जय-जयकार करने वालों तथा जाजम पर बैठने वालों से यह शासन चलने वाला नहीं है।

क्रिया करने वालों से यह शासन चल रहा है। मत भटकिये, मत रुलिये, अनन्तकाल के लिये सुख पाने वाले मार्ग पर आइये।'' किशनगढ़ संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हुआ। विहार के क्रम में 13 को प्रतापनगर (सांगानेर), 14 को महारानी फार्म, गायत्रीनगर-ए एवं 15 को पोरवाल भवन, गौरी विहार, 16 जनवरी को मानसरोवर, किरणपथ स्थित महावीर भवन पधारे। प्रातः से ही कोहरा छाया हुआ था, इस कारण से मानसरोवर 11 बजे के लगभग पधारना संभव हो पाया। अलवर संघ चातुर्मास की भावना लेकर पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। 17 जनवरी को पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के उपस्थित हो रहे 106 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 106 बकरों को अभयदान देकर भोपालगढ़ बकरा शाला में भिजवाने का मानसरोवर संघ ने जयपुरवासियों के सहयोग से अनुकम्पा करुणा-दया का सुन्दर आदर्श प्रस्तुत किया। दर्शनार्थ आये जिला न्यायाधीश श्री हेमन्त जी पारख को नित्य सामायिक करने की प्रेरणा की गई। 16 से 18 जनवरी तक पूज्यप्रवर का मानसरोवर विराजना हुआ। पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा ने सेवा सन्निधि का यथाशक्य बराबर लाभ लिया।

19 को विहार कर पूज्यप्रवर आराधना भवन, श्याम नगर पधारे। यहाँ प्रवचन सभा में 21 जनों ने प्रतिदिन स्थानक में आकर सामायिक करने का नियम लिया। 20 को प्रवचन फरमाकर 2 बजे बाद गुलाबी नगरी के अन्तिम छोर पर बसे नित्यानन्द नगर की धरा पर पूज्यपाद का पधारना हुआ। मदनगंज संघ पूज्य श्री की सेवा में अनेक बार उपस्थित होकर यही निवेदन करता आ रहा है कि हमे भी किसी न किसी प्रसंग का लाभ प्रदान करने की महती कृपा करावें। 21 को मुम्बई से श्री रणजीतसिंह जी कूमट भूतपूर्व आईएएस एवं बैंगलोर से नेशनल क्रान्फ्रेंस के भूतपूर्व चेयरमेन श्री केसरीमल जी बुरड़ दर्शन लाभ की भावना से पावन चरण सन्निधि में उपस्थित हुए।

22 जनवरी को पौष शुक्ला चतुर्दशी होने से पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस था। उपवास, एकासन व कम से कम तीन-तीन सामायिक की साधना सहित मनाये जाने का आह्वान किया हुआ था। गुरुभक्तों ने इससे भी अधिक बढ़-चढ़कर उल्लास व उमंग के साथ तप-त्याग-व्रत प्रत्याख्यान के सुन्दर रूप का आदर्श प्रस्तुत किया। 170 के लगभग उपवास, 355 के लगभग एकासन की साधना के साथ बेला, तेला, दया, आयम्बिल आदि के प्रत्याख्यान पूज्य आचार्यप्रवर के पावन मुखारविन्द से हुए। पधारने वाले अधिकतर भक्तों ने सामायिक साधना की। सामायिक और स्वाध्याय रत्नसंघ के श्रावकों की मौलिक पहचान है। श्रावक-श्राविका, युवापीढ़ी जब कहीं अन्यत्र सामायिक करते हुए दिखने में आ जाते हैं तो वहाँ विराजित संतों व उनके भक्तों के मुख से

यही शब्द सुनने को मिलते हैं- 'आचार्य हस्ती के भक्त लगते हो' इस सम्पदा में वर्धापन आये, इस हेतु पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी भी हर समय आगतों को सावचेत करते रहते हैं। इसी का प्रतिफल है कि आज अनेक धर्मस्थानों पर सामायिक की साधना का क्रम अनवरत बना हुआ है।

पौष सुदि चतुर्दशी का नाम आते ही गुरुभक्तों को पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का स्मरण हो ही आता है। त्याग-तप नहीं करने वाले भी इस दिन अर्घ्य अर्पित करते देखे हैं। गुरुदेव ने तो जीवन भर दिया ही दिया। हर भक्त की झोली भरी। ऐसी भावना लिये प्रवचन समय से पूर्व क्वीन्स रोड़ स्थित संजय पुंगलिया फार्म हाउस पर श्रद्धालु भक्तों का समूह पहुँच चुका था। ज्योंही पूज्य आचार्य भगवन्त का पावन पर्दापण हुआ, जयनिनाद के स्वर गूँज उठे। सर्वप्रथम **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने सहज सरल भाषा में फरमाया- वे पाँच महाव्रतों के पालन में सजग थे। आचरण के आचार्य थे। वे सत्य के उपासक थे। उनकी हर बात सत्य घटित होती। अहिंसा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। छेड़े हुए सांप को हाथ से उठाकर झोली में रखना, करुणा की पराकाष्ठा का सुन्दर उदाहरण है। **महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा.**- आचार्य हस्ती को मां रूपा सती से सारे गुण विरासत में मिले। 6 वर्ष में चौविहार, 10 वर्ष में संयम, 15 वें वर्ष में आचार्य मनोनीत, 20 वें वर्ष में संघ का भार, 23 वें वर्ष में केकड़ी में दिगम्बर मतावलम्बियों से वाद-विवाद चर्चा। उन्होंने अनुत्तर धर्म व श्रेष्ठ जीवन जीकर आत्म जागरण का परिचय दिया। **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.**- गुरुहस्ती भगवान तेरा नाम तारण हार है। वे जैसा बोलते थे, वैसा करते थे। वे साधना के धनी थे। उनकी साधना के ऐसे पुद्गल थे- आने वाले की आधि, व्याधि समाप्त हो जाती और समाधि मिलती। वे निर्लेप नारायण थे।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.- गुरु हस्ती का उपकार भुलाया नहीं जा सकता। वे आचारांग के आचार्य थे। 'समयं गोयम! मा पमायए' के श्रेष्ठ साधक थे। 'उट्ठिए नो पमायए' के उत्तम आराधक थे। ठाणांग के अनुसार श्रुत सम्पन्न व शील सम्पन्न थे। उनमें गुण सम्पन्नता बेजोड़ थी, पर लोकैषणा के भाव नहीं थे। जाते-जाते भी उपकारी गुरु हमें अनमोल रत्न देकर निहाल कर गये।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा.- "गुरुदेव ने जीवन भर सामायिक का शंखनाद किया। आज तक जो सामायिक से नहीं जुड़े हैं, वे सामायिक करना प्रारम्भ करें। आज के दिन मेरी यही भावना है। आत्मा में पाप का उदय था, इसीलिये हुण्डावसर्पिणी काल में जन्मे हैं। स्वाध्याय कर निर्जरा कीजिये। स्वाध्याय करते-करते वैरागी बने हैं, संत बने हैं, आचार्य भी हुए हैं। सिपाही के हाथ पर आप रुक जाते हैं। आप

पाप से रुकें, इसके लिये कौनसी वाणी बची है, जिसे सुनायें। आप अम्मापियरो हैं, मर्यादा का उल्लंघन न करें। महाव्रतों के पालन में आप कितना सहयोग कर रहे हैं? आचार्य भगवंत को आगे बढ़ाने में जैसी व्यवस्था रही, वैसा सहयोग आज भी अपेक्षित है। उन्हें बंद कमरे में पण्डित पढ़ाया करते थे। स्वामी भोजराज जी यदि आवश्यक होता तो खिड़की से दर्शन करवाते। कभी अकेले में महिलाओं को देखने, बात करने का प्रसंग तक नहीं आया। माँ रूपा सती से भी कभी अकेले में बात नहीं की। इसी कारण उनके अखण्ड बाल ब्रह्मचारी विशेषण लगता है। मैंने दिगम्बर, श्वेताम्बर, मंदिरमार्गी, तेरापंथ के संतों को देखा है, सुना है, पर अखण्ड शब्द का विरुद आचार्य भगवन्त के साथ ही है। **असमय में संत के समीप बहिनों का रहना तथा सतियाँजी के पास अकेले में भाई का बैठना मर्यादा का अतिक्रमण है।** संघ के पदाधिकारियों में इस विषयक कितना विवेक है? इन्द्रनाथजी मोदी ने कभी अतिक्रमण नहीं किया। संतों को आगे बढ़ाने में, मर्यादा पालन में सहयोगी बने, ताकि गुरु हस्ती जैसी छिपी प्रतिभा का निखार हो सके। **संतों को घड़ने, तैयार करने का अवसर उपलब्ध करवाये जाने की जिम्मेदारी चतुर्विध संघ की है।** आज भक्त संत को बिगाड़ रहे हैं। आपकी नजदीकी सन्तों के महाव्रत पालन में सहयोगी बने। जयपुर का संघ जिनवाणी का रसिक होने से प्रसिद्ध है। आप विवेक के साथ श्रद्धा का रूप रखिये। कई बार धर्म मार्ग पर अनुसरण के लिये समयदान करने का आह्वान कर चुका। 'वंदे तद्गुण-लब्धये' कथन के अनुसार गुणग्रहण की भावना रखी जानी चाहिये और उन गुणों को प्राप्त करने की उत्सुकता बढ़नी चाहिए। गुरुदेव ने अधजले सांप को ओघे पर लेकर बचाया। आप भी जैन हैं, कीड़ी को बचाने का प्रयास करते हैं। ऐसा विचार कर **भ्रूण हत्या जैसा जघन्य पाप नहीं करने का संकल्प तो ले सकते हैं।** उनके गुण आपके हमारे जीवन में आयें। आप सुविज्ञ हैं, कड़वी बात को अन्यथा न लें। दृढ़ धर्मी बन, जीवन में आचरित करें। इससे हमारा सुनाना, आपका सुनना, गुरुदेव का जन्मदिवस मनाना सार्थक होगा।" **यहाँ मंदिरमार्गी संत श्रद्धेय श्री मणिरत्नसूरिजी म.सा. नित्यानंदनगर में पधारे, गुरुदेव के दर्शन किए।**

23 जनवरी को पूज्यप्रवर विहारकर तिवाड़ी कॉलोनी, 24 को प्रातः भांकरोटा में श्री विमलचन्दजी डागा के फार्म हाउस पर प्रवचन फरमाकर 2 बजे पावनश्री चरण बढ़ाते हुए श्री अजीतजी मधुजी विराणी के फार्म हाउस पर रात्रि साधना कर 25 को श्री के.जी. कोठारी के गढ़ पर विराजकर 26 को बड़ के बालाजी स्थित श्री पदमजी मंजूजी कोठारी के फार्म हाउस पर दर्शनार्थ आगत गुरुभक्तों को सामायिक साधना की प्रेरणा करते हुए 27 को बगरू स्थित श्री के.जी. कोठारी के फार्म को फरसते हुए 28 को छितरोली पधार आये।

ब्यावर संघ भांकरोटा में एवं अजमेर व हरमाड़ा संघ अपनी विनति लेकर बड़के बालाजी पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारे। छितरोली में राज्य के गृह मंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया की धर्म सहायिका सुश्राविका श्रीमती अनिताजी कटारिया ने पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन व सेवा सन्निधि का लाभ लिया। जयपुर से श्री रोशनलालजी हीरावत अपने पिता धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री स्वरूपचंदजी हीरावत के स्वर्गगमन पर परिवार जनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारे। 29 जनवरी को ग्राम महलां में पावन पदार्पण हुआ तथा आगे निरन्तर दूदू की ओर बढ़ रहे हैं। -*जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में धर्माराधन की निरन्तरता

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 नेहरू पार्क के ऐतिहासिक चातुर्मास पश्चात् सरदारपुरा व शास्त्रीनगर क्षेत्र को फरसते हुए श्री उम्मेदमलजी गाँधी की आग्रह भरी विनति को स्वीकार कर महावीर वाटिका, देवनगर पधारे। धर्म-ध्यान का अच्छा ठाट रहा। 16 जनवरी 2016 को वहाँ से विहार कर 18 जनवरी को स्वाध्याय भवन चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पधारे। प्रवेश के दिन 21 एकाशन की भेंट दी गई तथा अच्छा धार्मिक वातावरण रहा। पौष शुक्ला चतुर्दशी 22 जनवरी 2015 को आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में त्याग, तपस्या, व्रत-पचक्खाण के साथ मनाया गया तथा लगभग 125 एकाशन से अधिक के पच्चखान हुए। पावटा में विराजित साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के सान्निध्य में भी लगभग 50 से अधिक एकाशन के पचक्खान हुए। व्याख्यान में बहुत अच्छी उपस्थिति रही। 28 जनवरी को उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 82 वां जन्मदिवस धर्म-ध्यान व त्याग-तपस्या के साथ मनाया गया। प्रातः 7.30 से 8.30 बजे नवयुवकों की सामूहिक सामायिक में बहुत अच्छी उपस्थिति रही। प्रवचन हॉल खचाखच भरा हुआ था। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा के सान्निध्य में सभी श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 82 वन्दना का कार्यक्रम तथा प्रवचन पश्चात् श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 25 वंदना, 25 लोगस्स, 25 नमोत्थुणं का कार्यक्रम रखकर सभी ने अपनी उत्कृष्ट भक्ति का परिचय दिया। उपाध्याय-भगवन्त के शारीरिक समाधि बनी हुई है एवं धर्मध्यान का ठाठ लगा हुआ है। -*उषा बोहरा*

सरवाड़ में धर्मप्रभावना

सरवाड़ (जिला-अजमेर)- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के द्वारा प्रबल प्रेरणा किए जाने से पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 52 वें दीक्षा-दिवस पर 17 नवम्बर को 48 तेले की तपस्या हुई तथा पाँचों महासतीजी ने भी एकसाथ

तेले की तपस्या की, जिससे 53 तेले सानन्द सम्पन्न हुए। नवम्बर माह में कुल 7 बार जाप हुए, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 15 नवम्बर को जाप दिवस, 16 नवम्बर को ज्ञानपंचमी के लोगस्स का जाप करके जैन पाठशाला का शुभारम्भ किया गया। 17 नवम्बर को आधा घण्टा जाप एवं प्रवचन में पूज्य आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव का दीक्षा दिवस तीन दिन तक मनाया गया। 22 नवम्बर को 150 सामूहिक एकाशन हुए। 24 नवम्बर को सामूहिक दया का आयोजन किया गया। 25 नवम्बर को वीर लोंकाशाह जयन्ती के अवसर पर महासतीजी के द्वारा अनेक व्रत-प्रत्याख्यान करवाए गए, जिनमें नवकारसी, 1 वर्ष में 25 नींवी, एकान्तर उपवास आदि की साधना शामिल है। 125 एकाशन के नियम एवं संवर-आराधना के भी नियम लिए गए। मंत्री श्री सुरेन्द्रकुमारजी कक्कड़ सहित चार जनों ने माह में 28 दिन ब्रह्मचर्य व्रत पालन का नियम लिया। सरवाड़ चातुर्मास में 6 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए- 1. श्रीमती एवं श्री गुमानचन्दजी मोदी-सरवाड़, 2. श्रीमती व श्री देवीसिंहजी महता-सरवाड़, 3. श्रीमती व श्री भँवरसिंहजी कक्कड़-सरवाड़, 4. श्रीमती व श्री गुमानचन्दजी पगारिया-सरवाड़, 5. श्रीमती व श्री शान्तिलालजी गोखरू-सरवाड़, 6. श्रीमती व श्री बाबूलालजी कूमठ-सरवाड़। *-सुरेन्द्रकुमार कक्कड़-मंत्री, श्री ओसवाल जैन समाज, सरवाड़*

आचार्यश्री हस्ती का 106 वां जन्मदिवस तप-त्याग एवं सामायिक-साधना के साथ मनाया गया

पौष शुक्ला चतुर्दशी 22 जनवरी 2016 को अध्यात्म योगी, युगमनीषी परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस सामायिक-साधना एवं विविध तप-त्याग के साथ सोत्साह मनाया गया। इस पर्व पर पूज्य आचार्यप्रवरके सान्निध्य में जयपुर में, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं श्रद्धेया शासन प्रभाविकाजी की सन्निधि में जोधपुर में तथा जो संत-सती उस दिन जहाँ विराजमान थे, उनके सान्निध्य में वहाँ पर विशेष धर्माराधना एवं गुणानुवाद किए गए। कतिपय स्थानों से रिपोर्ट प्राप्त हुई है, उसका संक्षेप यहाँ प्रस्तुत है।

मुम्बई- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 9 उमरगांव से विहार कर बोईसर, सफाले, विरार, भायंदर होते हुए बोरिवली समता भवन पधारे। उमरगांव से विहार में मुम्बई के श्रावक-श्राविकाओं का सराहनीय योगदान रहा। महासती मण्डल के पदार्पण से उत्साह उमंग का वातावरण बना हुआ है। यहाँ महासती मण्डल के सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस लगभग 106 से अधिक उपवास, आयंबिल एवं एकाशन के

साथ मनाया गया।

जलगांव- रत्नसंघ के सप्तम पट्टधर आचार्यप्रवर 1008 परम पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 106 वां जन्म-दिवस दया, एकासना, 3 सामायिक एवं उपवास की आराधना के साथ तपस्वीरत्न पूज्य श्री कानमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, वर्धमान आयंबिल आराधिका महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा एवं समर्थगच्छीय सम्प्रदाय की महासतीजी आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें लगभग 200 एकाशन हुए। संत-सतियों के प्रेरणास्पद उद्‌बोधन के साथ जोधपुर से पधारे वरिष्ठ स्वाध्यायी बन्धु श्री प्रकाशजी सालेचा ने मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य हस्ती के जीवन चरित्र पर प्रभावी वक्तव्य दिया। उसे सभी बड़ी तन्मयता से आत्मसात् कर रहे थे। प्राकृत अध्ययन कर रही महिलाओं ने स्वाध्याय-सामायिक पर प्राकृत में सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की। जैन जागरण पत्रिका के सम्पादक श्री सोहन मेहता, जोधपुर ने भी सभा को सम्बोधित किया। श्री जैन रत्न युवक परिषद् जलगांव की ओर से सुन्दर भोजन व्यवस्था की गई। *-मनोज संचेती, जलगांव*

सूरत- पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के 106 वें जन्मदिवस पर श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं ने 1 से 3 सामायिक करके गुरु गुणगान किया एवं कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने संवर किया।

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 22 जनवरी 2016 को इतिहास मार्तण्ड, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस तथा मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. का 32 वां पुण्यदिवस तीन-तीन सामायिक की साधना के साथ जप-तप-त्याग पूर्वक स्वाध्याय भवन, साहूकारपेठ में मनाया गया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव के जीवन एवं विशेषताओं पर भावपूर्ण प्रकाश डाला।

बैंगलोर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कर्नाटक-बैंगलोर के तत्त्वावधान में श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ शांतिनगर के 'श्रीमती भीखीबाई पूनमचन्दजी लुणावत जैन स्थानक भवन' में मरुधरा के दो महान् संतों पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 106 वां जन्मदिवस तथा श्रमण सूर्य मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. की 32 वीं पुण्यतिथि दो-दो सामूहिक सामायिक एवं तप-त्याग के साथ गुणगानपूर्वक मनाई गई। इस पावन प्रसंग पर पूज्य आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम विदुषी महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। महासती वर्या ने फरमाया कि महान् संतों की विशेषता होती है कथनी और करनी की एकरूपता। कार्यक्रम

का संचालन संघमंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने किया। मंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने सभा का संचालन करते हुए कहा कि इन महापुरुषों का आपसी प्रेम, सदभाव एवं मैत्री व्यवहार काबिले तारीफ रहा। श्रावक संघ के साथ श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की उपस्थिति सराहनीय रही। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

पाली- यहाँ पर गच्छाधिपति श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री कीर्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य हस्ती का गुणानुवाद किया गया। महासती वर्या ने फरमाया कि- आचार्य हस्ती शरीर की विभूषा, स्त्री-संसर्ग, प्रणीतरस भोजन को साधु के लिए त्याज्य बतलाते थे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा ने गुरु गुणानुवाद करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त ने सामायिक-स्वाध्याय पर विशेष बल दिया तथा रत्नसंघ की विशेष परम्पराओं का निर्धारण किया। श्रीमती विमलेशजी हींगड़ ने गीतिका प्रस्तुत की। सहमंत्री श्री चैनराज जी मेहता ने कहा कि गुरुदेव की पाली संघ पर सदैव विशेष कृपा रही तथा अंतिम चातुर्मास पाली में ही किया। इस दिन तप-त्याग, उपवास, सामूहिक एकाशन एवं दया संवर की साधना तथा पाँच-पाँच सामायिक की गई। *-रूपकुमार चौपड़ा, अध्यक्ष*

मुमुक्षु बहनों का स्वागत अभिनन्दन

11 फरवरी 2016 को दूदू में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में आयोज्य दीक्षा समारोह के पूर्व 4 मुमुक्षु बहनों (श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता, सुश्री नेहाजी खिंवसरा, सुश्री रुचिताजी खिंवसरा, सुश्री खुशबूजी जैन) का आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, शासनप्रभाविकाजी एवं समस्त संत-सतियों के दर्शन-वंदन हेतु पधारना हुआ। विरार, सोलापुर, निप्पाणी, सवाईमाधोपुर, हिण्डौनसिटी, जयपुर, चेन्नई, सुरत, रामसर, ब्यावर, जोधपुर, मांडल, गंगापुरसिटी आदि विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में स्वागत अभिनन्दन किया गया।

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र (भाग 3) पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत 'उत्तराध्ययनसूत्र' पर पाँचवीं आगम परीक्षा को लिया गया है। जिसमें दो भागों की परीक्षा आयोजित हो चुकी है। 'उत्तराध्ययनसूत्र' तृतीय भाग में 25 से 36 अध्ययनों में से प्रश्न लिये गये हैं। तृतीय भाग का मूल्यांकन प्रश्न पत्र 31 जनवरी 2016 से भेजना प्रारम्भ कर दिया जायेगा। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर अग्रांकित जयपुर पते पर भिजवाने की अन्तिम तिथि 25 अप्रेल 2016 रखी गई है। **सम्पर्क सूत्र- अध्यक्ष**-श्रीमती पूर्णिमाजी

लोढ़ा, ए-8, महावीरनगर, टोंक रोड़, जयपुर(राज.), 098290-19396, **महासचिव-** श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625 *-बीना मेहता, महासचिव*

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बेंगलूरु का स्नेह मिलन व शपथ-ग्रहण समारोह सम्पन्न

बेंगलुरु (कर्नाटक)- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-कर्नाटक-बेंगलुरु का स्नेहमिलन व शपथ ग्रहण समारोह संयुक्त सभा के साथ 27 दिसम्बर 2015 को स्थानीय लुणावत जैन स्थानक भवन, शांतिनगर में संघाध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे श्री. पी.शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई (राष्ट्रीय अध्यक्ष- अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) एवं विशिष्ट अतिथि थे श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, पाली (राष्ट्रीय अध्यक्ष- अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्), श्री सिद्धार्थजी बाफणा-जलगांव (राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्)। स्थानीय संघाध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता ने अपने अध्यक्षीय स्वागत उद्‌बोधन दिया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बेंगलुरू के नये पदाधिकारियों की घोषणा व शपथग्रहण विधि **राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा** ने कराई। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, बेंगलुरू के नये पदाधिकारियों की घोषणा व शपथ ग्रहण विधि श्राविका मण्डल के पूर्व राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **श्रीमती मंजूजी भण्डारी** ने कराई। श्री जैन रत्न युवक परिषद् बेंगलुरू के नये पदाधिकारियों की घोषणा व शपथ ग्रहण विधि **राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा** ने सम्पन्न कराई। इस प्रसंग पर श्री शिखरमलजी सुराणा व श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने रत्न संघ का राष्ट्रीय सामायिक-स्वाध्याय संकल्प पत्र श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता (रत्न श्राविका मण्डल-बेंगलुरू) को सुपुर्द किया। संघ प्रमुख श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल ने संघ को प्रेरणा के शब्द कहे। **राष्ट्रीय युवा कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी लुंकड़-ईरोड** ने युवक परिषद् के निर्व्यसनता के फोल्डर का विमोचन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणाजी से कराकर ओजस्वी प्रभावी उद्‌गार सामूहिक सामायिक पर प्रकट किए। राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा ने युवा क्रांति व स्नेहमिलन पर प्रेरक व प्रभावी उद्‌गार जड़-चेतन के उदाहरण के साथ प्रकट किए। धर्मनिष्ठ श्री रमेशचन्दजी गुन्देचा ने विशेष रूप से सामूहिक सामायिक पर एवं श्री प्रसन्नचन्दजी बागमार ने परीक्षा आयोजन की महत्ता पर अपने विचार प्रकट किए। संघ महिमा व गुरुभक्ति का बखूबी बखान स्वाध्यायी श्री शांतिलालजी डुंगरवाल ने बड़ी ओजस्वी भाषा में प्रस्तुत किया। वीर पिता श्री

पारसमलजी बोहरा ने भी अपने मार्मिक विचार रखे। अंत में मुख्य अतिथि व **राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा** ने बेंगलूरू के रत्न संघ को एक आदर्श संघ बताया। सामायिक-स्वाध्याय भवन की आवश्यकता पर भी बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन श्री प्रमोदजी सिंघवी-युवाध्यक्ष ने प्रस्तुत किया। सभा का सफल संचालन श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल-संघमंत्री ने बखूबी किया। अंत में महासती श्री वैभवश्रीजी म.सा. के मांगलिक से सभा सम्पन्न हुई।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बेंगलुरू के नये पदाधिकारी- **अध्यक्ष-** श्री पदमराजजी मेहता-बेंगलुरू, **कार्याध्यक्ष-** श्री धनरूपचन्दजी मेहता-बेंगलुरू, **मंत्री-** श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल-बेंगलुरू, **कोषाध्यक्ष-** श्री जसवंतराजजी छाजेड़, बेंगलुरू।

श्री जैन रत्न युवक परिषद् (कर्नाटक) बेंगलुरू के नये पदाधिकारी- **अध्यक्ष-** श्री प्रमोदजी सिंघवी, **कार्याध्यक्ष-** श्री विजयकुमारजी रेड, **कोषाध्यक्ष-** श्री मनीष जी सांखला, **सहमंत्री-** श्री संदीपजी पगारिया।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (कर्नाटक) बेंगलुरू के नये पदाधिकारी- **अध्यक्ष-** श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता, **कार्याध्यक्ष-** श्रीमती ललिताजी सांखला, **मंत्री-** श्रीमती प्रभाजी गुलेच्छा, **कोषाध्यक्ष-** श्रीमती रिंकूजी जांगड़ा।

वर्द्धमान चिकित्सालय की सेवाएँ प्रगति पथ पर

जोधपुर- श्री ग्लोबल रिलीफ सोसायटी एवं श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर के तत्त्वावधान में 15 जनवरी, 2016 को मकर संक्रांति पर्व पर 42 वाँ रक्तदान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 107 सदस्यों ने रक्तदान किया। इस रक्तदान शिविर में ग्लोबल रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष श्री शिवकुमारजी सोनी सहित महापौर श्री घनश्यामजी ओझा, जिला कलेक्टर श्री प्रीतमजी बी. यशवन्त, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महानगर संघ संचालक श्री खूबचन्दजी खत्री व श्री दुर्गासिंहजी गहलोत भी उपस्थित हुए। महापौर एवं जिला कलेक्टर महोदय वर्द्धमान अस्पताल की व्यवस्था को देखकर काफी प्रभावित हुए तथा रक्तदान की महत्ता पर प्रकाश डाला।

श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी द्वारा समय-समय पर मरीजों के लिए निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाते हैं। **आगामी निःशुल्क शल्य चिकित्सा एवं जाँच शिविर 17 फरवरी 2016 को डॉ. बिमलाजी भण्डारी की पुण्य स्मृति में आयोजित किया जायेगा।** इस शिविर में मुम्बई के ख्याति प्राप्त चिकित्सक डॉ. के.एम. भण्डारी (भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर, जयपुर) तथा अहमदाबाद से डॉ. सौरभजी

गोयल (ज्वाइण्ट रिप्लेसमेण्ट सर्जन) उपस्थित रहेंगे। अनुभवी एवं ख्यातिप्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल, डॉ. अजय कोठारी, डॉ. प्रकाश चौधरी (यूरोलोजिस्ट) आदि की भी सेवाएँ प्राप्त होंगी। 16 फरवरी 2016 को प्रातः 9.30 से 12.30 बजे तक ऑपरेशन कराने वाले रोगियों की जाँच लागत दर पर की जायेगी।

श्री वर्द्धमान चिकित्सालय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा में विगत 39 वर्षों से निरन्तर प्रगति की ओर गतिमान है। योग्य एवं अनुभवी वरिष्ठ चिकित्सा विशेषज्ञों एवं सहयोगी कार्यकत्ताओं की सेवा-समर्पण भावना के साथ आउटडोर एवं इनडोर रोगियों को तथा श्रमण-श्रमणी वर्ग को निर्दोष स्वास्थ्य एवं चिकित्सा तथा आवश्यक जाँच सुविधाएँ बेहतर स्तर पर प्रदान की जा रही हैं।

वर्द्धमान अस्पताल में निम्नलिखित विशिष्ट चिकित्सकों की प्रतिदिन सेवाएँ उपलब्ध हैं- **फिजिशियन**- डॉ.एम.एल. बाफना (M.D.), डॉ. एम. के. जैन (M.D.), **शल्य चिकित्सक**- डॉ. जी.सी. गाँधी (M.S.), **हड्डी रोग विशेषज्ञ**- डॉ. वी.के. बाडमेरा (M.S.), **स्त्री रोग विशेषज्ञ**- डॉ. मिली इनानिया (M.S. FMAS), **दन्त रोग विशेषज्ञ**- डॉ. वसीम अहमद (M.S.), **फिजियोथैरेपी**- डॉ. जसवन्त पंवार (BPT, DNHE, D.Pharma), **हृदय रोग विशेषज्ञ**- डॉ. रवि इनानिया (M.D., DM, Cardiology) , **चर्म एवं रति रोग विशेषज्ञ**- डॉ. ममता पारख (M.D. F.A.G.E.)।

फरवरी के पश्चात् निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर रविवार 15 मई 2016 को स्व. श्री सायरचन्दजी-जतनदेवीजी एवं स्व. श्री किशोरचन्दजी-बिदामदेवीजी बाफना की पुण्य स्मृति में आयोजित किया जायेगा। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी वर्षों से श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के माध्यम से चिकित्सालय को निरन्तर प्रगतिपथ ले जा रहे हैं तथा इसे काफी सुविधा सम्पन्न बना दिया है।

-मनीष लोढ़ा, सहसचिव

करुणा अंतरराष्ट्रीय का राष्ट्रीय करुणा क्लब अवार्ड वितरण समारोह चेन्नई में सम्पन्न

करुणा अन्तरराष्ट्रीय एक मुनाफा रहित पंजीकृत एवं भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड से मान्यता प्राप्त संस्थान है। यह संस्थान शिक्षण संस्थाओं में 'करुणा क्लबों' का गठन कर विद्यार्थियों में अहिंसा, करुणा एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना कर उन्हें सुसंस्कार देता हुआ बच्चों को इस लायक बनाने में प्रयासरत है कि भविष्य में वे संविधान के अनुच्छेद 51 ए (जी) के अंतर्गत बताये गए मूलभूत कर्तव्यों का पालन सहज ही कर देश के सुनागरिक बनें। संस्थान का 18 वां दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 26-27 दिसम्बर 2015 को चेन्नई में

आयोजित हुआ। 27 दिसम्बर को राष्ट्रीय करुणा क्लब अवार्ड वितरण के साथ सम्पन्न हुआ, जिसके अंतर्गत संस्थान की देश के विभिन्न राज्यों में स्थित कुल 2250 करुणा क्लबों में से चयनित 25 श्रेष्ठ करुणा क्लबों को मुख्य अतिथि श्री एन. गोपालस्वामी (पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त) के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया, 25 विद्यार्थियों को दयावान अवार्ड प्रदान किए गए। इस अवसर पर अतिथि महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि करुणा अंतरराष्ट्रीय संस्थान हमारी भारतीय परम्परा/संस्कृति को बचाये रखने का अनुपम कार्य कर रहा है। सम्मेलन में 26 दिसम्बर 2015 को 10 विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों की अहिंसा रैली निकाली गई। विशिष्ट अतिथि डॉ. गिरीश द्वारा करुणा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। डॉ. गिरीश के अनुसार करुणा भाव की पूर्ति तीन स्टेप में पूरी होती है- किसी को तकलीफ में देखना, उसकी मदद के लिए आतुर होना और किसी भी हाल में उसकी तकलीफ को दूर करके ही दम लेना। आपने संस्थान की प्रशंसा में कहा कि आप बच्चों में करुणा भाव जाग्रत कर देश का भविष्य बना रहे हैं। मुख्य अतिथि श्री रमेश मूथा ने देश के 10 राज्यों से पधारे 20 करुणा केन्द्रों एवं 100 विद्यालयों के 500 प्रतिनिधियों/शिक्षकगणों को संबोधित करते हुए कहा कि आप करुणा एवं मैत्री भाव का प्रचार-प्रसार कर इस सृष्टि को बचाने का अनुपम अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं।

संस्थान के चेयरमेन श्री दुलीचन्दजी जैन ने संस्थान का परिचय दिया, अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़ ने करुणा क्लब पुरस्कारों का विस्तृत विवरण दिया, महामंत्री श्री सुरेशजी कांकरिया ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सम्मेलन चेयरमेन श्री पदमचन्दजी छाजेड़ ने सबका स्वागत किया। *-दुलीचन्द जैन*

स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर जयपुर में सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 01 से 03 जनवरी, 2016 तक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में जयपुर में स्वाध्यायी-शिक्षक निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में जोधपुर, महाराष्ट्र, मेवाड़, पोरवाल क्षेत्रों एवं स्थानीय जयपुर के 48 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में सामायिक, 25 बोल एवं प्रतिक्रमण विषय पर प्रशिक्षण प्रदान करने वाले शिक्षकों की योग्यता में अभिवृद्धि हेतु आयोजित इस शिविर में विद्वान् प्रशिक्षक श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जयपुर, श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, श्री धर्मेन्द्रजी जैन-जयपुर, श्री राकेशजी जैन-जयपुर,श्री जम्बूकुमारजी जैन-जयपुर ने विशिष्ट शैलियों से प्रभावी अध्यापन हेतु प्रशिक्षण दिया। शिविर अवधि में आचार्यप्रवर ने व्यक्तिशः प्रभावी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन भी प्रदान किया। इसके साथ ही श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने भी स्वाध्यायी

शिक्षकों के लिए व्यावहारिक एवं उपयोगी बातें प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की। श्री प्रमोदजी लोढ़ा-जयपुर की विशेष सेवाएँ प्राप्त हुईं। महावीर नगर संघ द्वारा शिविरार्थियों के निवास, भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई। *-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

शूले, बैंगलुरू में आचार्य श्री हीरा का दीक्षा-दिवस

शूले (बेंगलुरु)- स्थानीय श्री प्राज्ञ जैन संघ (कर्नाटक) बेंगलुरू एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-बेंगलुरु (कर्नाटक) के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 नवम्बर 2015 को शूले जैन बोर्डिंग अशोकनगर में चातुर्मासार्थ विराजमान शासन गौरव परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के पावन सान्निध्य में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, युवा क्रांति के संवाहक, आगमज्ञ परम पूज्य आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 53 वां दीक्षा दिवस एवं कर्नाटक गजकेसरी घोर तपस्वी खादीधारी पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा. का 136 वां जन्म दिवस बड़ी श्रद्धाभक्ति के साथ सामूहिक सामायिक एवं एकासन व्रत आदि की आराधना से तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। इस प्रसंग पर प्रवचन सभा का संचालन करते हुए प्राज्ञ जैन संघ के राजेशजी बिलवाड़िया ने दोनों महापुरुषों के प्रति अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए उनके गुणगान गद्य व पद्य में बड़ी ओजस्वी भाषा में रखे। बेंगलूरु सिटी संघ प्रमुख श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल एवं बेंगलुरु के पत्रकार स्वाध्यायी श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने दोनों महापुरुषों के प्रति अपने उद्गार प्रकट करते हुए उन्हें युग के महान् साधक संत बताया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. ने पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा. के दक्षिण भारत विशेषकर कर्नाटक प्रांत पर किए उपकारों को याद किया एवं पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के विराट् व्यक्तित्व व कृतित्व पर सरल सुबोध भाषा में प्रकाश डाला। प्राज्ञ संघ व रत्नसंघ के प्रेम मधुर सम्बन्ध का भी जिक्र किया। अंत में प्रत्याख्यान व मंगलपाठ से जन्म व दीक्षा-दिवस समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री प्राज्ञ जैन संघ (कर्नाटक) बेंगलुरु की ओर से भोजन आदि की व्यवस्था प्रशंसनीय रही। *-गौतमचन्द ओस्तवाल (मोक्षद्वार), संघ मंत्री*

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- शासन प्रभाविका साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा-जोधपुर में श्राविका मण्डल द्वारा 24 से 28 दिसम्बर 2015 को पंच दिवसीय श्राविका शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 65 श्राविका बहिनों ने भाग लिया। इस शिविर में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित कक्षा प्रथम से षष्ठ तक के तत्त्व ज्ञान सम्बन्धी पाठ्यक्रम का अध्ययन कराया

गया। शिविर में वरिष्ठ श्रावक श्री मूलचन्दजी बाफणा, श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार, श्री नरपतजी चौपड़ा, श्रीमती मोहनकौरजी जैन, श्रीमती कंचनजी रांका, श्रीमती अमृतकंवरजी भण्डारी, श्रीमती रीतू जी बाफना, श्रीमती रंजीताजी बाफना ने अपनी अध्यापन सेवाएँ दी। शिविर का संचालन श्रीमती मोहनकौर जी जैन ने किया। *-श्रीमती सुशीला गुलेच्छा, अध्यक्ष*

भोपालगढ़- साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में 29 दिसम्बर से 4 जनवरी पंच दिवसीय धार्मिक शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 21 बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण, थोकड़े आदि का ज्ञान किया। पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक के दिन उपवास, अष्ट प्रहर पौषध एवं एकाशन हुए। धर्म-ध्यान की लड़ी लगी रही। *-सोहनलाल बोथरा*

मेड़ता रोड़- स्वामी श्री हजारीमलजी म. जैन सेवा ट्रस्ट, नोखा चांदावतां द्वारा एक दिवसीय स्वास्थ्य जांच व उपचार शिविर मेड़ता रोड़ स्थित श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर में 8 जनवरी 2015 को लगाया गया। शिविर संयोजक श्री पी. सुरेश चोरड़िया ने बताया कि शिविर में 276 लोगों की जांच की गई तथा उपचारोपरान्त दवाइयाँ निःशुल्क दी गईं। इसमें करीब 15-20 गाँवों के मरीज लाभान्वित हुए। शिविर सहयोगी नोखा-चांदावतां के श्री आर. प्रसन्नचन्दजी चोरड़िया एवं श्रीमती लीलाकंवर जी चोरड़िया थे। *-सुनीता चोरड़िया*

मुम्बई- पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के जन्मदिवस पर 22 जनवरी को संघ संरक्षक श्री मोफतराजजी मुणोत द्वारा मुम्बई श्रावक संघ के नये अध्यक्ष के रूप में श्री महेन्द्रजी कुम्भट, महामंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र जी डागा एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री पुखराजजी मेहता का मनोनयन किया गया। युवक परिषद् के अध्यक्ष के लिए श्री सुरेन्द्रजी चौधरी तथा श्राविका मण्डल की अध्यक्ष हेतु श्रीमती हेमलताजी सांखला एवं कार्याध्यक्ष पद हेतु श्रीमती इंदुजी जैन को मनोनीत किया गया।

बजरिया-सवाईमाधोपुर- श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, शाखा बजरिया, सवाईमाधोपुर की बजरिया-सवाईमाधोपुर में 23 जुलाई 2015 को सर्वसम्मति से नये पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का मनोनयन किया गया- **अध्यक्ष-** श्री रतनलालजी जैन 'एण्डवा वाले', **उपाध्यक्ष-** श्री हनुमानप्रसादजी जैन 'बिणजारी वाले', **मंत्री-** श्री अंकित कुमारजी जैन 'करेला वाले', **सहमंत्री-** श्री सुनीलकुमारजी जैन 'लोहिया' **कोषाध्यक्ष-** श्री मुकुलजी जैन 'कुण्डेरा वाले'। *-पूरणराज अबानी, राष्ट्रीय महामंत्री*

बीजापुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, बीजापुर शाखा द्वारा 20-21 जनवरी 2016 को दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें "युवा सशक्तीकरण-व्यसनों से आगे", "रिश्ते एक डोर जिन्दगी की (कपल्स के लिए)" तथा "How to Face Exams"

विषयों पर बेंगलुरू के श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन ने सुन्दर तरीके से प्रकाश डाला। सभी ने एक चित होकर काफी उत्साह से कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम के आयोजन में बीजापुर के सकल जैन युवक मण्डल का सहयोग रहा। करीब 1500 लोगों को इसका लाभ मिला।

-नीरज पारसमलजी बोथरा, सचिव-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, बीजापुर

हिण्डौनसिटी- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-हिण्डौनसिटी के 09 दिसम्बर 2015 को सर्व सम्मति से निर्विरोध चुनाव हुए, नये पदाधिकारी हैं- **अध्यक्ष-** श्री धर्मचन्दजी जैन 'प्रधानाचार्य', **मंत्री-** श्री निर्मल कुमारजी जैन, **कोषाध्यक्ष-** श्री हेमचन्दजी जैन।

- प्रवीणकुमार जैन, पूर्व मंत्री

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 20 मार्च 2016 को सर्व जैन परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। प्रवेश शुल्क प्रत्येक उम्मीदवार के लिए रु 500/- मात्र है। उम्मीदवार के साथ अभिभावकों को प्रवेश दिया जायेगा। इस सम्मेलन में राजस्थानी, गुजराती, कच्छी, मराठी तथा हिंदी भाषी प्रदेशों सहित देश के सभी भागों के श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी सहित सभी जैन समुदाय के विधवा, विधुर, तलाकशुदा, विकलांग भी भाग ले सकते हैं। **सम्मेलन स्थल:-** गोडवाड हाउस, सूर्यनारायण वाड़ी के पास, कीका स्ट्रीट, गुलालवाड़ी, मुम्बई-400004 (महा.), **आवेदन जमा करने का पता-** जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभावदेवी रोड़, मुम्बई-400025 (महा.), फोन नं. 099307-56598 *-युगराज जैन*

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न उच्च माध्यात्मिक विद्यालय भोपालगढ़ का 88 वां स्थापना दिवस 15 जनवरी, 2016 को विद्यालय के ही पूर्व छात्र श्री अजितराजजी ओस्तवाल, वायस प्रेसीडेन्ट, अल्ट्राटेक सीमेण्ट लिमि., मुम्बई की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि इसी विद्यालय के पूर्व छात्र श्री धर्मचन्दजी सुराणा 'सी.ए.'-चेयरमेन सुराणा ग्रुप ऑफ हास्पिटल, मुम्बई थे। विद्यालय में झण्डारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। विद्यालय के पूर्व कर्मचारी श्री घेवररामजी चौधरी व पारसमलजी शर्मा का 71000/- की राशि, माला, साफा साल आदि से अभिनन्दन किया गया। स्व. सूर्यचन्दजी भानु डांगीजी का एक फोटो विद्यालय के कार्यालय में लगाया गया। मुख्य अतिथि श्री धर्मचन्दजी सुराणा द्वारा तीन लाख, समारोह अध्यक्ष श्री अजितराजजी ओस्तवाल की ओर से एक लाख, श्री सोहनलालजी गौतमचन्दजी हुण्डीवाल द्वारा एक लाख इक्यावन हजार, श्री राजेन्द्रजी कर्णावट 'सी.ए.'-बैंगलोर द्वारा इक्यावन हजार, श्री नवरतनमलजी सुराणा-मुम्बई द्वारा इक्कीस हजार, श्री सोहनलालजी बोथरा द्वारा आठ हजार आठ सौ एवं श्री

नेमीचन्दजी कर्णावट द्वारा तीन हजार संस्थान के कॉरपस फण्ड में देने की घोषणा की गयी। इससे पूर्व रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमलजी सुराणा द्वारा एक लाख एवं श्री विक्रमजी बागमार द्वारा ग्यारह हजार की राशि प्रदान की गयी। भोपालगढ़ के समस्त जैन समाज एवं विद्यालय परिवार के भोजन की व्यवस्था श्री धर्मचन्दजी सुराणा परिवार की ओर से की गई। -*प्रसन्नचन्द ओस्तवाल*

बधाई

समाजसेविका श्रीमती सुशीला बोहरा को 'मदर टेरेसा अवार्ड'

जोधपुर- नेत्रहीन विकास संस्थान आवासीय विद्यालय की संस्थापक अध्यक्ष एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की पूर्व अध्यक्ष श्राविकारत्न श्रीमती सुशीला बोहरा को 22 जनवरी 2016 को स्वच्छ भारत- क्लीन इण्डिया अभियान के तहत मुम्बई में भाईदास हॉल में लायन्स क्लब की ओर से **मदर टेरेसा अवार्ड से सम्मानित किया गया**। उन्हें लायन्स इंटरनेशनल वाइस प्रेसीडेंट श्री नरेश जी अग्रवाल ने शील्ड, मैडल व प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया।

श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा डॉ. जैन को 'जैन सेवारत्न' सम्मान

जोधपुर- श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा 10 जनवरी 2016 को स्वातन्त्र्य वीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक के सभागार में आयोजित भव्य कार्यक्रम में **जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन** को उनके द्वारा कृत साहित्यिक एवं सामाजिक योगदान हेतु **'जैन सेवारत्न'** से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में आचार्य श्री चन्दनाजी, टी.वी. धारावाहिक (तारक मेहता का उल्टा चश्मा) के अभिनेता एवं कवि श्री शैलेश लोढ़ा तथा भिलाई-छत्तीसगढ़ की समाजसेविका डॉ. (श्रीमती) सन्तोष जैन को भी उनकी उल्लेखनीय सामाजिक एवं धार्मिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। आचार्य श्री चन्दनाजी की अनुपस्थिति में युवाचार्य श्री शुभमजी एवं साध्वी श्री विभाजी ने सम्मान ग्रहण किया।

सम्मान समारोह को भायन्दर की महापौर श्रीमती गीता जैन ने विशिष्ट अतिथि के रूप में, श्री ललितजी गाँधी (आल इण्डिया माइनोरिटी सेल के राष्ट्रीय अध्यक्ष)-कोल्हापुर ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। प्रखरवक्ता श्री गाँधी ने अल्पसंख्यक होने के विभिन्न लाभों से सभा को परिचित कराया। जैन सेवा संघ के चेयरमेन श्री शान्तिलालजी कवाड़ ने ओजस्वी स्वागत भाषण दिया एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रेरणा की।

डॉ. धर्मचन्द जैन ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रशंसा एक सीमा तक टॉनिक का

कार्य करती है, उसके पश्चात् यह पॉइजन का रूप ले लेती है। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए पल-पल का शुभ विचारों एवं शुभ आचरण में सदुपयोग करना चाहिए। धन्यवाद ज्ञापन संस्था के महासचिव श्री उगमराजजी लुणावत ने किया। संचालन श्री आनन्द जी खतंग ने किया। सम्मान समारोह में मंच पर श्री नरेन्द्रजी हीरावत एवं श्री गौतमजी मेहता भी संस्था उपाध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। *-गौतम एस. मेहता, उपाध्यक्ष*

आगम कोठारी

सीमा जैन

सुधा भंसाली

रूपल गांग

वैशाली कुम्भट

मीनल मेहता

सोमी भण्डारी

निधि भण्डारी

स्वाति जैन

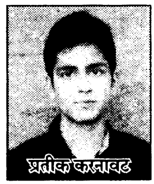
प्रतीक करनावट

न्यूजर्सी (अमेरिका)- श्री आगम कोठारी सुपौत्र श्रीमती विमलाजी एवं श्री कैलाशचन्दजी कोठारी तथा सुपुत्र श्रीमती श्वेताजी-श्री अतुलजी कोठारी ने साढ़े दस वर्ष की उम्र में सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र, दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन, बारह भावना, मेरी भावना एवं अन्य कई दोहे कण्ठस्थ किए हैं। आपके एक वर्ष के लिए जमीकंद का पूर्ण त्याग है। अमेरिका में रहते हुए इस प्रकार के संस्कार मिलना सराहनीय है।

उदयपुर- श्रीमती सीमा जैन (पुत्रवधू प्रो. प्रेमसुमन जैन) को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से जैनविद्या एवं प्राकृत विषय में '12 वीं शताब्दी के राजस्थान के कवि पद्‌नन्दिकृत प्राकृत ग्रन्थ धम्मरसायणं का मूल्यांकन' विषय पर पी.एच्.डी. उपाधि प्रदान की गयी है। उन्होंने यह शोधकार्य प्रो. एच.सी. जैन के निर्देशन में सम्पन्न किया। इस शोधकार्य से समाज में सच्चे धर्म का बोध तथा अहितकारी अधर्म को त्यागने की समझ जागृत होती है।

जोधपुर- श्रीमती सुधा भंसाली सुपुत्री श्रावकरत्न श्री सुमेरनाथजी मोदी को प्रो. (डॉ.) सोहनराजजी तातेड़ के निर्देशन में ट्रिनिटी वर्ल्ड विश्वविद्यालय द्वारा "योग द्वारा सम्पूर्ण स्वास्थ्य की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर शोधकार्य हेतु पी-एच्.डी. (योग) डिग्री प्रदान की गई है। आप अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि के माध्यम से समाज-सेवा में उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं तथा अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष हैं।

नदबई- श्री अजयकुमारजी जैन सुपुत्र श्री खेमचन्दजी जैन बागपतिया नगरपालिका चुनाव में उपचेयरमेन (वाइस चेयरमेन) के पद पर सर्वसम्मति से निर्विरोध चयनित हुए हैं। आप जैन युवक रत्न शाखा के सक्रिय सदस्य हैं। *-नरेशचन्द्र जैन-मंत्री*

जोधपुर- सुश्री रूपल गांग सुपुत्री श्रीमती योगिता-राजेशजी गांग एवं सुपौत्री श्री चंचलमलजी गांग ने 22 वर्ष की उम्र में प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। सुश्री रूपल व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ धार्मिक ज्ञान में भी सदैव आगे रहती है। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा में भाग लेने के साथ शिविरों में वह अध्यापन सेवा भी देती हैं। धार्मिक ज्ञान-ध्यान सीखने में इनके दादा श्री चंचलमलजी गांग का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहता है।

जोधपुर- सुश्री वैशाली कुम्भट सुपुत्री श्रीमती मधु-भूपेन्द्रजी कुम्भट ने प्रथम प्रयास में सी.पी.टी. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्री चंचलमल जी गांग की दौहित्री हैं।

बैंगलुरू- सुश्री मीनल मेहता सुपुत्री श्रीमती प्रमिला-सज्जनराजजी मेहता ने सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्हें प्रतिक्रमण कंठस्थ है तथा धार्मिक परीक्षाएँ भी दी हैं। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलुरू के अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता इनके बड़े पापा हैं।

ब्यावर- सुश्री सोमी भण्डारी एवं सुश्री निधि भण्डारी सुपुत्री श्री लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसके साथ ही दोनों ने ICWA की उपाधि भी प्राप्त की है।

जोधपुर- सुश्री स्वाति जैन सुपुत्री श्रीमती शोभा-सुरेशचन्दजी जैन (सुपौत्री श्रीमती किरण-सिरेहमल जी जैन, सी.ए.) कम्पनी सेक्रेटरी बनी हैं। उन्होंने बी.कॉम (Honurs) व एम. कॉम भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है।

अजमेर- श्री प्रतीक करनावट सुपुत्र सुशीला-सुरेशजी करनावट (सुपौत्र श्रीमती कमला-स्व. श्री प्रेमचन्दजी करनावट) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

माण्डल(महा.)- संघसेवी गुरुभक्त वीरदादी सुश्राविका श्रीमती पानकंवरजी खिंवसरा का 14 जनवरी, 2016 को देहावसान हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने के साथ त्याग-तप एवं संत-सतीवृन्द की सेवा में सन्नद्ध रहती थीं। खिंवसरा परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा एवं जिनशासन सेवा में सदा समर्पित परिवार रहा है। आपकी पौत्री सम्प्रति परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा की शिष्या महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. के रूप में रत्नवंश एवं जिनशासन की

महती प्रभावना कर रही हैं साथ ही अपनी दूसरी पौत्री सुश्री नेहाजी खिंवसरा को भी आपने दीक्षा अंगीकार करने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है, जो आगामी 11 फरवरी, 2016 को दूदू (जिला-जयपुर) में दीक्षा अंगीकार कर रही हैं।

जोधपुर- वीरमाता श्रीमती किरणदेवीजी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी सुराणा का 85 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सदैव संत-सतियों की सेवा में लगा रहता था। आपकी सांसारिक पुत्री रत्न संघ में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. के नाम से जिनशासन का गौरव बढ़ा रही हैं। आप प्रतिदिन लगभग 5 सामायिक करती थी तथा आपके रात्रि-चौविहार के प्रत्याख्यान लगभग 40 वर्षों से चल रहे थे। आपकी आचार्य श्री हस्ती, आचार्य श्री हीरा, उपाध्यायप्रवर मान एवं संत-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। वीरमाता जी ने 8 वर्षों तक चातुर्मास काल में निःशल्यवतीजी म.सा. के सान्निध्य में रहकर धर्म आराधना की थी। आपके पुत्र श्री रतनजी सुराणा सक्रिय स्वाध्यायी हैं तथा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर से निरन्तर सेवाएँ दे रहे हैं।

अजमेर- संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक श्री मूलराजजी चौधरी का 73 वर्ष की आयु में 1 दिसम्बर 2015 को निधन हो गया। उनका जीवन संघ व समाज-सेवा में समर्पित रहा। संत-सतियों की सेवा में वे हमेशा तत्पर रहते थे। श्रावकरत्न ने वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ अजमेर के अध्यक्ष पद का दायित्व कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। वे अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती केसरजी गांग धर्मपत्नी श्री चंचलमलजी गांग का 24 जनवरी 2016 को देहावसान हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थी। अपने सम्पर्क में आने वाले श्राविकाओं को भी सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा करती थी। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में गांग परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। श्री चंचलमल जी गांग स्वाध्याय संघ में वर्षों से निःस्वार्थ महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

जरखोदा (बूंदी)- श्रद्धासिक्त धर्मशीला, तपसाधिका, सुश्राविका श्रीमती कल्याणीदेवीजी जैन धर्मसहायिका स्व. श्री हरकचन्दजी जैन-बोहरा का 15 दिसम्बर 2015 को 88 वर्ष की उम्र में समभावों के साथ स्वर्गारोहण हो गया। आप विगत चालीस वर्षों से शीलव्रत, हरी- त्याग, आजीवन

जमीकंद-त्याग, धोवन पानी का नियम, रात्रि-चौविहार-त्याग, प्रतिदिन पाँच सामायिक, नवकारसी आदि दैनिक प्रत्याख्यानों का अप्रमत्त भाव से पालन कर रही थीं। आपने 2 अठाई, नौ दिवसीय, पन्द्रह दिवसीय उपवास तप, 2 वर्षीतप तथा अनेक उपवास, बेले, तेले, आयंबिल, दयाव्रत,पौषध, संवर आदि की आराधना की। आपका जीवन सरलता, समता, उदारता, विनय, प्रेम, सेवाभावना आदि सद्गुणों से परिपूर्ण रहा। श्राविकारत्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति, दर्शन-वंदन, प्रवचन-श्रवण में सदैव तत्पर रहती थीं। आपके सुपुत्र श्री उम्मेदचन्दजी जैन वरिष्ठ स्वाध्यायी हैं, श्री दानमलजी, श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन (पोरवाल समाज-जयपुर के अध्यक्ष) एवं श्री ऋषभकुमारजी जैन (स्वाध्यायी) भी धर्मनिष्ठ हैं। आपकी चारों पुत्रियाँ भी सुश्राविका के रूप में आगे बढ़ रही हैं।

भरतपुर- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती मुन्नीदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री राजेन्द्रसिंहजी जैन

गोपालगढ़-भरतपुर का 30 दिसम्बर 2015 को परलोकगमन हो गया। 79 वर्ष की वय पूर्ण करने के साथ सामायिक, स्वाध्याय, धार्मिक चर्या, संत-सती सेवा में आप अपना पूरा समय व्यतीत करती थीं। आप स्थानक में आकर सामायिक नियमित करती थीं। *-बाबूलाल जैन 'सिमको वाले', मंत्री*

जयपुर- श्रावक रत्न श्री स्वरूपचन्दजी हीरावत का 26 जनवरी 2016 को स्वर्गगमन हो गया। ये निष्ठावान श्रावक थे। आप सामायिक-स्वाध्याय के प्रति रुचिशील थे तथा संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहते थे। आपकी अंतिम इच्छा के अनुरूप आपकी देह चिकित्सा शोध हेतु दान की गई है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा के आप पिताश्री थे। अपने पीछे आप धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मंजूषाजी धर्मपत्नी श्री मनोज जी नाहटा का 42 वर्ष की आयु में सड़क दुर्घटना में 5 दिसम्बर 2015 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप सदैव हँसमुख व प्रसन्न रहती थीं। जीवदया में आप अग्रणी रहती थीं।

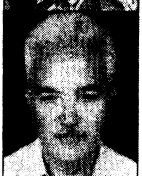

जोधपुर- प्रसन्नचित्त सुश्रावक श्री लखपतजी सुपुत्र श्री पूनमचन्दजी नाहटा का 70 वर्ष की उम्र में 7 दिसम्बर 2015 को स्वर्गवास हो गया। जीव दया के प्रति आपकी बहुत रुचि थी।

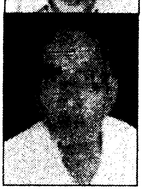

कनाना- श्री जेठमलजी सुपुत्र श्री मुलतानमलजी श्रीश्रीमाल (सराना वाला) का 22 दिसम्बर 2015 को 83 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति एवं शान्त प्रकृति के थे। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा के कानाना प्रवास पर

आपने सेवा का पूरा लाभ लिया एवं आचार्य श्री से शीलव्रत अंगीकार किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा धार्मिक परिवार छोड़ गए हैं।

मदनगंज-किशनगढ़- वयोवृद्ध व्रती सुश्रावक श्री भंवरलालजी डांगी सुपुत्र स्व. श्री अर्जुनसिंहजी डांगी ने 08 जनवरी 2016 को संथारे सहित समाधिभाव के साथ आयुष्य पूर्ण किया। दृढ़धर्मी श्रावक रत्न श्री भंवरलालजी डांगी सरल, सहिष्णु, धीर-वीर-गंभीर, आडम्बर से दूर, नैतिक-प्रामाणिक सिद्धान्त पर जीने वाले स्वाध्यायी एवं बारह व्रती सुश्रावक थे। आपने श्री संघ के महामंत्री, अध्यक्ष एवं संरक्षक पद को सुशोभित किया। आप नित्य सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, तप-त्याग करते थे। आपके संकल्पानुसार देह-दान किया गया। आपका पूरा परिवार देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण, दृढ़ श्रद्धा भक्ति संस्कारों वाला परिवार है। *-महेन्द्र मेहता, मंत्री*

चौथ का बरवाड़ा- धर्मनिष्ठ श्रावक श्री कपूरचन्दजी मोदी का 5 दिसम्बर 2015 को 78 वर्ष

की आयु में देहावसान हो गया। सामायिक-स्वाध्याय आपके दैनिक जीवन के अंग थे। सबको साथ लेकर चलने का आपमें अद्भुत गुण था। आप रूपचन्दजी, हेमराजजी, हरीशजी मोदी एवं दो पुत्रियों का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

इंदौर- श्री विनोदकुमारजी झेलावत सुपुत्र सुश्रावक श्री हस्तीमलजी झेलावत (श्री ऑल

इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के वरिष्ठ मार्गदर्शक) का 56 वर्ष की आयु में 19 दिसम्बर 2015 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे श्री जैन श्वेताम्बर सोश्यल ग्रुप इंदौर सुप्रीम के सदस्य थे तथा धर्म और सेवा के प्रति समर्पित थे। *-अशोक मंडलिक*

सुमेरगंजमण्डी- श्री देवकरणजी जैन (अणघोरा वाले) का 12 जनवरी 2016 को स्वर्गवास हो गया। आप श्री नित्य नवकार मंत्र की माला फेरकर धर्माराधन करते थे। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

चेन्नई- श्रीमती नोजकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री भैंरूलालजी झाम्बर,मूल निवासी सोजतसिटी का 95 वर्ष की आयु में 2 दिसम्बर 2015 को स्वर्गगमन हो गया। झाम्बर परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है। श्राविकारत्न सामायिक एवं तप-त्याग में निरन्तर संलग्न रहती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

प्रतियोगियों, परीक्षार्थियों एवं छात्रों हेतु आवश्यक सूचना

1. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा **'बनें आगम अध्येता'** प्रतियोगिता के अन्तर्गत खुली पुस्तक परीक्षाओं में भाग लेकर 70 तथा इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेफ्ट द्वारा हस्तान्तरित की जायेगी। अतः प्रतियोगिता विजेता प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी (स्पष्ट अंग्रेजी में) भिजवाने का श्रम करावें:- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bank IFS code, Micr Code, Mobile No. **डाक का पता-** महासचिव, अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)E-mail: Shravikamandal@yahoo.com *-बीना मेहता, महासचिव*

2. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के अन्तर्गत संचालित सभी संस्कार केन्द्रों (पाठशालाओं),संस्कार शिविरों के अध्यापकों, संयोजकों, निरीक्षकों से निवेदन है कि संस्कार केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं तथा संबंधित अध्यापकों, संयोजकों, निरीक्षकों की उपर्युक्त (नं. 1 के अनुसार) बैंक सूचना (Bank Detail) 25 फरवरी 2016 तक इस कार्यालय को प्रेषित करने का कष्ट करें। साथ में कोई भी एक चैक निरस्त (Cancel) करके संलग्न करके भेजें। यदि छात्र-छात्रा का खाता बैंक में खुला हुआ नहीं हो या खुलने की स्थिति में नहीं हो तो उनके माता/पिता/अभिभावक के खाते से संबंधित उपरोक्त सूचनाएँ प्रेषित करें। भविष्य में बालक-बालिकाओं को पुरस्कार, अध्यापकों का मानदेय, वेतन आदि बैंक खातों में जमा होंगे, रोकड़ या वस्तु में देय नहीं होंगे, इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दें। सम्पर्क पता- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2622623, Email- sanskarpathshalajodhpur@gmail.com *-राजेश भण्डारी, सचिव*

3. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की **आगामी परीक्षा 24 जुलाई, 2016** को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें। परीक्षार्थी को आवेदन-पत्र भरते समय अपने बैंक खाता सम्बन्धी जानकारी (उपर्युक्त नं. 1 के अनुसार) आवेदन-पत्र में देना अनिवार्य है। इसके साथ बैंक पास बुक के प्रथम पेज की फोटोकॉपी संलग्न करना आवश्यक है। जिन परीक्षार्थियों से बैंक खाता सम्बन्धी पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होगी, उन्हें परीक्षा पुरस्कार नहीं भेजा जायेगा। *-नवरतन गिड़िया, सचिव, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2630490*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15545 से 15572 तक 28 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्री पदमचन्दजी मोहनोत, जयपुर, सुश्री खुशबूजी सुपुत्री श्री सुबोधजी मोहनोत एवं चि. गौतमजी बैद सुपुत्र श्री राजकुमारजी बैद का विवाह 15 दिसम्बर 2015 को जयपुर में सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी, ब्यावर, अपनी दोनों सुपुत्रियों सुश्री सोमी भण्डारी एवं सुश्री निधि भण्डारी के सी.ए. फाइनल एवं ICWA करने के साथ ही सौ. सोमी का शुभ विवाह चि. उमेशजी गाँधी सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी गाँधी-अंकलेश्वर वालों के साथ 3 फरवरी, 2016 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

3001/- श्री महेन्द्रजी तिल्लानी, रतलाम-मध्यप्रदेश, अपनी तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती चमेली देवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री महावीरप्रसादजी, श्री सुबाहु कुमारजी एवं हेमंत कुमारजी जैन (एण्डवा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री महावीर प्रसाद जी सर्राफ सुपुत्र श्री बजरंगलालजी जैन की द्वितीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री सम्पतसिंहजी, प्रदीप कुमारजी, महिपालजी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़, पूज्य श्री भंवरलालजी सुपुत्र स्व. श्री अर्जुनसिंहजी डांगी का 8 जनवरी 2016 को संथारा मरण होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, महावीरचन्दजी, सिद्धार्थजी, गौरवजी, अभिनन्दनजी, जिनेन्द्रजी बाफणा, जलगाँव, डॉ. गौरवजी सुपुत्र श्री राजेन्द्र कुमारजी-सजनी देवीजी बाफणा (भोपालगढ़-गोटन वाले) सौ. पूर्वीजी (सीए) सुपुत्री श्री चेतनजी सुराणा, जयपुर का शुभ-विवाह 22 नवम्बर 2015 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2002/- श्रीमती विद्याजी कोठारी, जयपुर, सुपौत्र चि. शोभितजी (सुपुत्र श्री संजयजी बबीताजी कोठारी) सौ.कां. प्रियंकाजी (सुपुत्री श्री अनिलजी बोरा, पूना) का शुभ-विवाह 05 जनवरी 2016 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1500/- श्रीमती बैजूजी-लेखराजजी पारख, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. शिखा का शुभविवाह चि. अभिषेकजी वैद के संग 14 दिसम्बर 2015 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री मोहनलालजी, जवरीलालजी, केवलचन्दजी, नवरतनमलजी, अनिलजी झांबर (सोजत वाले), चेन्नई, मातुश्री स्व. श्रीमती नोजकँवरजी झांबर की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री सागरमलजी मेहता, रावटी, अपनी आयु के 91 वर्ष पूर्ण होने एवं श्री शांतिलालजी मेहता एवं श्रीमती ज्योतिजी मेहता की शादी के 25 वर्ष पूर्ण होने के तथा श्रेयांस एवं निशिता मेहता के शादी के दूसरे वर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रूपचन्दजी, हेमराजजी, हरीशजी जैन (मोदी), चौथ का बरवाड़ा, पूज्य पिताश्री स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन का 05 दिसमबर 2015 को देवलोक हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्री रामदयालजी नवकारजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, डॉ. प्रज्जवलजी सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसादजी (जरखोदे वाले) एवं सौ.कां. श्रेयाजी सुपौत्री श्री रामदयालजी सुपुत्री श्री नवकारजी जैन के 13 दिसम्बर 2015 को सम्पन्न विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री प्रकाशमलजी, सुनीलजी, हर्षजी बोथरा, चेन्नई, सुपौत्री खुशीजी बोथरा के स्केटिंग में गोल्ड मेडल मिलने पर एवं नववर्ष के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दौलतजी, दीपकजी चौरड़िया, चेन्नई, सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती सूरजजी धर्मपत्नी श्री हेमराजजी सुराणा, जयपुर, अपने दोहिते प्रतीकजी कर्णावट सुपुत्र श्रीमती सुशीलाजी सुरेशजी कर्णावट, अजमेर द्वारा सीए फाइनल परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेशजी, राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी जैन (अणदोरा वाले), सुमेरगंज मण्डी, पूज्य पिताजी श्री देवकरणजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री श्रीपालचन्दजी, स्वरूपचन्दजी, रतनचन्दजी सुराणा, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी (वीरमाता) श्रीमती किरणदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी सुराणा के स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती केसरकंवरजी धारीवाल, जोधपुर, स्व. श्री मूलराजजी धारीवाल की सातवीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री सुमेरनाथजी मोदी, जोधपुर, अपनी सुपुत्री श्रीमती सुधाजी-अशोकजी भंसाली के पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी सिंघवी, दिल्ली, सुश्री माया सुपुत्री मोहित-मेघना सिंघवी के जन्मोत्सव तथा मधु-राजेन्द्रजी सिंघवी के वैवाहिक दाम्पत्य जीवन के सुखद 40 वर्ष सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

200000/- मैसर्स गजेन्द्र निधि, मुम्बई, श्रीमती सरोजाबाई सुगनचन्दजी मूथा शिक्षा फण्ड के अन्तर्गत पुस्तक उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3 के पुनः मुद्रण हेतु।

110000/- श्री सुभाषचन्दजी, अशोकजी धोका, मैसूर, पुस्तक उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3 के पुनः मुद्रण हेतु अर्थसहयोग।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

3100/- श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्दजी सिंघवी, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती निर्मलाजी धर्मपत्नी श्री दिलीपजी लोढ़ा, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री लेखराजजी पारख, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री मुकेशजी सुपुत्र श्री भैरूलालजी जैन, सवाईमाधोपुर, साहित्य प्रकाशन हेतु।

5100/- श्री चंचलमलजी, राजेशजी, राहुलजी गांग, जोधपुर, अपनी धर्मसहायिका श्रीमती केसरजी गांग धर्मपत्नी श्री चंचलमलजी गांग के 24 जनवरी 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री श्रीपालचन्दजी, स्वरूपचन्दजी, रतनचन्दजी सुराणा, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी (वीरमाता) श्रीमती किरणदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी सुराणा के स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1500/- श्री लेखराजजी पारख, जोधपुर, अपनी सुपुत्री शिखा जैन का शुभविवाह चि. अभिषेक जैन, जयपुर के संग 14 दिसम्बर, 2015 को होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन 'जरखोदा वाले' सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र प्रज्जवल जैन का शुभ विवाह श्रेया जैन सुपुत्री नमोकार जी जैन,सवाईमाधोपुर के साथ 13 दिसम्बर 2015 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री चंचलमलजी गांग, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सुश्री रूपल सुपुत्री श्रीमती योगिता-राजेशजी गांग के सी.ए. बनने तथा अपनी दौहित्री सुश्री वैशाली कुम्भट सुपुत्री श्रीमती मधु-भूपेन्द्रजी कुम्भट के सी.पी.टी. उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/- श्री प्रकाशचन्दजी, अजयकुमारजी, विजयकुमारजी जैन चौधरी, सवाईमाधोपुर, स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन चौधरी की पुण्य स्मृति में।

12000/- श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, नरेन्द्रजी जैन, हिण्डौनसिटी, श्रीमती सीमा जैन धर्मपत्नी श्री अजयजी जैन के मासक्षपण तप एवं श्री नरेन्द्रजी जैन की पुत्री के जन्म के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री पी.सी. जैन एवं श्री सचित जी जैन, जोधपुर, सुपौत्री सुश्री कियारा (सुपुत्री श्रीमती शगुन-सचित जैन) के प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री हरकचन्दजी, विरेन्द्रजी, राकेशजी सदावत मेहता, जोधपुर, श्री हरकचन्दजी एवं सुशीलाजी सदावत मेहता के विवाह की 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

12000/- श्रीमती चन्द्राजी-श्री प्रभुचन्दजी अबानी सुपुत्र स्व. श्री चंचलचन्दजी जी अंबानी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

12000/- श्री कैलाशचन्दजी, गजेन्द्रकुमारजी, जितेन्द्रजी, सानिध्यजी बुरड़, बिजयनगर-अजमेर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

(आगामी पर्व तिथियाँ पृष्ठ संख्या 90 पर देखें)

रत्नसंघीय परिवारों का सूचना-संग्रहण कार्यक्रम

रत्नसंघीय परिवारों के सम्बन्ध में सूचना संग्रह की जा रही है, जिसके उद्देश्य हैं- 1.संघ सदस्यों की धार्मिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक जानकारी एकत्रित करना, 2. संघ के सभी कार्यक्रमों की सूचना अपने सदस्यों को पहुँचाने के लिए सूचना तंत्र विकसित करना, 3. संघ सदस्यों से प्राप्त जानकारी एकत्रित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग करना, 4. प्राप्त आंकड़ों के आधार पर संघ के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय करना, 5. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं से सम्बन्धित सभी जानकारी एक ही जगह पर संकलित करना, 6. संघ के सभी सदस्यों में सक्रियता का संचरण करना। इस हेतु पंजीकरण 4 जनवरी 2016 से प्रारम्भ। आप सूचना अवश्य भेजें। **WWW.RATNASANGH.COM**

1. **नाम**-.............2. **मध्य नाम**-............. 3. **आखिरी नाम**-.............
4. **जन्मतिथि**-........5. **आयु**-.................. 6. **लिंग**-.......................
7. **ब्लड ग्रुप**-..
8. **वैवाहिक स्थिति**-...........................**विवाह वर्षगाँठ**-.....................
9. **पारिवारिक स्थिति (सदस्यों का विवरण)**- रिश्ते, नाम,जन्मतिथि, शिक्षा, व्यवसाय
10. **ससुराल पक्ष के सम्बन्धों की जानकारी**- रिश्ते, नाम, व्यवसाय, शहर, राज्य
11. **शैक्षणिक योग्यता**- शिक्षा, शाखा, डिग्री, प्रतिशत, संस्थान, उत्तीर्ण वर्ष, विशेष कथन
12. **व्यावसायिक विवरण**- स्थिति, प्रकार, पद का नाम, संस्थान का नाम, शहर का नाम, विशेष कथन
13. **वर्तमान पता**- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं, बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
14. **मूल निवास**- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं, बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
15. **कार्यालय पता**- फ्लेट/डोर/प्लॉट नं, बिल्डिंग, रोड़ नं., स्थान चिह्न, देश, राज्य, शहर।
16. **सम्पर्क सूत्र**- घर, कार्यालय, मोबाइल, ईमेल
17. **वीर परिवार सदस्य**- संत-सती का नाम, सांसारिक सम्बन्ध
18. **धार्मिक अध्ययन**- सूत्र, थोकड़े, आगम
19. **शिक्षण बोर्ड परीक्षा**- रोल नम्बर
20. **स्वाध्याय संघ**- पहली बार स्वाध्यायी..................
    स्वाध्यायी रूप में सेवा (प्रतिक्रमण/प्रवचन कला/गायन कला/अन्य)...............
21. **सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**- जिनवाणी सदस्यता नम्बर, साहित्य सदस्यता नम्बर
22. **तपस्या**- मासक्षपण, एकासन वर्षीतप, उपवास वर्षीतप, सिद्धितप।
23. **व्रत**- सामायिक, 12 व्रत, पौषध, शीलव्रत, चार खंद
24. **नियम**- चौविहार, रात्रिभोजन-त्याग, जमीकंद त्याग, सामूहिक रात्रिभोजन-त्याग।

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धीरिन्द्र कुम्भट

93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

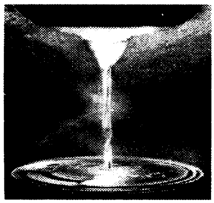
Electric Arc Furnace

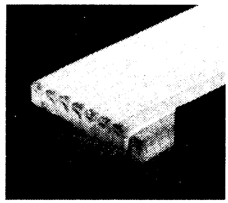
Billets

Rolling Mill

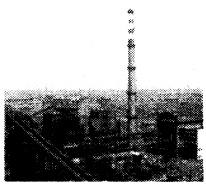
Captive Power Plant

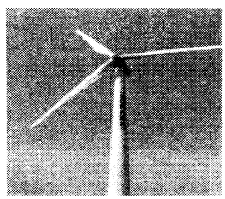
Windmill

With best wishes from

ISO 9001 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.
For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
	श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
	श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का।।'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को
आत्म-कल्याण के लिए
स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के
साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य
का विचार करके ही
अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा
परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व
तामसी आहार होता है।
समाधि का अभिलाषी साधक
ऐसी तामसी आहार से
दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या
न करें, अगर त्याग नहीं है तो
उसे दोष लग ही रहा है। अतः
रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान
करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चेन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 फरवरी, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 02 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 फरवरी, 2016 ★ माघ, 2072

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 | Fax: + 91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन